यू॰ ओलेशा

तीन मोटे



Юрий Олеша
ТРИ ТОЛСТЯКА
На языке хинди

अनुवादक: मदन लाल "मधु"

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये:

प्रगति प्रकाशन, २१, ज़ूबोव्स्की बुलवार, मास्को, सोवियत संघ।

अनुक्रम

पहला भाग

नट तिबुल

दूसरा भाग

उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया

तीसरा भाग

सूओक

चौथा भाग

हथियारसाज प्रोस्पेरो

पहला भाग



नट त्रिशूल

पहला अध्याय

डाक्टर गास्पर आर्नेरी दिन भर परेशान रहे

जादूगरों के जमाने लद चुके हैं। सच तो यह है कि जादूगर कभी थे ही नही। उनकी तो केवल कल्पना की गयी थी, बहुत ही छोटे-छोटे बालकों को सुनाने के लिये उनके बारे में मनगढ़न्त कहानियां गढ़ी गयी थी। दर असल कुछ ऐसे मदारी जरूर थे जो ऐसी होशियारी से सभी तरह के तमाशाई लोगों की आंखों में धूल झोंक पाते थे कि उन्हें मन्त्र फूकने और टोने करनेवाले तथा जादूगर समझा जाता था।

कभी एक डाक्टर होते थे। उनका नाम था गास्पर आर्नेरी। भोले-भाले लोग, मेले-ठेले में घुमक्कड़ी करनेवाले और अधकचरे विद्यार्थी उन्हे भी जादूगर मान सकते थे। वास्तव मे ये डाक्टर बड़े-बड़े अद्भुत काम करते थे जो सचमुच अजूबे ही लगते थे। भोले-भाले लोगों का उल्लू बनानेवाले मदारियों और जादूगरों जैसी उनमें कोई बात नही थी।

डाक्टर गास्पर आर्नेरी वैज्ञानिक थे। उन्होंने कोई सौ विद्यायें पढ़ी थीं। देश भर में उनसे अधिक समझदार व्यक्ति, उनकी टक्कर का विद्वान नही था।

डाक्टर की विद्वत्ता की सभी में धाक थी—क्या चक्कीवालों, क्या फ़ौजियों, क्या महिलाओं और क्या मन्त्रियों में। स्कूल के बालक उनके बारे में जो गाना गाते थे, उसकी स्थायी थी—

उड़कर तारों तक जो जाये।
दुम से पकड़ लोमड़ी लाये।।
जो पत्थर से भाप बनाये।
बड़े करिश्मे कर दिखलाये।।
जिसके गुण का वार न पार।
अद्‌भुत है डाक्टर गास्पर।।



जून महीने के एक सुहाने दिन डाक्टर गास्पर ने तरह-तरह की घासें और गुबरैले जमा करने के लिये लम्बी सैर को जाने का इरादा बनाया।

डाक्टर गास्पर जवान न थे और आधी पानी से घबराते थे। घर से रवाना होने के पहले उन्होने गर्दन पर मोटा गुलूबन्द लपेट लिया, धूल-मिट्टी से आखो का बचाव कहने के लिये चश्मा चढा लिया और हाथ मे छडी ले ली ताकि कही ठोकर न लग जाये। यो कहना चाहिये कि उन्होने बडी सावधानी से सैर-सपाटे के लिये जाने की तैयारी की।

दिन बहुत ही प्यारा था। सूरज था कि चमकता ही जा रहा था। घास ऐसी हरी हरी थी कि मुह मे पानी भर भर आता था, हवा मे फूलो का पराग उड रहा था, पक्षी चहचहा रहे थे, बॉल-नाच के फूले-फूले फ्रॉक की तरह हल्की-हल्की हवा लहरा रही थी।

"दिन तो खूब बढिया है," डाक्टर ने अपने आप से कहा, "फिर भी बरसाती तो साथ ले ही लेनी चाहिये। गर्मी के मौसम का भरोसा ही क्या! जाने कब पानी बरसने लगे।"

ज़रूरी आदेश देकर डाक्टर ने चश्मे को साफ किया, सूटकेस से मिलता-जुलता हरे रग का थैला उठाया और चल दिये।

सैर-सपाटे के लिये सबसे अच्छी जगह नगर के बाहर थी, तीन मोटा के महल के नज़दीक। डाक्टर अक्सर यही जाते थे। तीन मोटो का महल बहुत बडे पार्क के बीचोबीच था। पार्क के गिर्द गहरी-गहरी खाइया थी। खाइयो के ऊपर लोहे के काले पुल बने हुए थे। इन पुलों की रक्षा करते थे महल के सतरी, पीले पखो वाली मोमजामे की काली टोपिया पहने हुए। पार्क के गिर्द क्षितिज को छूती हुई चरागाहे थी, जिनमे तरह-तरह के फूल खिले थे, वृक्षो के झुरमुट थे और ताल-तलैया थी। खूब ही जगह थी यह सैर-सपाटे के लिये। यहा तरह-तरह की घासें उगी हुई थी, बहुत ही खूबसूरत गुबरैलो का गुजार सुनाई देता था और बहुत ही प्यारे-प्यारे पक्षी चहचहाते थे।

"जगह बहुत दूर है, पैदल चलने से थक जाऊगा," डाक्टर ने सोचा। "नगर के छोर तक जाकर घोडा-गाडी ले लूगा और उसमे बैठकर महल के पार्क तक पहुच जाऊगा।"

आज नगर के छोर पर, हमेशा की तुलना मे कही अधिक लोग दिखाई दिये।

"क्या आज इतवार है?" डाक्टर सोच में पड़ गये, "नहीं तो! आज तो मंगलवार है।"

डाक्टर नजदीक गये।

चौक में लोगों की भारी भीड़ थी। डाक्टर को वहां दिखाई दिये हरे कफ़ों वाली सलेटी ऊनी जाकटें पहने कुछ दस्तकार; जहाजी, जिनके चेहरों पर मौसम की छाप अंकित थी; रंगीन वास्कटें डटे धनी व्यापारी, उनकी बीवियां गुलाब के पौधों की शक्ल के स्कर्ट पहने और सुराहियां, ट्रे, आइसक्रीम के डिब्बे और अंगीठियां लिये हुए विक्रेता एवं गलियों-बाजारों में अभिनय करनेवाले दुबले-पतले अभिनेता जो हरी, पीली और अन्य रंग-बिरंगी पोशाकें पहने थे और जो चिथड़ों से सिली हुई रजाइयों जैसे लगते थे। वहां बहुत ही छोटे-छोटे बालक भी थे जो लाल रंग के ख़ुशमिज़ाज कुत्तों को पूछों से पकड़कर घसीट रहे थे।

सभी नगर के फाटकों की ओर जा रहे थे। लोहे के बने बड़े-बड़े और मकानों के समान ऊंचे फाटक बन्द थे।

"फाटक क्यों बन्द है?" डाक्टर को हैरानी हुई।

लोग शोर मचा रहे थे, ऊंचे ऊंचे बातें कर रहे थे, चीख़-चिल्ला और भला-बुरा कह रहे थे। मगर किसलिये? यह समझ पाना सम्भव नहीं था। डाक्टर एक जवान औरत के पास गये जो अपने हाथों में मोटी-सी भूरी बिल्ली उठाये थी। उन्होंने पूछा –

"ज़रा यह बताने की कृपा कीजिये कि यह सब क्या क़िस्सा है? यहां इतनी भीड़ क्यों जमा है, लोग इतने उत्तेजित क्यों हैं और नगर के फाटक क्यों बन्द कर दिये गये हैं?"

"सैनिक नगर के लोगों को बाहर नहीं जाने देते..."

"सो क्यों?"

"ताकि वे उनकी मदद न कर सकें जो पहले ही निकलकर तीन मोटों के महल की ओर जा चुके हैं।"

"श्रीमती जी क्षमा कीजिये, मगर बात मेरी समझ में आई नहीं..."

"हे भगवान! क्या आपको यह भी नहीं मालूम कि आज हथियारसाज़ प्रोस्पेरो और नट तिबुल लोगों को लेकर गये हैं कि हल्ला बोलकर तीन मोटों के महल पर क़ब्ज़ा कर लिया जाये?"

"हथियारसाज़ प्रोस्पेरो?"

"हां, हां... चारदीवारी तो बहुत ऊंची है और फाटक के पीछे बैठे हैं निशानेबाज़ सैनिक। अब कोई भी तो नगर से बाहर नहीं जा पाता और जो लोग हथियारसाज़ के साथ गये हैं, उन्हें महल के सैनिक मार डालेंगे।"

और सचमुच ही, बहुत दूर से गोलियां दागने की कुछ हल्की-सी आवाज़ें सुनाई दीं।

औरत के हाथ से मोटी बिल्ली छूट गई। वह गुधे हुए आटे की तरह नीचे जा गिरी। भीड जोर से चीख उठी।

' इसका मतलब यह है कि एक बहुत बडी घटना घट गयी और मुझे उसका पता तक नही लगा," डाक्टर ने सोचा। "हा, मैं तो महीने भर से अपने कमरे मे ही बन्द रहा हू। बाहर निकला ही नही, वही काम करता रहा। मुझे तो दीन-दुनिया की खबर ही नही रही "

इसी समय, कुछ और दूरी पर, कई बार तोप की धाय-धाय सुनाई दी। तोप का धडाका गेद की तरह हवा मे उछला और वातावरण मे झूल-सा गया। न केवल डाक्टर ही काप उठे और कुछ कदम पीछे हट गये, बल्कि भीड मे जमा सभी लोगो के दिल भी दहल उठे और वे इधर-उधर बिखर गये। बच्चे रोने लगे, कबूतर ज़ोर-ज़ोर से पख फडफडाते हुए उडने लगे और कुत्ते बैठकर हूकने लगे।

तोप की धाय-धाय जोर पकडती गयी। ऐसा शोर मच गया कि बयान से बाहर। लोगो की भीड फाटक के और नज़दीक जाकर चिल्लाने लगी—

"प्रोस्पेरो! प्रोस्पेरो!"

"तीन मोटे मुर्दाबाद!"

डाक्टर गास्पर के तो होश हवा हो गये। लोगो ने उन्हे पहचान लिया, क्योकि बहुत से उन्हे जानते थे। कुछ लोग तो उनकी ओर भागे मानो डाक्टर उनकी रक्षा कर सकते हो। मगर डाक्टर तो खुद जैसे-तैसे अपने आसुओ पर काबू पा रहे थे।

"जाने वहा क्या हो रहा है? कैसे मालूम किया जाये कि वहा फाटका के पीछे क्या हो रहा है? मुमकिन है कि लोग जीत जाये? मगर यह भी हो सकता है कि उन सबको मौत के घाट उतार दिया गया हो।"

इसी समय कोई दसेक व्यक्ति उस चौक की ओर दौडे, जहा तग-सी तीन गलिया मिलती थी। वहा नुक्कड पर पुराने और ऊचे बुर्जवाला एक मकान था। औरो के साथ-साथ डाक्टर ने भी बुर्ज पर चढने का इरादा बना लिया। नीचे की मजिल पर गुसलखाने से मिलती-जुलती लाड्री थी। वहा तहखाने के समान अधेरा था। ऊपर जाने के लिये चक्कर-दार जीना था। छोटी छोटी खिडकियो से रोशनी आ रही थी, मगर बहुत ही कम। सभी लोग बहुत ही धीरे-धीरे और मुश्किल से ऊपर चढ रहे थे। ऐसा इसलिये भी था कि जीना खस्ताहाल था और रेलिग भी टूटी-फूटी थी। इस बात की कल्पना तो की ही जा सकती है कि डाक्टर गास्पर के लिये सबसे ऊपरवाली मजिल पर पहुचना कितना कठिन था। खैर तो वे अभी बीसवीं पैडी पर ही पहुचे थे कि अधेरे मे चीख उठे—

"हाय, मेरा दिल निकला जाता है और मेरे जूते की एक एडी टूट गई।"

डाक्टर अपनी बरसाती तो तोप के दसवीं बार गरजने के बाद चौक में ही खो बैठे थे।

बुर्ज के ऊपर पत्थरों की मुंडेर से घिरी हुई चौड़ी-सी छत थी। यहां से कम से कम पचास किलोमीटर तक का दृश्य दिखाई दे रहा था। दृश्य बेशक रमणीक था, मगर उसपर मुग्ध होने, उसे सराहने की फ़ुर्सत ही कहां थी। सभी की नज़र उधर लगी हुई थी जहां लड़ाई हो रही थी।

"मेरे पास दूरबीन है। मैं हमेशा आठ शीशों वाली दूरबीन अपने पास रखता हूं। यह लो!" डाक्टर ने कहा और पेटी खोलकर दूरबीन लोगों की ओर बढ़ाई।

सभी लोग एक-एक करके दूरबीन में से देखने लगे।

डाक्टर गास्पर को हरे-भरे खुले मैदान में बहुत-से लोग दिखाई दिये। वे नगर की ओर भागे आ रहे थे, सिर पर पैर रखकर। दूर से वे रंग-बिरंगे झण्डों जैसे प्रतीत हो रहे थे। घुड़सवार सैनिक उनका पीछा कर रहे थे।

डाक्टर गास्पर को यह सारा दृश्य मायाद्वीप के एक चित्र जैसा प्रतीत हुआ। सूरज ख़ूब चमक रहा था, हरियाली चमचमा रही थी। गोले रूई के टुकड़ों की तरह फटते और घड़ी भर के लिये उनकी चमक ऐसे कौंधती मानो कोई दर्पण द्वारा सूर्य की किरण को प्रतिबिम्बित कर रहा हो। घोड़े पिछली टांगों पर खड़े होते थे और लट्टू की तरह घूमते थे। तीन मोटों का पार्क और महल सफ़ेद और पारदर्शी धुएं की जाली में लिपटे हुए थे।

"वे भाग रहे हैं!"

"वे भागे आ रहे हैं... लोग हार गये!"

भागे आ रहे लोग नगर के क़रीब पहुंचते जा रहे थे। बहुत-से लोग रास्ते में ही गिर पड़े थे। ऐसा लगता था मानो घास पर रंग-बिरंगे चिथड़े बिखरा दिये गये हों।

एक गोला दनदनाता हुआ चौक के ऊपर से गुज़रा।

कोई बुरी तरह डर गया और उसने दूरबीन नीचे गिरा दी।

गोला फटा और छत पर खड़े लोग बुर्ज से नीचे भाग चले।

इनमें एक तालासाज भी था। उसका चमड़े का पेशबन्द किसी हुक में अटक गया। उसने मुड़कर देखा, उसे कोई भयानक दृश्य दिखाई दिया और वह गला फाड़कर चिल्ला उठा—

"भागो! उन्होंने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को पकड़ लिया! वे अब नगर में आये कि आये!"

चौक में खलबली मच गयी।

लोग झटपट फाटकों से दूर हट गये और चौक से गलियों की ओर भाग चले। गोलियों की ठा-ठा से सभी के कानों के पर्दे फटने लगे।

डाक्टर गास्पर और दो अन्य व्यक्ति बुर्ज की तीसरी मंजिल पर ही रुक गये। वे मोटी दीवार में बनी हुई छोटी-सी खिड़की में से झांकने लगे।

खिड़की इतनी छोटी थी कि केवल एक व्यक्ति ही ढंग से बाहर देख सकता था। बाकियों को तो जरा-सी झलक ही मिल सकती थी।

डाक्टर भी झलक ही पा रहे थे। मगर वह झलक भी काफी भयानक थी।

लोहे के बड़े-बड़े फाटक पूरी तरह खोल दिये गये थे। लगभग तीन सौ व्यक्ति इन फाटकों से एकदम बाहर आये। ये हरे कफों वाली सलेटी ऊनी जाकटें पहने हुए दस्तकार थे। खून से लथ-पथ ये लोग जमीन पर गिरते जा रहे थे।

सैनिकों के घोड़े इनके सिरों पर चढ़े आ रहे थे। सैनिक तलवारों से वार कर रहे थे, गोलियां दाग रहे थे। उनकी मोमजामे की चमकती हुई काली टोपियों में लगे पीले पंख लहरा रहे थे। घोड़े अपने लाल-लाल मुंह खोलते थे, जिनमें से झाग निकल रहा था और वे अपने दीदे इधर-उधर घुमा रहे थे।

"वह देखिये! उधर देखिये! वह रहा प्रोस्पेरो!" डाक्टर चिल्लाये।

हथियारसाज प्रोस्पेरो को रस्से से बांधकर घसीटा जा रहा था। वह कुछ कदम चलता, गिर पड़ता और फिर उठता। उसके लाल बाल उलझे-उलझाये



हुए थे, चेहरा ख़ून से लथ-पथ था और उसके गले में मोटे रस्से का फंदा पड़ा हुआ था।

"प्रोस्पेरो। बन्दी बना लिया गया!" डाक्टर चिल्लाये।

इसी समय एक गोला लांड्री पर आकर गिरा। बुर्ज झुका, झूल-सा गया, घड़ी भर के लिये टेढ़े रुख़ सम्भला रहा और फिर धड़ाम से नीचे जा गिरा।

डाक्टर भी कलाबाज़ियां खाते हुए नीचे जा पहुंचे और अपने बूट की दूसरी एड़ी, छड़ी, थैले और चश्मे से हाथ धो बैठे।

दूसरा अध्याय

जल्लादों के दस तख़्ते

डाक्टर नीचे तो जा गिरे कलाबाज़ियां खाते हुए, मगर कुशल ही रही। उनका सिर भी नहीं फटा और टांगें भी सही-सलामत रहीं। मगर इससे क्या! बेशक हड्डी-पसली सलामत रही, फिर भी गिरते हुए बुर्ज के साथ नीचे जा गिरने में तो कोई मजा नहीं हो सकता, ख़ास तौर पर डाक्टर जैसे व्यक्ति के लिये, जो जवानी की मंज़िल लांघकर बुढ़ापे में क़दम रख चुका हो। डर से ही डाक्टर बेहोश हो गये।

जब उन्हें होश आया तो शाम हो चुकी थी। डाक्टर ने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली—

"ओह, क्या मुसीबत है! ज़ाहिर है कि ऐनक तो चूरचूर हो गयी। ऐनक के बिना मुझे सम्भवतः ऐसा ही नज़र आता है जैसा कि अच्छी नज़रवाले व्यक्ति को उस समय जब वह ऐनक चढ़ा लेता है। यह तो बहुत बुरी बात है।"

इसके बाद वह टूटी हुई एड़ियों के बारे में बड़बड़ाते रहे—

"मेरा तो वैसे ही क़द छोटा है और अब एक इंच और छोटा हो जाऊंगा। या शायद दो इंच, क्योंकि दोनों एड़ियां टूट गयी हैं। नहीं, नहीं, केवल एक इंच ही..."

वह मलबे के ढेर पर पड़ा हुआ था। लगभग पूरे का पूरा बुर्ज गिर गया था। दीवार का लम्बा-लम्बा और पतला-पतला टुकड़ा हड्डी की तरह बाहर को निकला हुआ था। कहीं बहुत दूर से संगीत की स्वरलहरी सुनाई दे रही थी। वाल्ज़ की दिलकश धुन हवा के पंखों पर उड़ती हुई आती, खो जाती और फिर से सुनाई न देती। डाक्टर ने ऊपर की ओर नज़र डाली। ऊपर विभिन्न दशाओं में काली टूटी हुई कड़ियां लटकी हुई थीं। शाम के हरे-से आकाश में तारे झिलमिला रहे थे।

"जाने यह वाल्ज़ की धुन कहां से सुनाई दे रही है!" डाक्टर आश्चर्यचकित हुए।

बरसाती के बिना ठड महसूस होने लगी। चौक मे एकदम सन्नाटा था। कराहते हुए डाक्टर पत्थरो के ढेर पर से उठे और उन्होने किसी के बडे-से बूट से ठोकर खाई। तालासाज़ एक कडी के आर-पार पडा हुआ आकाश को ताक रहा था। डाक्टर ने उसे हिलाया-डुलाया। मगर तालासाज नही उठा। वह मर चुका था।

डाक्टर ने मृत व्यक्ति के प्रति सम्मान प्रकट करने को टोप उतारने के लिये हाथ बढाया—

"ओह, टोप भी गया! तो अब मै क्या करू?"

डाक्टर चौक से चल दिये। सडक पर लोग पडे थे। डाक्टर ने झुककर हरेक को निकट से देखा। उनकी खुली हुई फैली-फैली आखो मे सितारे प्रतिबिम्बित हो रहे थे। उन्होंने उनके माथे छुए जो बहुत ठण्डे और रक्त से भीगे हुए थे जो रात के समय काला-काला दिखाई दे रहा था।

"तो यह हुआ! यह हुआ!" डाक्टर फुसफुसाये। "इसका मतलब है कि लोग हार गये.. तो अब क्या होगा?"

आधे घण्टे बाद वे वहा पहुचे जहा लोग दिखाई दिये। वे बहुत थक चुके थे, बेहद भूखे-प्यासे थे। शहर के इस हिस्से मे हर दिन का सा दृश्य था।

डाक्टर चौराहे पर खडे थे, काफी देर तक चलते रहने के बाद थोडा दम लेते हुए सोच रहे थे—

"कैसी अजीब बात है! यहा रग-बिरगी बत्तिया जल रही हैं, घोडा-गाडिया आ-जा रही हैं, शीशे के दरवाजे खुल और बन्द हो रहे हैं। अर्ध-गोलाकार खिडकियो मे से सुनहरी रोशनी छन रही है। वहा स्तम्भो के करीब जोडे नाच रहे हैं। लोग नाच-रग मे डूबे हुए हैं। काले-काले पानी के ऊपर रग-बिरगी चीनी हाडिया घूम रही हैं। लोग उसी तरह से अपनी रास-रग की दुनिया मे मस्त हैं, जैसे एक दिन पहले थे। क्या वे यह नही जानते कि आज सुबह क्या काण्ड हुआ है? क्या उन्होने गोलिया की ठाय-ठाय और लोगो की आह-कराहे नही सुनी? क्या उन्हे यह मालूम नही कि जन-नेता, हथियारसाज प्रोस्पेरो को गिरफ्तार कर लिया गया है? हो सकता है कि ऐसा कुछ भी न हुआ हो? शायद मैंने कोई भयानक सपना देखा हो?"

सडक के नुक्कड पर एक लैम्प जल रहा था और पटरी के साथ घोडा-गाडियां कतार बाधे खडी थी। मालिनें गुलाब बेच रही थी और कोचवान उनसे बातें कर रहे थे।

"उसके गले मे फदा डालकर नगर भर मे से घसीटा गया। ओह, बेचारा!"

"अब उसे लोहे के पिजरे मे बन्द कर दिया गया है। पिजरा तीन मोटा के महल



ये ले तीन गुलाब। रोने की कोई बात नहीं। ये लोग विद्रोही हैं। अगर उन्हें लोहे के पिंजरों में बन्द नहीं किया गया तो ये हमारे घर-बार, कपड़ों-लत्तों और गुलाबों पर कब्ज़ा कर लेंगे और हमारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।"

इसी वक्त एक छोकरा दौड़ता हुआ पास से गुज़रा। पहले तो उसने महिला के सितारा जड़े लबादे को खींचा और फिर लड़की की चोटी खींची।

"अरी ओ महारानी!" लड़का चिल्लाया। "अगर हथियारसाज प्रोस्पेरो पिंजरे में बन्द है तो क्या हुआ, नट तिबुल तो आज़ाद है!"

ओह, शैतान!"

महिला ने पैर पटके और उसका पर्स नीचे गिर गया। मालिनें ठठाकर हंस पड़ीं। मोटे कोचवान ने इस शोर-शराबे से फायदा उठाया और महिला से घोड़ा गाड़ी में बैठकर चल देने का प्रस्ताव किया।

महिला और लड़की घोड़ा-गाड़ी में बैठकर चली गयीं।

'अरे, ज़रा सुन तो कूद-फांद करनेवाले!" एक मालिन ने लड़के को पुकारा। इधर तो आ! तुझे जो कुछ मालूम है वह ज़रा हमें भी तो सुना "

दो कोचवान अपनी ऊंची सीटों से नीचे उतरे और बड़े-बड़े पांच कालरों वाले अपने चोगों से उलझते हुए मालिनों के पास आये।

"यह हुआ न चाबुक! बढ़िया चाबुक! उस लम्बे चाबुक की ओर देखते हुए लड़के ने सोचा जिसे कोचवान सटकारता था। लड़के का मन ऐसा चाबुक पाने के लिये ललक उठा मगर अनेक कारणवश उसके लिए ऐसा चाबुक पाना सम्भव नहीं था।

हां, तो क्या कहा तू ने?" कोचवान ने भारी भरकम आवाज़ में पूछा। 'नट तिबुल आज़ाद है?



"ऐसा सुनने में आया है। मैं बन्दरगाह पर गया था, वहीं ऐसा सुना..."

"क्या सैनिकों ने उसकी हत्या नहीं कर डाली?" दूसरे कोचवान की आवाज भी भारी-भरकम थी।

"नहीं, बड़े मियां... अरी सुन्दरी, मुझे एक गुलाब दे दे!"

"ठहर रे, उल्लू! पहले तू सारा किस्सा तो सुना..."

"हां। तो किस्सा यह है कि शुरू में सभी ने यह समझा कि नट तिबुल मारा गया। बाद में जब मुर्दों में उसे तलाश किया गया तो वह नहीं मिला।"

"क्या यह नहीं हो सकता कि उसे नहर में फेंक दिया गया हो?" कोचवान ने पूछा।

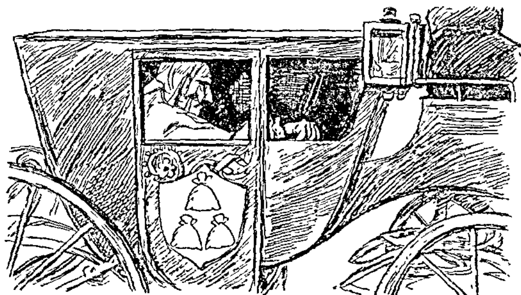
एक भिखमंगा भी बातचीत में शामिल हो गया।

"किसे फेंक दिया गया हो नहर में?" उसने पूछा। "नट तिबुल कोई बिल्ली का बच्चा थोड़े ही है। उसे डुबो देना ख़ाला जी का घर नहीं है। नट तिबुल जिन्दा है। बचकर भाग निकला!"

"तुम झूठ बक रहे हो, घनचक्कर!" कोचवान ने कहा।

"नट तिबुल ज़िन्दा है!" मालिनें ख़ुशी से चिल्ला उठीं।

छोकरे ने एक गुलाब झपटा और सिर पर पैर रखकर भाग चला। गीले फूल से पानी के छींटे डाक्टर पर जा गिरे। डाक्टर ने चेहरे से आंसुओं की तरह खारे छींटे पोंछे और भिखमंगे की बातें सुनने के लिये क़रीब जाकर खड़े हो गये।



मगर इसी समय कुछ परिस्थितियों ने वातचीत मे खलल डाल दिया। सड़क पर एक विचित्र-सा जुलूस प्रकट हुआ। आगे-आगे दो घुड़सवार थे, मशालें लिये हुए। मशालें दहकती हुई दाढियों की तरह लहरा रही थी। उनके पीछे-पीछे राज्यचिह्न वाली काली घोडा-गाडी धीरे-धीरे आ रही थी।

घोडा-गाडी के पीछे-पीछे चले आ रहे थे वढई। कोई एक सौ।

वढई अपनी आस्तीने ऊपर चढाये हुए, काम मे जुट जाने के लिये विल्कुल तैयार थे। वे पेशवन्द वाधे थे, आरे और रन्दे उठाये हुए तथा वगल मे औज़ारों के वक्से दवाये हुए थे। जुलूस के दोनो ओर सैनिक थे। उनके घोडे तेज़ी से दौड़ने को उतावले थे और वे उनकी लगामे खीचकर उन्हे कावू मे रख रहे थे।

"यह कैसा जुलूस है? यह क्या मामला है?" राहगीरो ने उत्तेजित होते हुए एक दूसरे से पूछा।

राज्यचिह्न वाली घोडा-गाडी मे तीन मोटों की परिषद् का एक कर्मचारी वैठा था। मालिनें डर गयी। वे गालो पर हथेलिया रखे हुए उसके सिर को ताक रही थी। उसका सिर शीशे के दरवाज़े मे से नजर आ रहा था। सडक जगमग कर रही थी। काले विगवाला सिर ऐसे हिल रहा था मानो वह निर्जीव हो। ऐसा प्रतीत होता था मानो घोडा-गाडी मे आदमी नही, कोई पक्षी वैठा हो।

"रास्ते से हट जाओ!" सैनिक चिल्लाये।

"वढई कहा जा रहे है?" नाटी-सी मालिन ने सैनिको के सरदार से पूछा।

सैनिको का सरदार उसके चेहरे के निकट मुह करके इतने जोर से चीखा कि मालिन के वाल मानो हवा के झोके से लहरा उठे—

"वढई जल्लादो के तख्ते वनाने जा रहे है। समझी? वढई ऐसे दस तख्ते वनायेंगे!"

"आ!"

मालिन के हाथ से रकावी छूट गयी। गुलाव के फूल विखर गये।

"वे जल्लादो के तख्ते वनाने जा रहे है!" डाक्टर गास्पर ने भयभीत होते हुए दोहराया।

"हा, तख्ते!" सैनिक ने घूमते और मूछो के वीच से, जो बडे-बडे जूतो जैसी लगती थी, दात दिखाते हुए कहा। "सभी विद्रोहियों के लिए तख्ते वनाये जायेंगे! सभी के सिर धड से अलग किये जायेंगे! उन सभी के जो तीन मोटो की सत्ता के विरुद्ध सिर उठायेंगे!"

डाक्टर का सिर चकराने लगा। उन्हे प्रतीत हुआ कि वे वेहोश हो जायेंगे।

"आज मुझे वहुत-सी परेशानियो का मुह देखना पडा है," उन्होने अपने आप से कहा। "इसके अलावा मेरे पेट मे चूहे कूद रहे है और मैं वुरी तरह थक-टूट भी गया हूं। जल्दी से घर जाना चाहिए।"

वास्तव में ही डाक्टर को अब आराम करने की बड़ी जरूरत थी। वे उस दिन घटी घटनाओं, देखी और सुनी चीज़ों से इतने अधिक उत्तेजित थे कि बुर्ज के साथ नीचे जा गिरने, टोप, बरसाती, छड़ी और एड़िया खो देने का भी उनके लिए कोई महत्त्व नहीं रह गया था। जाहिर है कि सबसे बुरी बात तो यह थी कि ऐनक से हाथ धो बैठे थे। सो वे एक बग्घी में बैठकर घर की ओर चल दिये।

तीसरा अध्याय

सितारे का चौक

डाक्टर अपने घर लौट रहे थे। बग्घी चौड़ी-चौड़ी पक्की सड़कों पर से जा रही थी। सड़कें दीवानख़ानों से भी ज्यादा जगमगा रही थीं। बहुत ऊंचाई पर लैम्पों की श्रृंखला फैली हुई थी। लैम्प शीशे के ऐसे गोलों जैसे थे जिनमें मानो सफेद उबला हुआ दूध भरा हो। लैम्पों के गिर्द ढेरों ढेर पतंगे उड़ रहे थे, हल्की-सी सरसराहट का गीत गुनगुनाते हुए जल रहे थे। बग्घी नदी के किनारेवाली सड़क पर जा रही थी, पथरीली दीवार के साथ-साथ। वहां कांसे के बबर पंजों में ढालें लिये लम्बी-लम्बी जबानें निकाले हुए थे। नीचे गाढ़ा-गाढ़ा पानी धीरे-धीरे बह रहा था, राल की तरह काला-काला और चमकदार। पानी में नगर उल्टा प्रतिबिम्बित हो रहा था, वह मानो तैरना चाहता था, मगर नहीं तैर पाता था और कोमल सुनहरे धब्बों में ही घुलकर रह जाता था। डाक्टर की बग्घी मेहराब की तरह खमदार पुलों के ऊपर से गुजरी। नीचे से अथवा दूसरे किनारे से वे उन बिल्लियों जैसे लग रहे थे जो झपटने से पहले अपनी लोहे की पीठों में ख़म डाल रही हों। यहां हर पुल के शुरू मे सन्तरी नजर आते थे। वे ढोलों पर बैठे हुए पाइपों से कश लगा रहे थे, ताश खेल रहे थे और तारों को ताकते हुए जम्हाइयां ले रहे थे। डाक्टर बग्घी में जा रहे थे, इधर-उधर देख रहे थे और आवाजों पर कान लगाए हुए थे।

गलियों, मकानों और शराबख़ानों की खुली खिड़कियों और मनोरंजन पार्कों से किसी गीत की बिखरी-बिखरायी पंक्तियां सुनाई दे रही थी—

क़ैद किया प्रोस्पेरो को अब
बन्दी उसे बनाया।
बैठा लोहे के पिंजरे में
अब वह काबू आया।।

नशे मे धुत्त एक बाका-छैला भी इन्हीं पक्तियों को दोहरा रहा था। इस बाके छैल की मौसी चल बसी थी। मौसी के पास ढेरो रुपया था और उससे भी ज्यादा झाइया थीं। नजदीकी रिश्तेदार उसका एक भी नहीं था। सो मौसी का सारा धन बाके को विरासत मे मिल गया। इसीलिए अब वह इस बात पर झुझला रहा था कि जनता ने धनियों की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का झडा ऊपर उठाया था।

चिडियाघर मे बढिया तमाशा हो रहा था। लकडी के मच पर तीन मोटे-मोटे और झबरीले बन्दर तीन मोटो के रूप मे प्रस्तुत थे। एक कुत्ता मेडोलीन पर धुन बजा रहा था।



सुर्ख पोशाक पहने, पीठ पर सुनहरा सूरज और पेट पर सुनहरा सितारा लगाये हुए एक मसखरा वाद्ययन्त्रो की सगत मे इस कविता का पाठ कर रहा था–

गेहू के बोरो से मोटे
तीनो लुढके जाये।
काम न कोई इन्हे और ना
केवल तोद फुलायें।।
इनकी अरे समझ पथराई।
घडी आखिरी आई।।

"घडी आखिरी आई!" सभी ओर से दाढियो वाले तोते चीख उठे। भयानक शोर मच गया। पिजरा मे बन्द तरह-तरह के जानवर भौंकने हूकने, किकियाने और सीटिया बजाने लगे।

बदर मच पर इधर-उधर कूद-फाद रहे थे। उनकी टागें कौन-सी हैं और हाथ कौन से, यह समझ पाना कठिन था। वे दर्शको के बीच कूद गये और इधर-उधर भागने लगे। दर्शक भी चीख-चिल्ला रहे थे। जो मोटे थे, वे तो खास तौर पर खूब शोर मचा रहे थे। वे गुस्से से लाल पीले होते और कापते हुए मसखरे पर टोपिया और दूरबीनें फेंक रहे थे। एक मोटी महिला ने मसखरे पर अपना छाता ताना, मगर पास बैठी हुई एक अन्य मोटी महिला की टोपी उसके साथ अटक कर सिर से उतर गयी।

"ऊई मा!"–दूसरी मोटी महिला जोर से चिल्लाई, क्योकि टोपी के साथ-साथ उसके बनावटी बाल भी उतर गये थे।



भागते हुए एक बन्दर ने इस महिला की चांद हथेली से थपथपा दी। वह तो वहीं बेहोश हो गयी।

"हा-हा-हा!"

"हा-हा-हा!" अन्य दर्शक जो दुबले-पतले थे और कुछ घटिया कपड़े पहने थे ज़ोरों के ठहाके लगा रहे थे। "शाबाश! शाबाश! इनकी ऐसी की तैसी! तीन मोटे मुर्दाबाद! प्रोस्पेरो ज़िन्दाबाद! तिबुल ज़िन्दाबाद! जनता ज़िन्दाबाद!"

इसी समय किसी ने बहुत ज़ोर से चीखकर कहा—

"आग लग गई! शहर जला जा रहा है..."

सभी लोग बाहर भाग चले, धक्कम-पेल करते, बेंचों को उलटते-पलटते। चिड़ियाघर के चौकीदार इधर-उधर भागते हुए बन्दरों को पकड़ने लगे।

कोचवान ने चाबुक से सामने की ओर इशारा करते हुए डाक्टर से कहा—

"सैनिक मज़दूरों के मुहल्लों को आग लगा रहे हैं। वे नट तिबुल को पकड़ना चाहते हैं..."

नगर के ऊपर, काले-काले मकानों के ढेर के ऊपर आग की लाल-लाल लपटें दिखाई दे रही थीं।

जब यह बग्घी, जिसमे डाक्टर घर जा रहे थे, नगर के मुख्य चौक—सितारे के चौक—मे पहुची, तो उसके लिए आगे जाना असम्भव हो गया। वहा ढेरो घोडा-गाडिया और कोचे थी, घुडसवारो और पैदल चलनेवालो की भारी भीड जमा थी।

यहा क्या किस्सा है?" डाक्टर ने पूछा।

मगर किसी ने भी इस सवाल का जवाब नही दिया—सभी लोग चौक मे घट रही घटना को देखने मे इतने अधिक खोये हुए थे। कोचवान भी अपनी सीट पर खडा होकर उधर ही देखने लगा।

इस चौक का नाम सितारे का चौक क्यो पडा, इसकी भी कहानी है। इस चौक के सभी ओर बहुत बडे-बडे, समान ऊचाई और बनावट वाले मकान थे जो ऊपर से शीशे के गुम्बज से ढके हुए थे। इस तरह यह चौक सरकस के एक विराटकाय मडप जैसा प्रतीत होता था। गुम्बज के बीच मे बहुत ही अधिक ऊचाई पर दुनिया का सबसे बडा लैम्प जलता रहता था। यह आश्चर्यजनक बडे आकार का शीशे का गोला था। इसके चारो ओर लोहे का चक्र था। वह बहुत ही मजबूत तारो के सहारे लटका हुआ था और शनिग्रह जैसा प्रतीत होता था। पृथ्वी पर इसके समान दूसरी रोशनी नही थी। इसीलिए लोगो ने इस लैम्प का सितारे" की सज्ञा दे दी थी। इस तरह इस सारे चौक का यही नाम पडा गया।

चौक, मकानो और आसपास की गलियो को और रोशनी की जरूरत नही पडती थी। यह सितारा पत्थर की ऊची दीवार की तरह खडे मकानो की सभी गलियो, सभी कोनो और सभी कोठरियो मे रोशनी पहुचाता था। यहा लोगो का लैम्पो और मोमबत्तियो के बिना काम चल जाता था।

कोचवान घोडा-गाडियो, कोचो और कोचवानो के ऊचे टोपो, जो दवाखाना की शीशियो के सिरो जैसे थे, के ऊपर से नजर दौडा रहा था।

"आपको क्या दिखाई दे रहा है? वहा क्या हो रहा है?" कोचवान के पीछे से झाकते और उत्तेजित होते हुए डाक्टर ने पूछा। नाटे कद के डाक्टर को कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। उनकी नजर भी कमजोर थी।

कोचवान ने जो कुछ देखा था, सब कह सुनाया। यह कुछ देखा था उसने।

चौक मे बहुत हलचल थी। विराट गोलाकार विस्तार मे लोग इधर-उधर दौड-धूप कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो चौक का घेरा हिडोले की तरह घूम रहा था। जो कुछ ऊपर हो रहा था उसे अधिक अच्छी तरह देख पाने के लिए लोग लगातार इधर-उधर भाग-दौड रहे थे।

ऊचाई पर लटका हुआ लैम्प सूरज की तरह आखो को चकाचौंध कर रहा था। ऊपर को मुह उठाये हुए लोग हथेलियो से आखो पर ओट किये थे।

"वह रहा! वह रहा!" लोग चीख उठे।



"यह देखिये! वहां!"

"कहां? कहां है?"

"वहां, काफी ऊंचाई पर!"

"तिबुल! तिबुल!"

सैकड़ों उंगलियों ने बाईं ओर संकेत किया। वहां साधारण मकान था। मगर छहों मंजिलों की सभी खिड़कियां चौपट खुली हुई थीं। हर खिड़की में से सिर बाहर निकले हुए थे। वे एक दूसरे से भिन्न नजर आ रहे थे। कुछ सिरों पर फुंदने वाले रात्रिकालीन टोप थे; कुछ नारियां अपने सिरों पर गुलाबी बॉनेट टोपी पहने थीं जिनमें से भूरे घुंघराले बाल बाहर

निकले हुए थे, कुछ रूमाल बाधे थी, कुछ ऊपरवाले कमरा मे जहा युवा गरीब कवि, चित्रकार और अभिनेता रहते थे, सिगरेट के धुए के बादलो मे खोये हुए सफाचट दाढ़ी-मूछवाले खुशमिजाज चेहरे और नारियों के सिर भी दिखायी दे रहे थे। उनके सुनहरे चमकदार बाल इस तरह फैले हुए थे मानो उनके कधो पर पख लगे हुए हो। यह घर, जिसकी सलाखा वाली खिडकिया, खुली हुई थी और जिनसे रग-बिरगे सिर बाहर झाक रहे थे, एक बडे पिजरे जैसा प्रतीत हो रहा था, जिसमे पपीहे भरे हुए हो। इन सिरो के स्वामी छत पर घटनेवाली किसी बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना को देखने की कोशिश कर रहे थे। यह उतना ही असम्भव था जितना कि दर्पण के बिना अपने कान देख पाना। अपने मकान की छत देखने को उत्सुक लोगो के लिए चौक मे जमा उन्मत्त भीड दर्पण का काम दे रही थी। चौक मे जमा भीड सभी कुछ देख रही थी, शोर मचा रही थी और हाथ हिला रही थी। कुछ लोगो की खुशी का कोई ठिकाना न था, दूसरे गुस्से से आग-बबूला हुए जा रहे थे।

छत पर एक छोटी-सी आकृति हिलती-डुलती नज़र आ रही थी। वह धीरे-धीरे, सावधानी और विश्वास के साथ मकान के तिकोने ढालू शिखर से नीचे की ओर आ रही थी। उसके पैरो के नीचे टीन बज रहा था।

यह आकृति अपना सन्तुलन बनाये रखने के लिए लबादे को इधर-उधर हिला रही थी, ठीक उसी तरह, जैसे सरकस मे रस्से पर चलनेवाला कलाकार सन्तुलन के लिए पीली चीनी छतरी का उपयोग करता है।

यह था नट तिबुल।

लोग चिल्ला उठे—

"शाबाश तिबुल! शाबाश तिबुल!"

"सम्भलकर बढते जाओ! याद कर लो कि कैसे तुम मेले मे रस्से पर चला करते थे"

"अरे, वह गिरनेवाला आदमी नही! वह हमारे देश का चोटी का नट है"

"उसके लिए यह कोई नई चीज नही है। हम अपनी आखो से देख चुके हैं कि वह रस्से पर चलने की कला मे कितना अधिक माहिर है"

"शाबाश तिबुल!"

"भाग जाओ! बच निकलो! प्रोस्पेरो को आज़ाद कराओ!"

कुछ दूसरे लोग लाल-पीले हो रहे थे। वे घूसे दिखाते हुए चिल्ला रहे थे—

"अब तू बचकर कही नही भाग सकेगा, उल्लू मसखरे!"

"शैतान का चर्खा!"

"बागी! तुझे खरगोश की तरह गोली का निशाना बनाया जायेगा"

"कान खोलकर सुन ले! हम तुझे छत से जल्लाद के तख्त पर खीच ले जायेंगे। कल दस तख्त तैयार हो रहे है!"

तिबुल ख़तरनाक फ़ासला तय करता गया।

"अरे, यह यहां आ कैसे गया?" लोग पूछ रहे थे। "वह इस चौक में कैसे आ धमका? छत पर कैसे जा चढ़ा?"

"वह सैनिकों के हाथों से बच निकला," दूसरों ने जवाब दिया। "वह भागा, ओझल हो गया और फिर नगर के विभिन्न स्थानों पर दिखाई दिया, एक छत से दूसरी पर कूदता गया। वह तो बिल्ली की तरह फुर्तीला है। उसका हुनर आज उसके दायें आ गया। ऐसे ही तो देश भर में उसकी ख्याति नहीं हो गयी!"

चौक में सैनिक आ गये। लोग आस-पास की गलियों में भाग गये। तिबुल रेलिंग लांघकर छत के किनारे पर जा खड़ा हुआ। उसने अपना हाथ फैला दिया जिसके गिर्द लबादा लिपटा हुआ था। हरा लबादा झंडे की भांति लहरा उठा।

मेले-ठेले के खेल-तमाशों और रविवारीय सैर-सपाटों के समय लोग तिबुल को इसी लबादे और पीले तथा काले तिकोने टुकड़ों से सिली बिरजस पहने हुए देखने के आदी थे। अब ऊंचाई पर शीशे के गुम्बज के नीचे छोटा-सा, दुबला-पतला और धारीदार तिबुल भिड़ जैसा लग रहा था जो मकान की सफ़ेद दीवार पर रेंग रही हो। जब लबादा हवा मे फड़फड़ाता तो ऐसे लगता कि भिड़ ने अपने चमकदार हरे पंख फैला दिये हों।

"अभी तू नीचे आ गिरेगा, जहन्नुमी कीड़े! अभी तुझे गोली का निशाना बना दिया जायेगा!" झांइयों वाली मौसी से बहुत-सा धन विरासत में पा जानेवाले और नशे में धुत्त बांके-छैले ने चिल्लाकर कहा।

सैनिकों ने अपने मोर्चे साध लिये। उनका अफ़सर गुस्से से भुनभुनाता हुआ इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहा था। उसके हाथ में पिस्तौल थी। उसकी एड़ियां स्लेज की पटरियों की तरह लम्बी थीं।

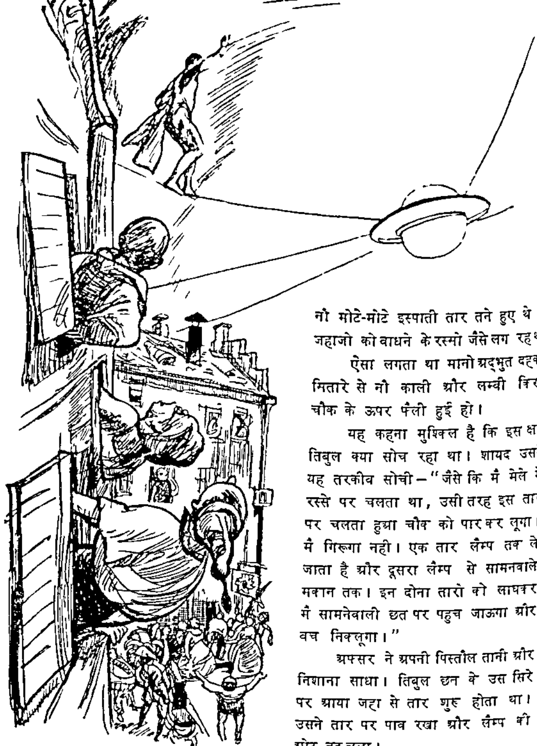
एकदम गहरा सन्नाटा छा गया। डाक्टर ने अपना दिल थाम लिया जो उबलते हुए पानी में अंडे की तरह उछल रहा था।

तिबुल क्षण भर के लिए छत के सिरे पर रुका रहा। उसे सामनेवाली दिशा में पहुंचना था। तब वह सितारे के चौक से मज़दूरों के मुहल्लों में भाग सकता था।

अफसर पीले और नीले फूलों की क्यारी के बीचोंबीच खड़ा था। उसकी बग़ल में तालाब था और पत्थर के गोल प्याले से फ़व्वारा छूट रहा था।

"ज़रा रुको!" अफसर ने सैनिको से कहा। "मैं ख़ुद इस पर गोली चलाऊंगा। मैं अपनी रेजिमेन्ट का सबसे अच्छा निशानेबाज हूं। जरा गौर से देखना कि कैसे गोली चलाई जाती है!"

चौक के गिर्द बने नौ मकानो से गुम्बज के मध्य मे, यानी सितारे की ओर



नौ मोटे-मोटे इस्पाती तार तने हुए थे जो जहाजो को बाधने के रस्सो जैसे लग रहे थे।

ऐसा लगता था मानो अद्भुत दहकते सितारे से नौ काली और लम्बी किरणे चौक के ऊपर फैली हुई हो।

यह कहना मुश्किल है कि इस क्षण तिबुल क्या सोच रहा था। शायद उसने यह तरकीब सोची—"जैसे कि मै मेले मे रस्से पर चलता था, उसी तरह इस तार पर चलता हुआ चौक को पार कर लूगा। मै गिरूगा नही। एक तार लैम्प तक ले जाता है और दूसरा लैम्प से सामनवाले मकान तक। इन दोनो तारो को लाघकर मै सामनेवाली छत पर पहुच जाऊगा और बच निकलूगा।"

अफसर ने अपनी पिस्तौल तानी और निशाना साधा। तिबुल छत के उस सिरे पर आया जहा से तार शुरू होता था। उसने तार पर पाव रखा और लैम्प की ओर बढ चला।

लोगों ने दम साध लिया।

वह कभी तो बहुत धीरे-धीरे कदम बढ़ाता, कभी बहुत तेज़ी से, लगभग भागते हुए। वह अपने हाथ फैलाकर ख़ुद को संतुलित करता। हर घड़ी ऐसे लगता कि वह गिरा कि गिरा। अब उसकी छाया दीवार पर झलकने लगी। वह लैम्प के जितना अधिक निकट होता जाता था, उसकी परछाई दीवार पर नीची, बड़ी और पीली होती जाती थी।

चौक नीचे बहुत दूरी पर था।

लैम्प की दूरी जब आधी रह गयी, तो गहरी ख़ामोशी में अफ़सर की आवाज़ गूंज उठी—

"मैं अब गोली चलाता हूं। वह सीधा तालाब में जा गिरेगा। एक, दो, तीन!"

गोली चलने की आवाज़ गूंज उठी।

तिबुल आगे बढ़ता रहा, मगर न जाने क्यों अफ़सर धड़ाम से तालाब में जा गिरा। उसे गोली मार दी गयी थी।

एक सैनिक के हाथ में पिस्तौल थी जिससे नीला धुआं निकल रहा था। उसी ने अफ़सर को गोली मारी थी।

"कुत्ते का पिल्ला!" सैनिक ने कहा। "तू जनता के हमदर्द को मारना चाहता था। मैंने तेरा इरादा नाकाम बना दिया। जनता जिन्दाबाद!"

"जनता जिन्दाबाद!" दूसरे सैनिकों ने उसका समर्थन किया।

"तीन मोटे ज़िन्दाबाद!" उनके विरोधी चिल्लाये।

वे सभी दिशाओं में फैल गये और तार पर चले जा रहे तिबुल पर गोलियां बरसाने लगे।

तिबुल अब लैम्प से दो कदमों की दूरी पर था। वह अपना लबादा हिलाकर लैम्प की जगमगाहट से आंखों को बचा रहा था। गोलियां उसके आस-पास से गुजर रही थीं। लोग ख़ुशी से चिल्ला रहे थे।

ठांय! ठांय!

"निशाने चूक रहे हैं!"

"हुर्रा! निशाने चूक रहे हैं!"

तिबुल ने लैम्प के गिर्द लगे हुए लोहे के चक्र पर पांव रखा।

"ख़ैर, कोई बात नहीं!" विरोधी दल के सैनिकों ने धमकी दी। "वह उधर सामने की ओर जायेगा... वह दूसरे तार पर से गुजरेगा। हम वहां से उसे नीचे मार गिरायेंगे!"

इसी क्षण एक ऐसी बात हुई जिसकी किसी ने भी आशा नहीं की थी। धारीदार आकृति जो लैम्प के निकट होने पर काली नज़र आने लगी थी, लोहे के चक्र के सिरे पर बैठ गयी,



उसने कोई पुर्जा घुमाया, सू-सू और फिर फक की आवाज हुई और लैम्प आन की आन मे बुझ गया। किसी के मुह से एक बोल तक न फूट पाया। सन्दूक के भीतर पायी जानेवाली भयानक खामोशी और भयानक अधेरे का सा वातावरण हो गया।

अगले क्षण बहुत ऊचाई पर कुछ ठक-ठक और टन-टन हुई। अन्धकारपूर्ण गुम्बज मे हल्की रोशनी का एक धब्बा-सा दिखाई दिया। सभी को थोडा-सा आकाश और उसमे दो सितारे नजर आये। इसके बाद इस गगनचुम्बी सूराख मे से एक काली आकृति रेंगकर बाहर निकली। फिर शीशे के गुम्बज पर किसी के तेजी से भागने की आवाज सुनाई दी।

नट तिबुल इस सूराख मे से बच निकला था।

गोलिया चलने और अचानक अधेरा हो जाने से घोडे डर गये थे।

डाक्टर की बग्घी तो उलटते-उलटते बची। कोचवान ने लगामे कसकर घोडो को काबू मे किया और घुमावदार रास्ते से डाक्टर को घर ले चला।

इस तरह एक गैरमामूली दिन और गैरमामूली रात बिताकर आखिर डाक्टर गास्पर आर्नेरी घर लौटे। उनकी नौकरानी, मौसी गानीमेड ओसारे मे ही उससे मिली। वह बहुत परेशान नजर आ रही थी। डाक्टर इतनी देर तक घर नही लौटे थे! मौसी गानीमेड ने हाथ नचाये, गहरी सास ली और सिर हिलाते हुए कहा—

"आपका चश्मा कहा गया? टूट गया? आह, डाक्टर, प्यारे डाक्टर! आपकी बरसाती कहा गयी? खो गयी? ओह, ओह!"

"मौसी गानीमेड, इतना ही नही, मेरी दोनो एडिया भी टूट गयी है..."

"ओह, यह तो बहुत बुरा हुआ!"

"आज तो इस से भी ज्यादा बुरी बात हुई है मौसी गानीमेड. हथियारसाज प्रास्पेरो बन्दी बना लिया गया। उसे लोहे के पिजरे मे बन्द कर दिया गया।"

मौसी गानीमेड को कुछ भी मालूम नही था कि दिन को क्या कुछ हुआ था। हा, उसने तोपो की गरज सुनी थी, मकानो के ऊपर लाल लपटें देखी थी। पडोसिन ने उसे बताया था कि बढई अदालत चौक मे विद्रोहियो के सिर काटने के लिए जल्लादो के तख्त बना रहे है।

"मुझे बहुत डर महसूस हुआ। मैंने खिडकिया बन्द कर ली और सोच लिया कि बाहर नही जाऊगी। हर घडी मैं आपके आने की उम्मीद करती रही। बहुत ही परेशान रही। दोपहर का खाना ठडा हो गया, शाम के खाने का भी वक्त गुजर गया, मगर आप नही लौटे. ." उसने कहा।

रात बीत चुकी थी। डाक्टर सोने की तैयारी करने लगे।

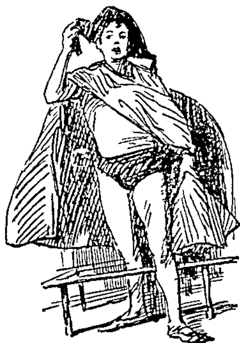
डाक्टर ने जो सौ विद्यायें पढ़ी थी, उनमें इतिहास भी शामिल था। उनके पास चमड़े की जिल्दवाली एक बड़ी कापी थी। इस कापी में वे महत्त्वपूर्ण घटनाओं के बारे में अपनी राय लिखा करते थे।

"आदमी को हर चीज़ वक़्त पर करनी चाहिए," डाक्टर ने उंगली ऊपर उठाते हुए कहा।

थकान की परवाह न करते हुए डाक्टर ने चमड़े की जिल्दवाली कापी उठाई, मेज पर जा बैठे और लिखने लगे।

"कारीगरों, खान-मज़दूरों और जहाजियों, – यानी नगर के सभी गरीब लोगों ने तीन मोटों की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया है। सैनिकों की जीत हुई। हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को क़ैद कर लिया गया और नट तिबुल भाग गया। अभी, कुछ ही समय पहले सितारे के चौक में एक सैनिक ने अपने अफ़सर को गोली से उड़ा दिया। इसका मतलब यह है कि जल्द ही सभी सैनिक जनता के विरुद्ध लड़ने और तीन मोटों की रक्षा करने से इन्कार कर देंगे। मुझे केवल तिबुल के बारे में चिन्ता हो रही है..."

इसी क्षण डाक्टर को अपने पीछे सरसराहट-सी सुनाई दी। उन्होंने घूमकर देखा। उस ओर अंगीठी थी। अंगीठी में से हरा लबादा पहने हुए एक लम्बा-तड़ंगा व्यक्ति बाहर आया। यह था नट तिबुल।



दूसरा भाग



उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया

चौथा अध्याय

गुब्बारेवाले के साथ क्या कुछ बीती

अगले दिन अदालत चौक में ज़ोरों से काम हो रहा था। वहां जल्लादों के दस तख़्ते बनाये जा रहे थे। सैनिक काम की निगरानी कर रहे थे। बढ़ई मन मारकर काम कर रहे थे।

"हम कारीगरों और खान-मज़दूरों के सिर काटने के लिए तख़्ते नहीं बनाना चाहते!" उन्होंने गुस्से से कहा।

"वे हमारे भाई हैं!"

"उन्होंने इसलिए अपनी जान की बाज़ी लगाई कि सभी मेहनतकशों को आज़ादी मिल सके!"

"चुप रहो!" सैनिकों का सरदार ऐसे ज़ोर से चिल्लाया कि दीवार के सहारे खड़े किये हुए तैयार तख़्ते नीचे जा गिरे। "चुप रहो, वरना मैं तुम्हें कोड़े लगवाऊंगा!"

सुबह से ही विभिन्न दिशाओं से लोग भारी संख्या में अदालत चौक की ओर आने लगे थे।

तेज हवा चल रही थी, धूल के बादल उड़ रहे थे, दूकानों के साइनबोर्ड हिल-डुल और खटखटा रहे थे, सिरों से टोपियां उड़कर घोड़ा-गाड़ियों के पहियों के नीचे लुढ़क रही थीं।

एक जगह पर तो हवा के कारण बहुत ही अनहोनी बात हो गयी – गुब्बारे एक गुब्बारे बेचनेवाले को ले उड़े।

"हुर्रा! हुर्रा!" इस अनोखी उड़ान को देखते हुए बालक चिल्ला उठे।

बालकों ने ख़ुश होते हुए ख़ूब ज़ोर से तालियां बजायीं। बात यह है कि यह दृश्य तो वैसे ही बहुत दिलचस्प था और फिर गुब्बारे बेचनेवाले को ऐसी अटपटी स्थिति में देखकर बालकों को वैसे भी बहुत ख़ुशी हुई। वह इसलिये कि बालकों को हमेशा इस गुब्बारे बेचनेवाले से ईर्ष्या होती थी। ईर्ष्या करना बुरी बात है। मगर किया भी क्या जाये! लाल, नीले और पीले गुब्बारे तो बरबस बालकों का मनमोह लेते। हर बालक चाहता कि उसके पास भी एक ऐसा गुब्बारा हो। गुब्बारे बेचनेवाले के पास तो ढेरों गुब्बारे होते थे। मगर करिश्मे

तो कभी नही होते! वहुत ही आज्ञाकारी लडके और वहुत ही दयालु लडकी को भी उसने अपने जीवन मे कभी एक वार भी लाल, नीला या पीला गुब्बारा भेंट नही किया था।

अब उसे ऐसा सगदिल होने की सजा मिली थी। वह गुब्बारो वाली रस्सी के साथ लटका हुआ शहर के ऊपर उड रहा था। चमकते और ऊचे नीलाकाश मे उडते हुए गुब्बारे जादुई अगूरो के रग-विरगे गुच्छे जैसे प्रतीत हो रहे थे।

"वचाओ!" गुब्बारे वेचनेवाला चिल्ला रहा था। मगर उसे मदद मिलने की कोई आशा नही थी और वह अपनी टागो को जोरा से इधर-उधर झटक रहा था।

गुब्बारे वेचनेवाला अपने पैरो मे घास-फूस के और माप से वडे जूते पहने हुए था। जव तक वह जमीन पर था, सव ठीक-ठाक था। इसलिये कि जूते पैर से निकल न जायें, वह पटरियो पर चलता हुआ आलसी व्यक्ति की तरह पैरो को घसीटता रहता था। मगर अव जव वह हवा मे उड रहा था, तो यह तिकडम उसके काम न आ सकती थी।

'ओह, वेडा गर्क!"

उडते हुए और एक दूसरे से रगड खाते हुए गुब्बारे हवा मे कभी एक तरफ को हो जाते थे, कभी दूसरी तरफ को।

आखिर एक जूता उसके पैर से उतरकर नीचे गिर ही गया।

अरे वह देखो! मूगफली! मूगफली!" नीचे भागते हुए वालक चिल्लाये।

वास्तव मे ही नीचे गिरता हुआ जूता मूगफली की याद दिलाता था।

इसी समय सडक पर नृत्य का शिक्षक चला जा रहा था। वहुत ही वाका-सजीला था वह। लम्बा कद, छोटा-सा गोल मटोल सिर और पतली-पतली टागे, वायलिन या टिड्डे से मिलता-जुलता। उसके कोमल कान वासुरी की दर्दीली तान और नर्तको के नाजुक शब्द सुनने के आदी थे। वालको की खुशी भरी किलकारिया और हो-हल्ला वह कैसे सहन करता!

"चीखना-चिल्लाना बन्द करो!" उसने विगडते हुए वालको से कहा। "ऐसे भी कहीं शोर मचाया जाता है! खुशी को खूवसूरत और मधुर वाक्यो मे व्यक्त करना चाहिये मिसाल के तौर पर "

उसने मुद्रा वनाई, मगर मिसाल पेश करने की नौवत न आ पायी। नृत्य के सभी अध्यापको की तरह उसे भी पैरा की ओर ही देखने की आदत पडी हुई थी। हाय, अफसोस! ऊपर क्या हो रहा था, इसकी तरफ उसका ध्यान नही गया।

गुब्बारे वेचनेवाले का जूता उसके सिर पर आ पडा। उसका सिर छोटा सा था, इसलिये घास-फूस का वडा-सा जूता उसके सिर पर टाप की तरह आकर टिक गया।

अव यह नृत्य का सजीला अध्यापक गाय की तरह रम्भाने लगा। जूते से उसका आधा चेहरा ढक गया।



बालक तो हंसी के मारे लोट-पोट होने लगे—
"हा-हा-हा! हा-हा-हा!"

नाच का शिक्षक, एक-दो-तीन
चलता नजर झुकाये।
नाक बड़ी लम्बी-सी उसकी
चूहे-सा किकियाये॥
सिर पर टिका फूस का जूता
शोभा कही न जाये।

बाड़ पर बैठे हुए लड़कों ने सुर मिलाकर उक्त पक्तियां गायी। वे किसी भी क्षण बाड़ के दूसरी ओर कूदने और नौ-दो-ग्यारह हो जाने को तैयार थे।

"आह!" नृत्य के शिक्षक ने आह भरी। "आह, कितने दुख की बात है! बॉल-नाच का जूता होता, तब भी कोई बात थी! मेरी किस्मत में घास-फूस का ऐसा गन्दा ही जूता रह गया था!"

आख़िर हुआ यह कि नृत्य के शिक्षक को गिरफ़्तार कर लिया गया।

"ए हजरत," उसे डांटा गया, "कैसी भयानक सूरत बनाये फिर रहे हो। तुम समाज की शान्ति-भंग कर रहे हो। ऐसी हरकत तो वैसे ही कभी नही करनी चाहिये, और आजकल के ख़तरनाक वक़्त में तो भूलकर भी नहीं।"

नृत्य के शिक्षक ने हाथ मले।

"कैसा सफेद झूठ है यह!" उसने रोते और दुहाई देते हुए कहा। "उफ, कैसी गलतफ़हमी हो गयी है! वाल्ज़ नृत्यों और मुस्कानों की दुनिया में रहनेवाला, मेरे जैसा सजीला-छबीला व्यक्ति—क्या वह भी समाज की शान्ति-भंग कर सकता है? हाय! हाय!"

नृत्य के शिक्षक के साथ आगे क्या बीती, यह हमें मालूम नहीं। फिर हमें इसमें खास दिलचस्पी भी नही है। हमारे लिये तो यह जानना कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है कि हवा में उड़ते हुए गुब्बारे बेचनेवाले का क्या हुआ।

वह कुकरौंधा फूल की पंखुड़ी की तरह उड़ रहा था।

"यह तो सरासर बदतमीज़ी है!" गुब्बारे बेचनेवाला चिल्ला रहा था। "मैं बिल्कुल उड़ना नहीं चाहता! मुझे तो उड़ना ही नहीं आता..."

मगर उसकी चीख-पुकार बेसूद रही। हवा और भी तेज़ हो गयी। गुब्बारों का गुच्छा अधिकाधिक ऊंचा होता गया। हवा उसे नगर के बाहर, तीन मोटों के महल की ओर उड़ाये लिये जा रही थी।

गुब्बारे बेचनेवाले को कभी-कभी नीचे की भी झलक मिल जाती। नीचे उसे छतें, नाखूनो की तरह गन्दी-मन्दी टाइलें, साथ-माथ सटे हुए मकान, नीले पानी की सकरी पट्टी, खिलौनो-से लोग और बाग-बगीचो के हरे-हरे धब्बे नज़र आते। नगर उसे मानो वक्सुए मे टगा हुआ घूमता-सा लगता था।

हालत ने और भी खतरनाक रुख अपनाया।

"कुछ देर अगर और इसी तरफ उडता गया, तो मैं तीन मोटो के पार्क मे जा गिरूगा।" गुब्बारे बेचनेवाला यह सोचकर काप उठा।

अगले ही क्षण उसने अपने को धीरे-धीरे, बडी अदा और खूबसूरती से पार्क के ऊपर उडते पाया। वह अधिकाधिक नीचे आता जाता था। हवा का जोर कम हो गया था।

"मैं अब जमीन पर पहुचा कि पहुचा। मुझे पकड लिया जायेगा। पहले तो वे



कसकर मेरी पिटाई करेंगे और फिर जेल में बन्द कर देंगे। यह भी हो सकता है कि सभी तरह के झंझट से बचने के लिये फ़ौरन सिर ही कलम कर दें।"

किसी ने उसे नहीं देखा। हां, एक वृक्ष पर बैठे हुए पक्षी अवश्य डरकर सभी दिशाओं में उड़ गये। उड़ते हुए रंग-बिरंगे गुब्बारों की हल्की-सी परछाई पड़ रही थी, बादलों की परछाईं जैसी। प्यारे-प्यारे इन्द्रधनुष जैसे रंगों की यह परछाईं बजरी बिछे मार्ग, फूलों की क्यारी, हंस के ऊपर बैठे हुए एक लड़के की मूर्त्ति और ड्यूटी पर खड़े सन्तरी के ऊपर से तैरती हुई गुजरी। इस रंग-बिरंगी छाया से सन्तरी के चेहरे पर कमाल के परिवर्त्तन हुए। उसकी नाक मुर्दे की नाक की तरह नीली, मदारी की नाक की तरह हरी और फिर शराबी की नाक की तरह लाल हुई। कालेद्स्कोप में शीशे के रंग-बिरंगे टुकड़े भी इसी तरह रंग बदलते हैं।

खतरनाक घड़ी नजदीक आती जा रही थी। हवा गुब्बारे बेचनेवाले को महल की खुली हुई खिड़कियों की तरफ़ उड़ा ले चली। उसे तनिक भी सन्देह नहीं था कि वह क्षण भर मे रुई के गाले की तरह किसी खिड़की में से अन्दर जा गिरेगा।

ऐसा ही हुआ भी।

गुब्बारे बेचनेवाला एक खिड़की में से अन्दर जा गिरा। यह महल के रसोईघर की खिड़की थी। यहा मिठाइयां बनाई जा रही थीं।

उस दिन तीन मोटों के महल में इस बात की ख़ुशी में शानदार दावत हो रही थी कि एक दिन पहले हुई बग़ावत को कामयाबी से कुचल दिया गया था। दावत के बाद तीनों मोटे, राज्य परिषद् के सभी सदस्य, दरबारी और सम्मानित मेहमान अदालत चौक में जानेवाले थे।

प्यारे पाठको, महल के मिठाईघर में जा पहुंचने की तो कल्पना करते ही मुंह मे बरबस पानी भर आता है। यह तो मोटे ही बता सकते थे कि वहां कैसी कैसी चटख़ारेवाली चीज़ें बनती थीं। फिर आज तो ख़ास दिन था। शानदार दावत का दिन! आप कल्पना कर सकते हैं कि रसोइये और हलवाई क्या-क्या कमाल दिखा रहे होंगे।

मिठाईघर में जाकर गिरते हुए गुब्बारे बेचनेवाले को जहां डर लगा, वहां ख़ुशी भी हुई। शायद भिड़ को डर और ख़ुशी की ऐसी ही अनुभूति उस समय होती है जब वह किसी लापरवाह गृहिणी द्वारा खिड़की मे रख दिये केक के ऊपर मंडराती है।

वह बहुत तेजी से उड़ता हुआ भीतर आया और इसलिये ढंग से अपने इर्दगिर्द नजर न डाल सका। शुरू में तो उसे ऐसे लगा कि वह ऐसी जगह पर आ गिरा है जहां उष्ण देशों के अद्भुत, रंग-बिरंगे और दुर्लभ परिन्दे बन्द हैं; वे फुदकते हैं, चहचहाते हैं, चीं-चीं करते और सीटियां बजाते हैं। मगर दूसरे ही क्षण उसे लगा कि यह पक्षीघर नहीं, फलों की दूकान है जहां तरह-तरह के उष्णदेशीय फल रखे हुए हैं, पके हुए और रसीले।

सिर चकरानेवाली मीठी-मीठी सुगंध उसकी नाक में घुस गयी। गर्मी और घुटन से उसका दम घुटने लगा।

मगर इसी क्षण सब कुछ गड़बड़ हो गया – अद्भुत पक्षीघर भी और फलों की दूकान भी।

गुब्बारे बेचनेवाला पूरे का पूरा किसी नर्म-गर्म चीज़ पर जा बैठा। गुब्बारे उसने हाथ से नहीं छोड़े, कसकर पकड़े रहा। वे उसके सिर के ऊपर निश्चल खड़े हो गये।

उसने खूब जोर से आंखें भींच ली। यह सोच लिया कि किसी भी कीमत पर आंखें नहीं खोलेगा।

"अब मैं सब कुछ समझ गया," उसने सोचा। "यह न तो पक्षीघर है और न फलों की दूकान। यह तो मिठाईघर है और मैं केक के ऊपर बैठा हूं!"

सचमुच ऐसा ही था भी।

वह चाकलेट, माल्टों, अनारों, क्रीमों, पिसी हुई चीनी और मुरब्बों के साम्राज्य में बैठा था, रंग-बिरंगे और प्यारी प्यारी सुगन्धवाले साम्राज्य के सिंहासन पर। उसका सिंहासन था केक।

वह आंखें बन्द किये हुए था। वह समझता था कि अब उसकी खूब लानत-मलामत होगी, उसे मारा-पीटा जायेगा और वह इस सब के लिये पूरी तरह तैयार था। मगर हुआ वह, जिसकी उसने कल्पना तक न की थी।

"केक का तो सत्यानाश हो गया," छोटे हलवाई ने दुखी होते हुए कहा।

इसके बाद खामोशी छा गयी। सिर्फ उबलते चाकलेट में से फटते हुए बुलबुलों की आवाज आती रही।



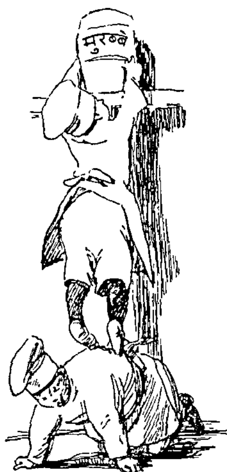
"जाने अब क्या होगा?" गुब्बारे बेचनेवाले ने डर के मारे गहरी सास लेते और अपनी आंखों को और अधिक कसकर भींचते हुए फुसफुसाकर कहा।

उसका दिल ऐसे उछल रहा था जैसे मनीबैग में पैसा।

"ख़ैर, कोई बात नहीं!" बड़े हलवाई ने भी कड़ाई से कहा, "हॉल में वे लोग दूसरा राउंड ख़त्म कर चुके हैं। बीस मिनट बाद केक पहुचना चाहिये। रंग-बिरंगे गुब्बारे और इस उड़नेवाले उल्लू का बेहूदा-सा चेहरा बढ़िया दावत के केक की सजावट के लिये बहुत ठीक रहेगा।" बड़े हलवाई ने इतना कहा और हुक्म दिया – "क्रीम लाओ!"

और सचमुच क्रीम लाई गई।

बस, अब तो ग़जब ही हो गया!



तीन हलवाई और बीस रसोइये-छोकरे गुब्बारे बेचनेवाले पर टूट पड़े। अगर तीनों मोटों में से सबसे मोटा इस दृश्य को देखता तो वह भी वाह वाह कर उठता। एक मिनट में ही उसे सभी तरफ से क्रीम से ढक दिया गया। गुब्बारे बेचनेवाला आंखें बन्द किये बैठा था, कुछ भी नहीं देखता था। मगर नजारा था देखने लायक। उसे क्रीम से तर-ब-तर कर दिया गया। हां, उसका सिर, बेल-बूटों वाली केतली से मिलता-जुलता उसका तोबड़ा बाहर निकला हुआ था। बाकी सारा शरीर हल्की गुलाबी झलकवाली सफ़ेद क्रीम से लथ-पथ कर दिया गया था। गुब्बारे बेचनेवाला और तो कुछ भी हो सकता था, मगर अब गुब्बारे बेचनेवाला नहीं रहा था। जैसे उसका घास-फूस का जूता ग़ायब हो गया था, वैसे ही अब वह ख़ुद भी।

कोई कवि उसे बर्फ़ की तरह सफ़ेद राजहंस समझ सकता था, किसी माली को वह संगमरमर का बुत-सा लग सकता था, कोई धोबिन उसे ढेरों ढेर साबुन का फेन मान सकती थी और कोई बालक बर्फ़ का पुतला।

सबसे ऊपर गुब्बारे लटके हुए थे। ऐसी सजावट थी तो गैरमामूली, मगर कुल मिलाकर खासी जच रही थी।

"हु!" अपने चित्र को मुग्ध दृष्टि से निहारनेवाले चित्रकार के अन्दाज़ मे बडे हलवाई ने कहा। इसके बाद उसकी आवाज पहले की भाति ही भयानक हो उठी और उसने चीखकर हुक्म दिया—"मुरब्बे लाओ!"

मुरब्बे आ गये। वे सभी किस्मो, सभी शक्लो और सभी आकारो के थे। उनमे खट्टे भी थे, मीठे भी, तिकोनी शक्ल के, सितारो जैसे, गोल, दूज के चाद जैसे और गुलाब की शक्ल के भी। रसोइये-छोकरे खूब मन लगाकर अपना काम कर रहे थे। बडे हलवाई के तीन तालिया बजाते तक क्रीम का टीला—सारे का सारा केक—तरह-तरह के मुरब्बो से सज गया।

"बस, काफी है!" बडे हलवाई ने कहा। "अब इसे थोडी देर के लिये ओवन मे रख देना चाहिये ताकि वह ज़रा ज़रा गुलाबी हो जाये।"

"ओवन मे?" गुब्बारे बेचनेवाले का दम निकल गया। "यह क्या सुना मैने? किस ओवन मे? मुझे ओवन मे?!"

इसी समय एक बैरा दौडता हुआ मिठाईघर मे आया।

"केक लाओ! केक!" वह चिल्लाया। "फौरन केक लाओ! हॉल मे केक का इन्तज़ार हो रहा है।"

"तैयार है!" बडे हलवाई ने जवाब दिया।

"शुक्र है भगवान का!" गुब्बारे बेचनेवाले ने कहा। अब उसने ज़रा-ज़रा आख खोली।

नीली वर्दी पहने हुए छ बैरो ने इस बडी सी प्लेट को उठाया जिसमे वह बैठा हुआ था। वे उसे ले चले। वह मिठाईघर से बाहर आ चुका था जब उसे रसोइयो के ठहाके सुनाई दिये थे।

बैरे उसे लिये हुए चौडी सीढिया चढकर ऊपर हॉल मे पहुचे। गुब्बारे बेचनेवाले ने घडी भर के लिये फिर आखे बन्द कर ली। हॉल मे खूब शोर मच रहा था, हसी-खुशी का वातावरण था। बहुत-से लोगो की आवाजें एकसाथ सुनाई दे रही थी, ठहाके गूज रहे थे, तालियां बजाई जा रही थी। हर बात इस चीज़ की गवाही देती थी कि दावत खूब कामयाब रही थी।

गुब्बारे बेचनेवाले को, नही, केक को लाकर मेज़ पर रख दिया गया।

अब गुब्बारे बेचनेवाले ने आखें खोली।

उसने तीन मोटो को देखा।

वे इतने मोटे थे कि हैरत से उसका मुह खुला रह गया।

"फ़ौरन मुझे मुंह वन्द कर लेना चाहिये," उसने झटपट अपने आप से कहा। "वर्तमान परिस्थिति में मेरे लिये अपने को जीता-जागता व्यक्ति न प्रकट करना ही बेहतर होगा।"

मगर अफ़सोस, मुंह बन्द न हुआ। दो मिनट तक ऐसी ही हालत रही। कुछ देर बाद गुब्बारे बेचनेवाले का आश्चर्य कुछ कम हुआ। उसने जोर लगाकर मुंह बन्द कर ही लिया। मगर तभी उसकी आंखें हैरत से फैल गयी। वह बड़ी कोशिश से कभी अपना मुंह तो कभी आंखें बन्द करता और आख़िर उसने अपनी हैरत पर काबू पा ही लिया।

तीनों मोटे हॉल में उपस्थित अन्य लोगों की तुलना मे ऊंचे मंच पर, आदर के स्थान पर बैठे थे।

वे तीनों ही सबसे ज्यादा खा रहे थे। उनमे से एक तो नेप्किन ही चबाने लगा था।

"आप नेप्किन चबा रहे हैं..."

"सच? मुझे ध्यान ही नहीं रहा..."

उसने नेप्किन रख दिया और उसी क्षण तीसरे मोटे का कान चबाने लगा। यहां यह बता देना भी ठीक होगा कि तीसरे मोटे का कान गुलगुले जैसा लग रहा था।

सब हंसी के मारे लोट-पोट होने लगे।

"अच्छा, अब मज़ाक़ छोड़ें," दूसरे मोटे ने कांटा उठाते हुए कहा। "मामला अब संजीदा रुख़ ले रहा है। वे केक ले आये है।"

"हुर्रा!"

हॉल में ख़ुशी की लहर दौड़ गयी।

"जाने अब क्या होगा?" गुब्बारे बेचनेवाला मन ही मन परेशान हो रहा था। "जाने अब क्या होगा? ये तो मुझे खा जायेंगे!"

इसी समय घड़ी ने दो बजाये।

"एक घंटे बाद अदालत चौक में सजायें दी जाने लगेंगी," पहले मोटे ने कहा।

"सबसे पहले तो हथियारसाज़ प्रोस्पेरो का ही सिर अलग किया जायेगा न?" प्रतिष्ठित मेहमानों में से किसी ने पूछा।

"उसे आज सजा नहीं दी जायेगी," सरकारी सलाहकार ने उत्तर दिया।

"क्यों? ऐसा क्यों?"

"फ़िलहाल हम उसे जिन्दा रखेंगे। हम उससे बाग़ियों के मंसूबों और उनके कर्त्ता-धर्त्ताओं के नाम जानना चाहते हैं।"

"इस वक़्त वह कहां है?"

सभी लोगों ने इस बातचीत में गहरी दिलचस्पी जाहिर की। उन्हें तो केक का भी ध्यान न रहा।

"वह पहले की तरह लोहे के पिजरे मे बन्द है। पिजरा यही महल मे, उत्तराधिकारी टूट्टी के चिडियाघर मे रखा हुआ है।"

"उसे यहा बुलवाइये "

"उसे यहा ले आओ!" – पहले मोटे ने कहा। "हमारे मेहमान उस दरिन्दे को अधिक नजदीक से देख पायेंगे। मैं तो आप सब को चिडियाघर मे ही चलने का सुझाव देता, मगर वहा तो बहुत शोर, चीख-चिघाड और बदबू है... जामो की खनक और फलो की महक से इसका क्या मुकाबला "

"वह तो है ही! सो तो है ही! चिडियाघर जाने मे कोई तुक नही. "

"प्रोस्पेरो को यही बुलवाइये! हम केक खाते हुए उस राक्षस को देखेंगे।"

"फिर केक!" गुब्बारे बेचनेवाला सहम उठा। "कम्बख्त हाथ धोकर केक के ही पीछे पडे हुए हैं पटू न हो तो!"

"प्रोस्पेरो को यहा लाया जाये," पहले मोटे ने कहा।

सरकारी सलाहकार बाहर निकला। दो कतारो मे खडे हुए बैरो ने एक दूसरे से दूर हटते हुए सिर झुका लिये। ये कतारे नीची हो गयी।

पेटू खामोश हो गये।

"वह बहुत खतरनाक आदमी है," दूसरे मोटे ने कहा। "सबसे ज्यादा ताकतवर है। बबरशेर से भी बढकर। उसकी आखो से नफरत की चिगारिया निकलती हैं। उससे आखें मिलाने की तो हिम्मत ही नही हो सकती।"

"उसका सिर भी भयानक है," राज्य परिषद् के सेक्रेट्री ने कहा। "यह बडा सारा! स्तम्भ के सिरे जैसा। बाल उसके लाल हैं। ऐसा लगता है मानो उसके सिर से आग की लपटें निकल रही हो।"

अब, जब हथियारसाज प्रोस्पेरो की बात चल पडी तो पेटुओ की हालत ही बदल गयी। उन्होने खाना पीना, मजाक करना और शोर मचाना बन्द कर दिया, पेट सिकोड लिये और कुछेक के तो चेहरो का रग भी उड गया। बहुतो को तो इस बात का अफसोस भी होने लगा था कि क्यो उन्होने उसे देखने की इच्छा जाहिर की।

तीनो मोटे सजीदा सूरत बनाये बैठे थे और मानो कुछ-कुछ दुबला भी गये थे।

अचानक सभी चुप हो गये। गहरा सन्नाटा छा गया। हर मोटा कुछ इस तरह से हिला-डुला मानो दूसरे के पीछे छिपना चाहता हो।

हथियारसाज प्रोस्पेरो को हॉल मे लाया गया।

आगे आगे सरकारी सलाहकार था। दायें-बायें सैनिक थे। वे मोमजामे की काली टोपिया पहने हुए ही और नगी तलवारे हाथ मे लिये हॉल मे आये। जजीरो की खनखनाहट

सुनाई दी। हथियारसाज़ के हाथो मे हथकडिया पडी हुई थी। उसे मेज़ के पास लाया गया। वह मोटो से कुछ कदमो की दूरी पर रुक गया। वह खडा था सिर झुकाये हुए। कैदी के चेहरे का रग पीला था। उसके माथे, कनपटियो और अस्तव्यस्त लाल बालो के नीचे खून जमा हुआ था।



प्रोस्पेरो ने सिर उठाकर मोटो की ओर देखा। पास बैठे हुए सभी लोग झटके के साथ पीछे हट गये।

"किस लिये इसे यहा ले आये?" एक मेहमान ने चीखकर पूछा। यह देश का सबसे धनी मिल-मालिक था। "मुझे इससे दहशत होती है।"

मिल-मालिक इतना कहकर बेहोश हो गया और उसकी नाक फलो की जेली मे जा धसी। कुछ मेहमान तो दरवाज़ो की तरफ भाग चले। केक की अब किसी को सुध न रही।

"क्या चाहते है आप लोग मुझसे?" हथियार-साज़ ने पूछा।

पहले मोटे ने हिम्मत से काम लेते हुए कहा –

"हम ज़रा यह देखना चाहते थे कि तुम लगते कैसे हो। तुम अब जिनकी मुट्ठी मे बन्द हो, क्या तुम्हारे लिये भी उन लोगो को देखना दिलचस्प नही है?"

"मुझे उबकाई आती है आपको देखकर।"

"घबराओ नही, जल्द ही हम तुम्हारा सिर धड से अलग कर देगे। इस तरह हम तुम्हे हमारी ओर देखने की ज़हमत से निजात दिला देंगे।"

"बडी परवाह पडी है मुझे सिर की। मेरा तो एक सिर है, मगर जनता के सिर है लाखो। आप उन सभी को तो काटने से रहे।"

"आज अदालत चौक मे सज़ा दी जायेगी। वहा जल्लाद तुम्हारे साथियो से निपटेंगे।" पेटुओ ने चटखारा भरा। मिल-मालिक होश मे आ गया। इतना ही नही, उसने अपने गालो से गुलाबी जेली भी चाटी।

"आप लोगो के दिमागो पर चरबी चढी हुई है," प्रास्पेरो ने कहा। "आपको अपनी तोदो के सिवा किसी चीज़ का होश नही है!"

"ज़रा ग़ौर फ़रमाइये न!" दूसरे मोटे ने बिगड़ते हुए कहा। "किस चीज़ का होश होना चाहिये हमें?"

"अपने मन्त्रियों से पूछिये। वे जानते हैं कि देश में क्या कुछ हो रहा है।"

सरकारी सलाहकार ने अटपटा-सा हुंकारा भरा। मन्त्रियों ने उंगलियों से प्लेटों पर ताल देनी शुरू की।

"इनसे पूछिये," प्रोस्पेरो कहता गया, "ये बतायेंगे आपको..."

वह चुप हो गया। सभी बेचैनी से उसका मुंह ताकने लगे।

"ये आपको बतायेंगे कि कमर दोहरी करके उगाया गया जिन किसानों का अनाज आप लोग छीन लेते हैं, वे ज़मीदारों के ख़िलाफ़ विद्रोह कर रहे हैं। वे उनके महलों को आग लगा रहे हैं, उन्हें अपनी ज़मीनों से निकाल रहे हैं। खान-मज़दूर अब इसलिये खानों से कोयला नही निकालना चाहते कि वह सब आप हथिया लें। आप लोगों की और अधिक तिजोरियां भरने के लिये मज़दूर काम करने को तैयार नही हैं। वे मशीनों को तोड़-फोड़ रहे हैं। जहाज़ी आपके माल को सागर में फेंक रहे हैं। सैनिक आपके लिये काम करना नही चाहते। विद्वान, कर्मचारी, न्यायाधीश और अभिनेता, जनता की ओर होते जा रहे हैं। वे सभी, जो पहले आपके लिये खटते थे और बदले में कोड़ियां पाते थे, जबकि आप लोग और ज़्यादा मालामाल होते जाते थे, वे सभी बदक़िस्मत, सभी अभागे, सभी भूखे, ख़स्ताहाल, यतीम, लुज-पुज और भिखमंगे अब आपके, मोटी तोंदवालों और धनियों के ख़िलाफ़, जिनके सीने में दिल की जगह पत्थर है, मोर्चा लेने को डट गये हैं..."

"मेरे ख़्याल में तो यह बेकार बक बक कर रहा है..." सरकारी सलाहकार ने टोकते हुए कहा।

मगर प्रोस्पेरो ने अपनी बात जारी रखी—

"पन्द्रह सालों से मैं जनता को आपसे और आपकी सत्ता से घृणा करना सिखा रहा हूं। ओह, कितने अर्से से हम शक्ति बटोर रहे हैं! अब आप लोगों की आख़िरी घड़ी आ गयी है..."

"बन्द करो यह अपनी बकवास!" तीसरा मोटा चीख़ उठा।

"इसे वापिस पिंजरे में भेज देना चाहिये," दूसरे मोटे ने सुझाव दिया।

पहले मोटे ने कहा—

"जब तक नट तिबुल को क़ैद नही कर लिया जाता, तब तक तुम अपने पिंजरे में ही पड़े सड़ते रहोगे। हम तुम दोनों को एकसाथ ही जहन्नुम को चलता करेंगे। लोग तुम्हारी लाशें देखेंगे तो एक ज़माने तक उन्हें हम से उलझने का ख़्याल तक नही आयेगा।"

प्रोस्पेरो चुप हो गया। उसने फिर से सिर झुका लिया।

पहला मोटा कहता गया—

"तुम्ह होश भी है कि किससे भिडने की सोच रहे हो। हम तीनो मोटे बहुत सशक्त हैं, साधनसम्पन्न हैं। हमीं तो हर चीज के मालिक हैं। मैं, पहला मोटा, हमारे देश मे पैदा होनेवाले सारे अनाज का मालिक हू। सारे कोयले का स्वामी है दूसरा मोटा और तीसरे मोटे ने सारा लोहा खरीद लिया है। हमी सबसे बढ-चढकर अमीर है! देश का सबसे अधिक धनी व्यक्ति हमारे मुकाबले में सौगुना गरीब है। हम अपने सोने से जो भी चाहे, वही खरीद सकते हैं।"

अब बाकी पेटुओं को भी जोश आया। मोटे के शब्दो ने उन्हे दिलेर बना दिया।

"इसे पिजरे मे भिजवाइये! पिजरे मे!" वे चिल्लाने लगे।

"वापिस चिडियाघर मे!"

"पिजरे मे!"

"विद्रोही!"

"पिजरे मे!"

सैनिक प्रोस्पेरो को ले गये।

"अब हम केक खायेगे," पहले मोटे ने कहा।

"हाय, अब जान गई!" गुब्बारे बेचनेवाले ने सोचा।

सभी की नजर उसपर टिकी हुई थी। उसने आखें बन्द कर ली। पेटू रग-तरग मे आ गये—

"हो-हा-हा!"

"हा-हा-हा! क्या गजब का केक है! जरा गुब्बारो पर तो नजर डालिये!"

"वे तो कमाल ही किये दे रहे हैं।"

"और यह तोबडा!"

"इसके क्या कहने है!"

सभी लोग केक की ओर सरक गये।

"इस तोबडे को देखकर बरबस हसी आती है। जाने इसके अन्दर क्या कुछ भरा हुआ है?" किसी ने पूछा और गुब्बारे बेचनेवाले के माथे पर जोर से चपत जमाया।

"मिठाइया होगी।"

"या शेम्पेन. "

"बहुत खूब! बहुत ही खूब!"

"आइये, पहले इसका सिर काटकर यह देखें कि इसके अन्दर से क्या निकलता है. ."

"ऊई मा!"

गुब्बारे बेचनेवाला अपने पर काबू न रख पाया। वह साफ तौर पर चीख़ उठा – "ऊई मा!" और उसने आखे खोल दी। जिज्ञासु झटके के साथ पीछे हट गये। इसी समय बरामदे मे किसी बालक की ऊची आवाज गूज उठी –



"गुड़िया! मेरी गुड़िया!"

सभी कान लगाकर सुनने लगे। तीन मोटे और सरकारी सलाहकार तो ख़ास तौर पर परेशान हो उठे। बालक का चीख़ना रोने में बदल गया। गुस्से मे आया हुआ बालक बरामदे में आकर बहुत ज़ोर से रो पड़ा।

"यह क्या मामला है?" पहले मोटे ने पूछा। "यह तो उत्तराधिकारी टूट्टी रो रहा है!"

"यह तो उत्तराधिकारी टूट्टी रो रहा है!" दूसरे और तीसरे मोटे ने एकसाथ दोहराया।

उन तीनो के चेहरो पर हवाइया उड़ने लगी। वे बुरी तरह सहम गये थे।

सरकारी सलाहकार, कुछ मन्त्री और नौकर-चाकर बरामदे मे खुलनेवाले एक दरवाज़े की ओर भागे। "क्या हुआ? क्या हुआ?" हॉल में सभी ओर ऐसी फुसफुसाहट सुनाई दी। लडका भागकर हॉल में आया, मन्त्रियों और नौकरों-चाकरो को इधर-उधर हटाता हुआ। उसके बाल इधर-उधर झूल रहे थे और वह चमकते हुए बढ़िया जूते पहने था। वह मोटों की ओर भाग गया। वह सिसकियां लेता हुआ कुछ असम्बद्ध शब्द कह रहा था जो किसी की समझ नही आ रहे थे।

"इस लडके की अब मुझ पर नज़र पड़ी कि पड़ी," गुब्बारे बेचनेवाला घबरा उठा। "यह कम्बख़्त क्रीम जो मुझे सास लेने या उगली तक भी हिलाने-डुलाने नही देती, यकीनन इसे अपनी ओर खीचेगी। जाहिर है कि उसे चुप कराने के लिये वे केक का टुकड़ा काट कर देंगे और उसके साथ-साथ मेरी एड़ी भी अलग हो जायेगी।"

मगर लड़के ने केक की ओर नजर उठाकर भी न देखा। इतना ही नहीं, गुब्बारे बेचनेवाले के गोल सिर के ऊपर लटक रहे शानदार गुब्बारों की ओर भी उसका ध्यान न गया। वह फूट फूटकर रो रहा था।

"क्या बात है?" पहले मोटे ने पूछा।

"उत्तराधिकारी टूट्टी क्यों रो रहा है?" दूसरे मोटे ने जानना चाहा।



"मेरी गुड़िया, मेरी अद्भुत गुड़िया टूट गयी है! उन्होंने मेरी गुड़िया का बुरा हाल कर दिया है। सैनिकों ने उसमें तलवारें घुसेड़ी हैं..."

वह फिर फूट फूटकर रोने लगा। अपनी छोटी-छोटी मुट्ठियों से आंसू पोंछते हुए वह उन्हें अपने गालो पर फैलाता जा रहा था।

"क्या ?!" मोटे चिल्ला उठे।

"क्या ?!"

"सैनिको ने ?"



"गुड़िया में तलवारें घुसेड़ी ?"

"उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया मे ?"

और हॉल में उपस्थित सभी लोगों ने मानो गहरी सास लेते हुए धीरे से कहा—

"यह नही हो सकता!"

सरकारी सलाहकार ने सिर थाम लिया। वही कमजोर दिल का मिल-मालिक फिर बेहोश हो गया, मगर मोटे के ज़ोर से चीख़ने-चिल्लाने के फलस्वरूप फौरन होश में आ गया—

"दावत ख़त्म की जाये! सब काम-काज छोड़ दिये जायें! परिषद् के सदस्य बुलाये जायें! सभी कर्मचारियों, सभी न्यायाधीशों, सभी मन्त्रियों, सभी जल्लादों को बुलाया जाये! आज सजायें देने का काम स्थगित किया जाये! महल में ग़द्दार हैं!"

भारी हलचल मच गयी। कुछ ही क्षण वाद महल वे दूत सभी दिशाग्रो मे सरपट घोडे दौडाते नजर ग्राये। पाच मिनट वाद सभी दिशाग्रा से न्यायाधीश, सलाहकार ग्रौर जल्लाद घोडे दौडाते हुए महल की ग्रोर ग्रान लगे। ग्रदालत चौक म वागियो को सजा पाते हुए देखन के लिये जमा हुई भीड को वापिस जाना पडा। डाडी पीटनेवालो ने चवूतरे पर खडे हो भोड को यह सूचना दी कि एक वहुत जरूरी कारण से वागिया को दण्ड देने का काम ग्रगले दिन के लिये स्थगित कर दिया गया है।

गुब्वारे वेचनेवाल को केक के साथ-साथ ही हाल से बाहर लाया गया। ग्रान की ग्रान म पेटुग्रा का नशा उतर गया था। उन सव न उत्तराधिकारी टूट्टी को घेर लिया ग्रौर उसकी कहानी सुनने लगे।

"मै पाक म घास पर वैठा था ग्रौर गुडिया भी मेरे पास ही वैठी थी। हम सूर्यग्रहण के शुरू होने का इन्तजार कर रहे थे। यह वहुत दिलचस्प चीज है। कल मैंने किताव म पढा था जव सूर्यग्रहण होता है तो दिन म सितारे नजर ग्राते है "

बहुत जोर से सिसकिया लेता हुग्रा उत्तराधिकारी ग्रपनी वात जारी नही रख पा रहा था। उसकी जगह उसके एक शिक्षक ने सारा किस्सा सुनाया। शिक्षक भी मुश्किल से ही ग्रपनी वात कह पाया, क्याकि वह डर से काप रहा था।

"उत्तराधिकारी टूट्टी ग्रौर उसकी गुडिया के निकट ही मै नाक ऊपर को किये हुए धूप म वैठा था। मेरी नाक पर फुसी है ग्रौर मैने सोचा कि सूरज की किरणें मुझे इस भोडी फुसी से निजात दिला देंगी। ग्रचानक वहा कुछ सैनिक सामने ग्रा खडे हुए। काई वारह रहे हागे। वे किसी वात को लेकर ग्रापस मे गर्मागम वहस कर रहे थे। हमारे निकट ग्राकर वे रुक गये। उनकी सूरत देखकर दहशत होती थी। उनमे से एक ने उत्तराधिकारी टूट्टी की ग्रोर इशारा करते हुए कहा—'यह वैठा है भेडिये का वच्चा। तीन मोटे सुग्ररो के यहा भेडिये का वच्चा पाला जा रहा है!' ग्रोह! मै तो इन शब्दो का ग्रर्थ समझता था।"

"ये तीन मोटे सुग्रर कौन हुए?' पहले मोटे ने पूछा।

वाकी दोनो मोटे लाल हो गये। तव पहले मोटे के चेहरे पर भी सुर्खी दौड गयी। ग्रव इन तीनो ने इतने जोर से नाक का इजन चलाना शुरू किया कि वरामदे का शीशे का दरवाजा खुलने ग्रौर वन्द होने लगा।

"वे उत्तराधिकारी टूट्टी के गिर्द ग्राकर खडे हो गये।' शिक्षक ने वात जारी रखी। 'उन्होने कहा—'तीन सुग्ररो के यहा लोहे का भेडिये का वच्चा पाला जा रहा है। उत्तराधिकारी टूट्टी, तेरे कौनसे पहलू मे दिल है?' उन्होने पूछा 'उसका दिल निकाल दिया गया है। वे इसे वेहद गुस्सैल, शैतान, सगदिल ग्रौर जनता से नफरत करनेवाला वनाना चाहते हैं जव तीन सुग्ररा का दम निकल जायेगा तो यह क्रोधी भेडिया उनकी गद्दी सम्भाल लेगा'।"

"आपने उन्हें ऐसी बकवास बन्द करने के लिये क्यों नहीं कहा?" शिक्षक का कंधा हिलाते हुए सरकारी सलाहकार चीख़ उठा। "क्या आप इतना भी न भांप सके कि वे ग़द्दार थे जो जनता के साथ जा मिले थे?"

शिक्षक की घिग्घी बंध गयी। उसने मरे मरे शब्दों में कहा—

"यह तो मैं समझ रहा था, मगर मुझे उनसे दहशत होती थी। वे बहुत गुस्से में थे। मेरे पास तो सिर्फ़ फुसी थी, कोई हथियार तो था नही... उनके हाथ तलवारों की मूठों पर थे, वे कुछ भी कर गुज़रने को तैयार थे। उनमें से एक ने कहा—'यह देखिये, यह रही पुतली, गुड़िया। यह भेड़िये का बच्चा गुड़िया से खेलता है। इसे जीते-जागते बालकों से दूर रखा जाता है। स्प्रिंगवाली गुड़िया इसकी दोस्त है।' तब एक दूसरा सैनिक चीख़ उठा—'मेरी पत्नी और बेटा गाव में हैं! एक दिन मेरा बेटा तीर-कमान से खेल रहा था। उसके तीर से ज़मींदार के बगीचे में एक नाशपाती बिंध गयी। ज़मींदार ने अमीरों की सत्ता का मुह चिढ़ाने के लिये लड़के को कोड़े लगवाये और उसके नौकरों-चाकरों ने मेरी बीवी की खुले आम बेइज़्ज़ती की।' सैनिक शोर मचाने लगे और उत्तराधिकारी टूट्टी के और क़रीब आ गये इसी वक़्त अपने बेटे का क़िस्सा सुनानेवाले ने तलवार निकाली और गुड़िया में घुसेड़ दी। बाकियों ने भी ऐसा ही किया..."

अब उत्तराधिकारी टूट्टी बहुत ही ज़ोर से रो पड़ा।

"'ले तू तो मज़ा चख ले, भेड़िये के बच्चे!' उन्होने कहा। 'बाद को तेरे मोटे सुअरों से भी निपटेंगे!'"

"कहां हैं ये गद्दार?" मोटे चीख़ उठे।

"वे गुड़िया फेंक कर पार्क में जा घुसे। उन्होने नारे लगाये—'हथियारसाज़ प्रोस्पेरो ज़िन्दावाद! नट तिबुल ज़िन्दावाद! तीन मोटे मुर्दाबाद!'"

"सन्तरियों ने उनपर गोलियां क्यों नहीं चलाईं?" हॉल में उपस्थित सभी लोगों ने जानना चाहा।

अब शिक्षक ने बहुत ही ख़तरनाक ख़बर सुनाई—

"सन्तरियों ने अपने टोप हिलाकर उनके लिये शुभकामना की। मैंने बाड़ के पीछे से सन्तरियों को उनसे विदा लेते देखा था। उन्होने कहा था—'साथियो! जनता से जाकर कहना कि जल्द ही सारी सेना उनकी ओर हो जायेगी...'"

तो यह कुछ हुआ था पार्क में। ख़तरे की सूचना दी जाने लगी। विश्वसनीय फ़ौजी दस्तों को महल की चौकियों, पार्क के आने-जाने के दरवाज़ों, पुलों और नगर के फाटक पर तैनात किया गया।

राज्यीय परिषद् की बैठक शुरू हुई। मेहमान घरों को चले गये। महल के बड़े डाक्टर

ने तीनो मोटो का वज़न किया। मगर अत्यधिक उत्तेजना के बावजूद तीनो मे से किसी की रत्ती भर चर्बी कम नही हुई थी। वडे डाक्टर को गिरफ्तार कर लिया गया और फरमान जारी किया गया कि उसे रोटी और पानी के सिवा कुछ भी न दिया जाये।

उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया पार्क मे घास पर पडी मिल गयी। वह सूर्यग्रहण न देख पाई। वहुत बुरी तरह उसका हुलिया विगाड दिया गया था।

उत्तराधिकारी टूट्टी किसी भी तरह शान्त नही हो पा रहा था। वह टूटी हुई गुडिया का आलिगन करता हुआ ज़ार-ज़ार आसू वहा रहा था। गुडिया लडकी जैसी लगती थी। उसका कद टूट्टी के बरावर था। वह वहुत ही महगी और वडे कलात्मक ढग से वनायी गयी गुडिया थी और विल्कुल जीती जागती लडकी जैसी लगती थी।

अव उसका फ्रॉक चिथडा म वदल चुका था और तलवारो के वारा से उसके वक्ष पर काले-काले सूराख हो गये थे। एक घटा पहले तक वह वैठ सकती थी, खडी हो सकती थी, मुस्करा और नाच सकती थी। अव वह महज़ पुतली थी, चिथडा के सिवा कुछ न थी। अव गुलावी रेशमी कपडे के नीचे उसके गले और छाती का टूटा हुआ स्प्रिग ऐसे खरखरा रहा था जैसे घटे वजाने के पहले पुरानी दीवालघडी खरखराती है।

"वह मर गयी!" उत्तराधिकारी टूट्टी ने शोकातुर होते हुए कहा। "हाय! कितने दुख की वात है! वह मर गयी!"

वालक टूट्टी भेडिये का वच्चा नही था।

"इस गुडिया को ठीक करना होगा," सरकारी सलाहकार ने राज्यीय परिपद् की वैठक मे कहा। "उत्तराधिकारी टूट्टी के दुख का पारावार नही। हर कीमत पर इस गुडिया को ठीक करना होगा!"

"दूसरी खरीद ली जाये," मन्त्रियो ने सुझाव दिया।

"उत्तराधिकारी टूट्टी दूसरी गुडिया नही चाहता। वह चाहता है कि इसी को ज़िन्दा किया जाये।"

"मगर कौन यह कर सकता है?"

"मै जानता हू उसे," सार्वजनिक शिक्षा के मन्त्री ने कहा।

"कौन है वह?"

"श्रीमानो, हम भूल गये कि हमारे नगर मे डाक्टर गास्पर आर्नेरी रहता है। यह व्यक्ति तो सभी कुछ कर सकता है। वह उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया को ठीक कर सकता है।"

परिपद् के सभी सदस्य खुशी से चिल्ला उठे—

"हुर्रा! हुर्रा!"

डाक्टर गास्पर की याद आने पर परिषद् के सभी सदस्य एकसाथ गा उठे—

उड़कर तारों तक जो जाये।
दुम से पकड़ लोमड़ी लाये।।
जो पत्थर से भाप बनाये।
बड़े करिश्मे कर दिखलाये।।
जिसके गुण का वार न पार।
अद्भुत है डाक्टर गास्पर।।

उसी समय डाक्टर गास्पर के नाम फ़रमान जारी किया गया—

श्री डाक्टर गास्पर आर्नेरी,

इस पत्र के साथ उत्तराधिकारी टूट्टी की टूटी हुई गुड़िया भेजी जा रही है। तीन मोटों की सरकार की राज्यीय परिषद् आपको आदेश देती है कि आप कल तक इस गुड़िया को ठीक कर दें। अगर यह गुड़िया पहले की तरह भली-चंगी और जीती-जागती सी हो जायेगी, तो आपको मुंह मांगा इनाम दिया जायेगा। अगर यह आदेश पूरा नहीं किया गया तो आपको कड़ी सज़ा दी जायेगी।

सरकारी सलाहकार,
राज्यीय परिषद् का अध्यक्ष...

सरकारी सलाहकार ने हस्ताक्षर किये। वहीं राज्य की बड़ी-सी मुहर लगा दी गयी। मुहर गोल थी और उसके बीच में ठसाठस भरी हुई थैली बनी हुई थी।

महल के सन्तरियों का कप्तान काउंट बोनावेन्तूरा दो सन्तरियों को साथ लेकर नगर की ओर रवाना हो गया ताकि डाक्टर गास्पर आर्नेरी को ढूंढ़कर उसे राज्यीय परिषद् का आदेश-पत्र पहुंचा दे।

ये लोग घोड़ों पर सवार थे और उनके पीछे-पीछे घोड़ा-गाड़ी थी। उसमें एक दरबारी बैठा था। उसकी गोद में गुड़िया थी। गुड़िया का घुंघराले पटोंवाला सिर उसके कंधे से टिका हुआ था और बहुत ही करुणाजनक लग रहा था।

उत्तराधिकारी टूट्टी ने रोना बन्द कर दिया। उसे यक़ीन हो गया कि अगले दिन उसकी गुड़िया भली-चंगी और ज़िन्दा होकर लौट आयेगी।

इस तरह महल में वह दिन बहुत चिन्ता और परेशानी में बीता।

गुब्बारे बेचनेवाले का क्या हुआ?

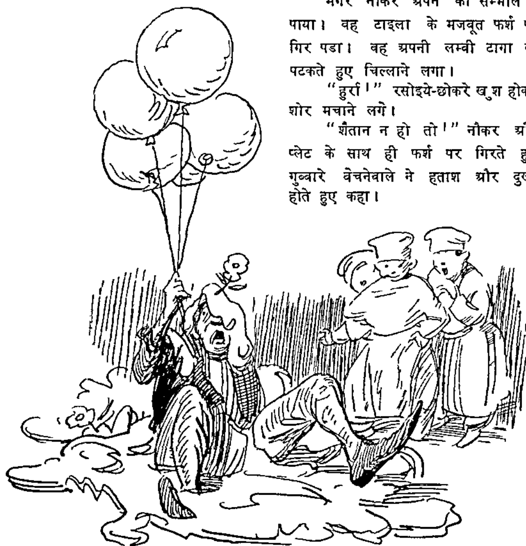
बैरे उसे हॉल से बाहर ले आये थे, यह तो हम जानते हैं।

वह फिर से मिठाईघर मे पहुच गया।
वहा यह दुर्घटना हो गयी।
केक लेकर जानेवाले नौकरा म से एक का पैर सन्तरे के छिलके पर जा पडा।
"सम्भलना!" बाकी नौकर चिल्लाये।
"हाय, मै गिरा!" गुब्बारे बेचनेवाले ने जब अपने सिहासन को डोलते पाया, तो वह चीख उठा।

मगर नौकर अपने को सम्भाल न पाया। वह टाइला के मजबूत फर्श पर गिर पडा। वह अपनी लम्बी टागा को पटकते हुए चिल्लाने लगा।

"हुर्रा!" रसोइये-छोकरे खुश होकर शोर मचाने लगे।

"शैतान न हो तो!" नौकर और प्लेट के साथ ही फर्श पर गिरते हुए गुब्बारे बेचनेवाले ने हताश और दुखी होते हुए कहा।



बड़ी सारी प्लेट के टुकड़े-टुकड़े हो गये। फेंटी हुई फूली-फूली क्रीम के गोले सभी दिशाओं में बिखर गये। नौकर उछलकर खड़ा हुआ और भाग गया।

रसोइये-छोकरे उछलने-कूदने, नाचने और शोर मचाने लगे।

गुब्बारे बेचनेवाला प्लेट के टुकड़ों, रसभरी के शरबत के डबरे और ख़ूब फेंटी हुई बढ़िया क्रीम के बादलों से घिरा हुआ बैठा था। क्रीम के ये बादल ख़राब हुए केक पर अब पिघलते जा रहे थे।

गुब्बारे बेचनेवाले ने यह देखकर राहत की सांस ली कि मिठाईघर में सिर्फ़ रसोइये-छोकरे ही थे, तीनों बड़े हलवाई नहीं थे।

"रसोइये-छोकरों से मैं अपना काम निकाल लूंगा। वे मुझे भागने में मदद देंगे। मेरे गुब्बारे मुझे मुसीबत से उबार लेंगे।" उसने सोचा।

वह गुब्बारों वाली रस्सी को कसकर पकड़े रहा।

छोकरो ने उसे सभी ओर से घेर लिया। उनकी ललचायी नज़रें बता रही थी कि गुब्बारे उनके लिये सबसे बड़ी दौलत हैं। उनमें से प्रत्येक केवल एक गुब्बारा पा जाने का सपना देखता है, वह इसे अपनी बहुत बड़ी ख़ुशक़िस्मती समझेगा।

इसलिये उसने कहा—

"मैं इन जान-जोखिम के कारनामों से तंग आ गया हूं। मैं न तो छोटा लड़का हूं और न ही कोई सूरमा। हवा में उड़ते फिरना मुझे पसन्द नही। तीन मोटों से मेरी जान कापती है। दावती केक की ख़ूबसूरती बढ़ाने का हुनर मुझे नहीं आता। मैं तो जी-जान से बस यही चाहता हूं कि जल्दी से जल्दी इस महल से निकल जाऊं।"

रसोइये-छोकरे ने हंसना बन्द कर दिया।

गुब्बारे हिल-डुल रहे थे, हवा में लहरा रहे थे। हिलते-डुलते गुब्बारों पर पड़ती हुई सूरज की किरणों से उनके अन्दर कभी नीला, कभी पीला और कभी लाल शोला-सा भड़क उठता। बहुत ही ग़ज़ब के थे ये गुब्बारे।

"तुम लोग यहां से भाग निकलने में मेरी मदद कर सकते हो?" रस्सी को झटके के साथ खींचते हुए गुब्बारे बेचनेवाले ने कहा।

"हां, कर सकते है," एक छोकरे ने धीरे से कहा और साथ ही यह भी जोड़ दिया— "अपने गुब्बारे हमें दे दीजिये।"

गुब्बारे बेचनेवाला यही तो चाहता था।

"अच्छा, ऐसा ही सही," उसने अपनी ख़ुशी छिपाते हुए मरी-सी आवाज़ मे उत्तर दिया। "मैं तैयार हूं। बेशक गुब्बारे बहुत महंगे हैं। मुझे इनकी सख़्त जरूरत है, फिर भी

मैं राजी हू। तुम लोग मुझे बहुत पसन्द हो। तुम बडे खुशमिजाज हो, तुम्हारे चेहरो पर निश्छलता है, तुम खुलकर हसते हो।"

"तुम सब पर शैतान की मार!" साथ ही उसने मन ही मन यह भी कहा।

"बडा हलवाई इस समय रसदखाने मे है," छोकरे ने कहा। "वह शाम की चाय के लिये बिस्कुट बनाने की सामग्री तोल रहा है। हमे उसके लौटने से पहले-पहले यह काम करना चाहिये।"

"यह तुम ठीक कहते हो," गुब्बारे बेचनेवाले ने सहमति प्रकट की। "देर करने मे कोई तुक नही।"

"सुनिये तो! मैं एक राज़ जानता हू।"

इतना कहकर यह छोकरा तावे के बडे-से देग के पास गया जो टाइलो के स्टैंड पर रखा हुआ था। उसने देग का ढक्कन उठाकर अधिकारपूर्ण ढग से कहा—

"लाइये गुब्बारे।"

"तेरा दिमाग चल गया है क्या!" गुब्बारे बेचनेवाला झल्ला उठा। "देग से मुझे क्या लेना देना है? मैं भागना चाहता हू। तुम उल्टे क्या यह चाहते हो कि मैं देग मे जा बैठू?"

"हा, यही तो।"

"देग मे?"

"हा, देग मे।"

"और उसके बाद?"

"उसके बाद आप खुद ही देख लेगे कि क्या कमाल होता है। चलिये घुसिये देग मे। भागने का यही सबसे बढिया उपाय है।"

देग इतना बडा था कि दुबले-पतले गुब्बारे बेचनेवाले की तो बात ही क्या, तीनो मोटो मे से सबसे ज्यादा मोटा भी उसमे समा सकता था।

"अगर वक्त रहते मुसीबत से पिंड छुडाना चाहते है, तो जल्दी से इसमे घुस जाइये।"

गुब्बारे बेचनेवाले ने देग म झाककर देखा। उसे उसका तल नज़र न आया। उसने कुए की भाति उसमे गहरा काला गढा देखा।

"तो ऐसा ही सही," गुब्बारे बेचनेवाले ने गहरी सास ली। "अगर देग मे ही घुसना जरूरी है, तो यही सही। हवाई उडान और क्रीम के स्नान से तो यह कुछ बुरा नही। अच्छा तो नमस्कार, छोटे-छोटे शैतानो! यह लो मेरी आज़ादी की कीमत।"

इतना कहकर उसने गाठ खोली और छोकरा मे गुब्बारे बाट दिये। हरेक को गुब्बारे मिल गये, अलग-अलग धागे से बधे हुए।

इसके बाद वह टांगें अन्दर घुसेड़ते हुए अपने ख़ास भद्दे ढंग से देग में घुसा। छोकरे ने ढक्कन बन्द कर दिया।

"गुब्वारे! गुब्वारे!" छोकरे ख़ुशी से शोर मचाने लगे।

वे मिठाईघर की खिड़कियों के नीचे पार्क में आ खड़े हुए।

यहा खुली हवा में गुब्वारों के साथ खेलना कहीं अधिक दिलचस्प था।

अचानक मिठाईघर की तीनों खिड़कियों में से तीनों हलवाइयों ने बाहर झांका।

"यह क्या हो रहा है?!" वे तीनों चीख़ उठे। "यह कैसी बदतमीज़ी है? फ़ौरन वापिस चलो!"

हलवाइयो की डांट से इन छोकरों की तो जान ही निकल गयी। डर के मारे गुब्बारों के धागे उनके हाथ से छूट गये।

उनकी ख़ुशी हवा में उड़ गयी।

बीस के बीस गुब्बारे बड़ी तेज़ी से चमकते हुए निर्मल नीलाकाश में ऊंचे चढ़ते गये। रसोइये-छोकरे फूलों के बीच मुंह खोले हुए घास पर खड़े थे। सफ़ेद टोपियों वाले अपने सिरों को पीछे की ओर फेंके हुए वे उन्हें ताक रहे थे।

पांचवां अध्याय

नीग्रो और पत्तागोभी का कल्ला

आपको यह तो याद होगा कि डाक्टर गास्पर की हंगामों और ख़तरों की रात का कैसे अन्त हुआ था? यही कि उसके कमरे की अंगीठी में से नट तिबुल निकलकर सामने आ खड़ा हुआ था।

सुबह होने पर उन दोनों ने वहां क्या किया, यह कोई नही जानता। मौसी गानी-मेड दिन भर की उत्तेजना और डाक्टर गास्पर की प्रतीक्षा से बहुत थक गयी थी और अब गहरी नींद सो रही थी। उसे सपने में मुर्गी दिखाई दी।

अगले दिन, यानी उस दिन जब गुब्बारों वाला उड़ता हुआ तीन मोटों के महल में जा पहुंचा और सैनिकों ने उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया मे तलवारें घुसेड़ीं, मौसी गानीमेड को एक बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा। हुआ यह कि चूहेदानी मे बन्द चूहा निकल भागा। पिछली रात यही चूहा आध सेर मुरब्बा चट कर गया था। इस से पहलेवाली रात को उसने कारनेशन फूलों वाला गिलास गिरा दिया था। गिलास चूरचूर हो गया था और फूलों से न

जाने क्या, दवाई की सी गन्ध आने लगी थी। उस भयानक रात को चूहा पिंजरे मे आ फसा था।

सुबह उठते ही मौसी गानीमेड ने चूहेदानी को हाथ म उठा लिया। चूहा ऐसे निश्चिन्त भाव से बैठा था मानो कह रहा हो कि पहली बार थोडे ही पिंजरे म आया हू। बहुत ही शैतान चूहा था वह।

"जो तेरे लिए न हो, अब तू वह मिठाई कभी न खाना!" मौसी गानीमेड ने चूहेदानी ऐसी जगह पर रखते हुए कहा जहा से वह दिखाई दे सके।

मौसी गानीमेड ने कपडे पहने और डाक्टर गास्पर की प्रयोगशाला की ओर चल दी। वह डाक्टर को यह खुशखबरी सुनाना चाहती थी। पिछली सुबह को जब उसने डाक्टर को यह बुरी खबर सुनाई थी कि चूहा मुरब्बा चट कर गया है, तो डाक्टर ने हमदर्दी ज़ाहिर की थी और कहा था—

"चूहे को मुरब्बा इसलिये अच्छा लगता है कि उसम बहुत-से तेज़ाब होते है।"

यह सुनकर मौसी गानीमेड शान्त हो गई थी।

"चूहे को मेरे तेज़ाब अच्छे लगते है अब देखेगे कि उसे मेरी चूहेदानी भी अच्छी लगती या नही।"

मौसी गानीमेड डाक्टर की प्रयोगशाला के दरवाज़े पर पहुची। उसके हाथ मे चूहेदानी थी।

अभी बहुत ही सवेरा था। खुली खिडकी मे से हरियाली झलक दिखा रही थी। वह तेज़ हवा जो गुब्बारे बेचनेवाले को ले उडी थी, बाद मे चली।

दरवाज़े के पीछे से कुछ आहट मिल रही थी।

"ओह, बेचारे डाक्टर!" मौसी गानीमेड ने सोचा। "लगता है, रात भर बिल्कुल सोये ही नही!"

उसने दरवाजे पर दस्तक दी।

डाक्टर ने अन्दर से कुछ कहा, मगर वह मौसी को सुनाई नही दिया।

दरवाज़ा खुला।

डाक्टर गास्पर दहलीज़ के पास खडे थे। प्रयोगशाला मे से जले हुए कार्क की सी गन्ध आ रही थी। कोने मे स्पिरिट लैम्प का छोटा-सा लाल शोला झलमला रहा था। ज़ाहिर था कि बची बचायी रात के समय डाक्टर कोई वैज्ञानिक कार्य करते रहे थे।

"नमस्ते!" डाक्टर ने खुशी से कहा।

मौसी गानीमेड ने डाक्टर को दिखाने के लिए चूहेदानी ऊपर को उठाई। चूहा अपनी नाक सिकोडते हुए कमरे की गन्ध को सूघ रहा था।

"मैंने चूहा पकड लिया!"

"सच!" डाक्टर बहुत ख़ुश हुए। "दिखाइये तो!"

मौसी गानीमेड खिड़की की तरफ लपकी।

"यह रहा!"

मौसी ने चूहेदानी डाक्टर की ओर बढ़ाई। अचानक उसे वहां एक नीग्रो दिखाई दि खिड़की के पास रखी हुई जिस पेटी पर "सावधानी से!" लिखा हुआ था, उसी पर सुन्दर नीग्रो बैठा था।

नीग्रो लाल बिरजस के सिवा कुछ भी न पहने था।

नीग्रो का रंग काला, बैंगनी, बादामी था। उसका बदन चमक रहा था।

वह पाइप के कश लगा रहा था।

मौसी गानीमेड इतने ज़ोर से "ऊई मां!" कहकर चीख़ उठी कि बस दो टुकड़े होते होते बची। वह लट्टू की तरह घूमी और उसने कनकौवे की तरह हाथ झटके। यह सब करते हुए उससे कुछ ऐसी असावधानी हुई कि चूहेदानी का मुंह खुल गया और चूहा निकलकर न जाने कहां गायब हो गया।

इतनी अधिक डर गयी थी मौसी गानीमेड!

नीग्रो ठठाकर ज़ोर से हंस दिया। उसकी लम्बी टागें फैली हुई थीं और उसके लाल जूते बड़ी-बड़ी सूखी हुई लाल मिर्चों जैसे प्रतीत हो रहे थे।

नीग्रो के दांतों के बीच पाइप तूफ़ान में झूलती हुई टहनी की भांति हिल-डुल रही थी।

डाक्टर भी हंस रहा था और उसकी नाक पर टिका हुआ नया चश्मा ऊपर-नीचे हो रहा था।

मौसी गानीमेड तीर की तरह कमरे से बाहर निकल गयी।

"चूहा!" वह चिल्लाई। "चूहा! मिठाई! नीग्रो!"

डाक्टर गास्पर उसकी ओर लपके।

"मौसी गानीमेड," उसे दिलासा देते हुए डाक्टर ने कहा। "आप बेकार ही परेशान न हों। मैं आपसे अपने नये तजरबे की चर्चा करना भूल गया... मगर आप ऐसी आशा तो कर ही सकती हैं... मैं तो ठहरा वैज्ञानिक, विभिन्न विज्ञानों का विशेषज्ञ, तरह-तरह की अनूठी चीज़ों का माहिर। मैं तो सभी तरह के तजरबे करता रहता हूं। मेरी प्रयोगशाला में नीग्रो ही नहीं, हाथी भी नज़र आ सकता है। मौसी गानीमेड... मौसी गानीमेड... नीग्रो की बात नीग्रो के साथ रही, आमलेट की आमलेट के साथ... हम नाश्ते का इन्तज़ार कर रहे हैं। मेरे नीग्रो दोस्त को बहुत-से अंडों का आमलेट पसन्द है..."

"चूहे को तेज़ाब पसन्द हैं," सहमी हुई मौसी गानीमेड फुसफुसायी, "और नीग्रो को आमलेट पसन्द है..."

"हा, ऐसा ही है। ग्रामलेट तो ग्रभी ले ग्राइये ग्रौर चूहे की चिन्ता कीजियेगा रात को। रात को वह काबू मे ग्रा जायेगा, मौसी गानीमेड। ग्राज़ाद रहकर वह करेगा भी क्या? मिठाई तो वह चट कर ही चुका है।"

मौसी गानीमेड रोई ग्रौर उसने नमक की जगह ग्रडो मे ग्रपने ग्रासू मिला दिये। उन मे ऐसी तलखी थी कि उन्होने मिर्चों का काम पूरा किया।

"ग्रच्छा किया कि काफी मिर्चे डाल दी। वहुत ज़ायकेदार वना है!" ग्रामलेट को चट करते हुए नीग्रो ने कहा।

मौसी गानीमेड ने दिल मजवूत करनेवाली दवाई की कुछ वूदे पी जिनमे से ग्रब न जाने क्यो कारनेशन फूलो की गध ग्रा रही थी। शायद ग्रासुग्रो के कारण।

वाद को उसने डाक्टर गास्पर को गली मे जाते देखा। नया गुलूबन्द लगाये, नयी छडी लिये ग्रौर नये जूते पहने (बेशक वास्तव मे पुराने जूतो को नयी लाल एडिया लगी हुई थी) वे खूब जच रहे थे।

उनके साथ-साथ नीग्रो चल रहा था।

मौसी गानीमेड ने कसकर ग्राखें मूद ली ग्रौर फर्श पर बैठ गयी। वास्तव मे फर्श पर नही, विल्ली के ऊपर, जो डरकर ज़ोर-जोर से म्याऊ-म्याऊ कर उठी। मौसी गानीमेड ग्रापे से वाहर हो गयी ग्रौर उसने विल्ली की पिटाई कर डाली। एक तो इसलिए कि वह हर समय रास्ते मे ग्राती रहती थी ग्रौर दूसरे इसलिये कि वह चूहे को भी नही पकड पायी थी।

इसी बीच चूहा डाक्टर गास्पर की प्रयोगशाला से भागकर मौसी गानीमेड की दराजदार ग्रलमारी मे जा घुसा था ग्रौर मिठाई की प्यारी-प्यारी याद करता हुग्रा वादामो के विस्कुट हडपता जा रहा था।

डाक्टर गास्पर ग्रार्नेरी छाया की गली मे रहता था। वायी ग्रोर मुडकर साधवी लिज़वेता के कूचे मे पहुचा जा सकता था। वहा से ग्रागे वह गली ग्राती थी जो विजली गिरने के कारण नष्ट हुए वलूत के लिये मशहूर थी। इस गली से पाच मिनट तक ग्रौर चलने पर व्यक्ति चौदहवें वाजार मे पहुच जाता था।

डाक्टर गास्पर ग्रौर नीग्रो उधर ही चल दिये। हवा तेज हो गयी थी। जला हुग्रा वलूत हवा के झोको मे झूले की तरह झूल-झूल जाता था। एक इश्तिहार चिपकानेवाले को ग्रपना काम करने मे वडी कठिनाई का सामना करना पड रहा था। वडा-सा इश्तिहार उसके काबू से वाहर होता हुग्रा उसके मुह पर फडफडा रहा था। दूर से ऐसा लगता था मानो कोई व्यक्ति सफेद नेप्किन से मुह पोछ रहा हो।

ग्राखिर उसने वाड पर इश्तिहार चिपका ही दिया।

डाक्टर गास्पर ने इश्तिहार पढ़ा जिसमें लिखा था—

आइये !

आइये !

आइये !

आज तमाशा देखने आइये !

तीन मोटों की सरकार ने लोगों के लिए

खेल-तमाशे की व्यवस्था की है !

जल्दी कीजिये !

जल्दी कीजिये !

जल्दी कीजिये !

चौदहवें बाज़ार में पहुंचिये !

"अब सारी बात समझ मे आ गयी," डाक्टर गास्पर ने कहा। "आज अदालत चौक मे बाग़ियो को सजा दी जानेवाली है। तीन मोटों की सरकार के जल्लाद उन लोगो के सिर कलम करेंगे जिन्होने अमीरो और पेटुओं की सत्ता के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई थी। तीन मोटे जनता की आखों मे धूल झोकना चाहते हैं। उन्हें इस बात का डर है कि अदालत चौक मे जमा होनेवाले लोग कही जल्लादो के तख़्ते न तोड़ डालें, जल्लादो की हत्या न कर दें और अपने उन भाइयों को आजाद न करा लें जिन्हें मौत की सज़ा देने की घोषणा की जा चुकी है। इसीलिये उन्होने लोगों के मनोरंजन की व्यवस्था की है। वे चाहते है कि लोग आज दी जानेवाली सजाओं के बारे में बिल्कुल भूल ही जायें।"

डाक्टर गास्पर और उनका नीग्रो साथी बाज़ार चौक मे पहुंचे। मंडपों के गिर्द लोगों की भारी रेलपेल थी। मगर वहा डाक्टर गास्पर को न तो कोई बांका-छैला नज़र आया, न कोई बनी-ठनी महिला, जो सुनहरी मछलियों और अंगूरों की आभावाली बढ़िया पोशाक पहने हो। वहा कोई जाना-माना बुजुर्ग भी नही था जो स्वर्णमढ़ी पालकी में बैठकर आया हो, न कोई ऐसा सौदागर ही था जिसकी बगल में चमड़े की बड़ी-सी थैली लटक रही हो।

यहा नगर के बाहर गन्दे-मन्दे घरों में रहनेवाले ग़रीब लोग—कारीगर, मिस्त्री, जौ की रोटिया बेचनेवाले, रोज़नदारिनें, कुली, बूढ़ी औरतें, भिखमंगे और लुज-पुंज ही दिखाई दे रहे थे। पुराने और जीर्ण-शीर्ण भूरे कपड़ों में कही-कही केवल हरे कफ़, रग-बिरगे लबादे या रंग-बिरगे रिबन नज़र आ जाते थे।

बूढ़ी औरतो के पके हुए बाल नमदे की तरह तेज़ हवा में उड़ रहे थे, आंखों में पानी आ रहा था। भिखमगों के बादामी रंग के चिथड़े फड़फड़ा रहे थे।



सभी के चेहरा पर तनाव था, सभी यह समझ रहे थे कि कोई न कोई ग्रनहोनी वात होनेवाली है।

"ग्रदालत चौक मे सजायें दी जायेंगी," लोग कह रहे थे, "वहा हमारे साथियो के सिर क़लम किये जायेंगे ग्रौर यहा वे मसखरे उछल-कूद मचायेंगे जिनकी तीन मोटो ने ख़ूब मुट्ठी गर्म की है।"

"ग्राग्रो, ग्रदालत चौक मे चलें!" लोग चिल्लाये।

"हमारे पास तो हथियार नही है। हमारे पास पिस्तौले ग्रौर तलवार नही है। मगर ग्रदालत चौक के गिर्द सैनिका का तिहरा पहरा है।"

"सैनिक ग्रभी तो उनका साथ दे रहे हैं। उन्होने हम पर गोलिया चलाईं। पर खैर, कोई वात नही! ग्राज नही तो कल ग्रपने मालिको को छोडकर हमारा साथ देंगे।"

"ग्रभी पिछली रात ही एक सैनिक ने सितारे के चौक मे ग्रपने ग्रफसर को गोली का निशाना वना दिया। इस तरह उसने नट तिबुल की जान वचाई।"

"तिबुल कहा है? वह बचकर भाग गया या नही?"

"मालूम नही। सैनिक सारी रात और पी फटने तक मजदूरों के घरों को आग की नजर करते रहे। वे तिबुल को ढूंढ़ लेना चाहते थे।"

डाक्टर गास्पर और नीग्रो मंडपों के क़रीब पहुंचे। तमाशा अभी शुरू नहीं हुआ था। फूलों के छापेवाले पर्दों और तख़्तों के पीछे से लोगों की आवाज़ें, घंटियों की टनटनाहट, बांसुरियों की गूंज और कुछ सरसराने, किकियाने और चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दे रही थी। वहा अभिनेता खेल-तमाशे के लिए तैयार हो रहे थे।

पर्दा हटा और एक चेहरा दिखाई दिया। यह एक स्पेनी था जिसे पिस्तौल की निशानेबाज़ी मे कमाल हासिल था। उसके बड़े-बड़े गलमुच्छे थे और एक आंख की पुतली हिल-डुल रही थी।

"ओह," नीग्रो को देखकर उसने कहा। "तुम भी इस तमाशे में हिस्सा ले रहे हो? कितनी रक़म मिली है?"

नीग्रो चुप रहा।

"मुझे तो दस स्वर्ण मुद्रायें मिली हैं!" स्पेनी ने डींग हांकते हुए कहा। उसने नीग्रो को भी अभिनेता ही समझा। "इधर आओ," उसने रहस्यपूर्ण मुद्रा बनाते हुए फुसफुसाकर कहा।

नीग्रो मंच पर चढ़ गया। स्पेनी ने उसे राज़ बताया। राज़ यह था कि तीन मोटों ने सौ अभिनेताओं की जेब गर्म करके उन्हें बाज़ारों में तरह-तरह के खेल-तमाशे दिखाने और साथ ही अमीरों तथा पेटुओं की सत्ता की बड़ाई और विद्रोहियों, हथियारसाज़ प्रोस्पेरो और नट तिबुल की बुराई करने का काम सौंपा था।

"उन्होने मदारियों, जानवर सधानेवालों, मसख़रों, विचित्र आवाज़ें निकालनेवालों और नर्तकों का बड़ा-सा दल इस काम में जुटाया है... सभी की मुट्ठिया गर्म की गयी हैं।"

"क्या सभी अभिनेता तीन मोटों की तारीफ़ करने को राज़ी हो गये हैं?" डाक्टर गास्पर ने पूछा।

स्पेनी ने आवाज़ और धीमी कर ली—

"शी!" उसने होंठों पर उंगली रखते हुए कहा। "यह बहुत धीमे से कहने की बात है। बहुतों ने इन्कार कर दिया। उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया।"

नीग्रो का ख़ून खौलने लगा।

इसी समय संगीत गूंज उठा। कुछ मंडपों में तमाशा शुरू हो गया। भीड़ इधर-उधर हिलने-डुलने लगी।

"दर्शकगण!" लकड़ी के ऊंचे चबूतरे पर खड़े हुए एक मसख़रे ने चीख़ते हुए कहा। "दर्शकगण! मैं आपको बधाई देता हूं..."

वह लोगो के चुप हो जाने की प्रतीक्षा करता हुआ खामोश हो गया। उसके चेहरे से आटा झड़ झड़कर गिर रहा था।

"दर्शकगण, मैं आपको आज के विशेष खुशी के अवसर पर बधाई देता हू। आज हमारे प्यारे, लाल-लाल गालों वाले तीन मोटो के जल्लाद दुष्ट विद्रोहियो के सिर कलम करेगे "

वह अपनी बात पूरी न कर पाया। इसी समय किसी कारीगर ने बची हुई रोटी उसकी ओर फेंकी। वह उसके मुह में जा गिरी।

"ग-ग-ग-ग-ग..."

मसखरे ने जोर लगाते हुए अपनी बात पूरी करने की कोशिश की, मगर बेसूद। अधपकी रोटी उसके मुह मे चिपक गयी। उसने हाथ झटके और अटपटे से मुह बनाये।

"शाबाश! यह इसी लायक था!" लोग चिल्ला उठे।

मसखरा भागकर लकडी की दीवार के पीछे गायब हो गया।

"कमीना कही का! तीन मोटो का नमक हलाल करना चाहता था! मुट्ठी गर्म कर दी गयी, इसलिये उन लोगो पर कीचड उछालना चाहता था जिन्होने हमारी आजादी के लिये मौत को गले लगाया!"

सगीत बहुत ऊचा हो गया। अन्य कई आरकेस्ट्रा भी शामिल हो गये – नौ बासुरिया, तीन बिगुल, तीन ढोल और एक वायलिन, जिसके स्वरो से दात मे दर्द की अनुभूति-सी होने लगती थी, एकसाथ बज रहे थे।

मडपो के प्रबन्धको ने भीड के शोर को इस सगीत मे डुबो देना चाहा।

"शायद हमारे अभिनेता इन रोटियो से डर जायेंगे," उनमे से एक ने कहा। "हमे तो ऐसे जाहिर करना चाहिए मानो कुछ हुआ ही न हो।"

"आइये! इधर आइये! खेल शुरू होता है..."

एक दूसरे मडप का नाम था 'त्रोजन का घोड़ा'।

पर्दे के पीछे से मैनेजर सामने आया। वह हरे रग का ऊचा ऊनी टोप पहने था और उसके कोट पर ताबे के गोल-गोल बटन लगे हुए थे। उसके गालो पर बहुत-सा रग मला गया था और वे बिल्कुल लाल-लाल दिखाई दे रहे थे।

"जरा चुप हो जाइये," उसने ऐसे कहा मानो जर्मन मे बोल रहा था। "जरा चुप हो जाइये! हमारा तमाशा देखने लायक है!"

कुछ लोग चुप हो गये।

"आज के पर्व के विशेष अवसर पर हमने पहलवान लापीतूप को निमन्त्रित किया है!"

"ता-ती-तू-ता!" बिगुल ने मानो नाम दोहराया।



बताशों ने मानो तालियां बजायीं।

"पहलवान लापीतूप आपको अपनी ताक़त के कमाल दिखायेगा..."

आरकेस्ट्रा ज़ोर से गूंज उठा। पर्दा हटा। लापीतूप मंच पर आया। गुलाबी बिरजस पहने हुए यह देव-दानव वास्तव में ही बहुत शक्ति-शाली प्रतीत हुआ।

वह फूं-फां कर रहा था और सांड़ की तरह सिर झुकाये था। त्वचा के नीचे उसकी पेशियां अजगर द्वारा निगले हुए ख़रगोशों की भांति ऊपर-नीचे हिल-डुल रही थीं।

सहायकों ने बड़े-बड़े बाट लाकर मंच पर फेंक दिये। तख़्ते तो टूटते-टूटते ही बचे। धूल का बादल ऊपर उठा। बाज़ार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लोगों की धीमी-सी फुसफुसाहट सुनाई दी।

पहलवान ने अपना कमाल दिखाना शुरू किया। उसने दोनों हाथों में एक-एक बाट उठाया, उन्हें गेंद की तरह उछाला, साधा और फिर इतने ज़ोर से आपस में टकराया कि चिनगारियां चमक उठीं।

"देखा आपने!" उसने कहा। "ऐसे ही तीन मोटे हथियारसाज़ प्रोस्पेरो और नट तिबुल की खोपड़ियां टकराकर उनका कचूमर निकाल देंगे।"

यह पहलवान भी तीन मोटों की स्वर्ण मुद्राओं के बदले में अपनी आत्मा बेच चुका था।

"हा-हा-हा!" अपने मज़ाक़ से ख़ुश होते हुए वह ठठाकर हंस दिया।

वह जानता था कि उस पर रोटी फेंकने की हिम्मत किसी को नहीं होगी। सभी तो उसकी ताक़त को देख रहे थे।

गहरी ख़ामोशी छा गयी थी। उस ख़ामोशी में नीग्रो की आवाज़ साफ़ तौर पर गूंज उठी। सभी के सिर उसकी ओर घूम गये।

"क्या कहा था तुमने?" मंच की पैड़ी पर पांव रखते हुए नीग्रो ने पूछा।

"मैंने कहा था कि तीन मोटे हथियारसाज प्रोस्पेरो और नट तिबुल की खोपडिया टकराकर उनका कचूमर निकाल देंगे।"

"ज़वान को लगाम दो!"

नीग्रो ने इत्मीनान और कडाई से, मगर धीरे से कहा।

"तुम कौन हो रे, काले-कलूटे?" पहलवान विगडा।

उसने बाट फेंककर कूल्हो पर हाथ रख लिये।

नीग्रो मच पर जा चढा।

"तुम वहुत ताकतवर हो, मगर कमीने भी कुछ कम नही। बेहतर है तुम यह बताओ कि तुम हो कौन? जनता पर फब्तिया कसने का हक तुम्हे किसने दिया? मैं तुम्हे जानता हू। तुम लुहार के वेटे हो। तुम्हारा बाप अभी तक कारखाने मे काम करता है। तुम्हारी वहन का नाम एली है। वह धोबिन है। वह अमीरो के कपडे धोती है। बहुत मुमकिन है कि सैनिको ने कल उसे गोली का निशाना बना दिया हो और तुम गद्दार हो!"

पहलवान स्तम्भित रह गया। नीग्रो ने तो सचमुच हर वात सही कही थी। पहलवान की तो अक्ल चकरा गयी थी।

"चलते बनो यहा से!" नीग्रो चिल्लाया।

पहलवान अब सम्भला। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा। उसने घूसे तान लिये।

"तुम्हे मुझे हुक्म देने का कोई हक नही है!" वह मुश्किल से इतना ही कह पाया। "मैं तुम्हे नही जानता। तुम शैतान हो!"

"चलते बनो यहा से! मैं तीन तक गिनता हू। एक!"

भीड सकते मे आ गयी। नीग्रो पहलवान से कद मे छोटा और शरीर मे एक-तिहाई था। मगर फिर भी किसी को इस बात म रत्ती भर सन्देह नही था कि अगर हाथापाई की नौबत आ गयी तो नीग्रो ही बाजी मार जायेगा। वह इतना फैसलाकुन और सजीदा नज़र आ रहा था, इतना भरोसा था उसे अपनी ताकत पर।

"दो!"

पहलवान ने गर्दन तान ली।

"शैतान!" वह फुसफुसाया।

"तीन!"

पहलवान गायब हो गया। बहुत से लोगो ने तो कसकर आखें मूद ली। उन्हे तो उम्मीद थी कि पहलवान ज़ोर का वार करेगा। मगर जब उन्होने आखे खोली तो पहलवान को गायब पाया। वह पलक झपकते म दीवार के पीछे जाकर ओझल हो गया था।

"इस तरह से लोग तीन मोटों को चलता कर देंगे!" नीग्रो ने हाथ ऊचे कर हंसते हुए कहा।

लोगों की ख़ुशी का पारावार न रहा। उन्होने तालिया बजायी और हवा में टोपिया उछाली।

"जय जनता!"

"शावाश! शावाश!"

केवल डाक्टर गास्पर ही असन्तोष ज़ाहिर करते हुए सिर हिला रहे थे। वे किस बात से नाख़ुश थे, यह स्पष्ट नही था।

"यह कौन है? कौन है यह? यह नीग्रो?" दर्शकों ने जानना चाहा।

"क्या यह भी अभिनेता है?"

"हमने तो इसे पहले कभी नही देखा!"

"कौन हो तुम?"

"क्यों तुम ने जनता की हिमायत की?"

"ज़रा रास्ता दीजिये! रास्ता दीजिये!"

चिथड़े पहने हुए एक व्यक्ति भीड़ को चीरकर आगे बढ़ा रहा था। यह वही भिखमंगा था जो पिछली शाम को मालिनों और कोचवानों से बातचीत करता रहा था। डाक्टर गास्पर ने उसे पहचान लिया।

"ज़रा मेरी बात सुनिये," भिखमंगे ने चिल्लाकर कहा। "क्या आप लोग इतना भी नही समझ रहे हैं कि हमारी आखो में धूल झोंकी जा रही है? यह नीग्रो भी पहलवान लापीतूप की तरह ही अभिनेता है। ये एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। इसने भी तीन मोटों का माल खाया है!"

नीग्रो ने मुट्ठियां भीच ली।

भीड़ की ख़ुशी गुस्से में बदल गयी।

"बिल्कुल ऐसा ही है! एक बदमाश ने दूसरे बदमाश को भगा दिया है।"

"उसे डर था कि हम उसके साथी की पिटाई कर देंगे, इसलिए उसने हम लोगो का उल्लू बनाया है।"

"दफ़ा हो जाओ यहां से!"

"नीच!"

"ग़द्दार!"

डाक्टर गास्पर कुछ कहना, भीड़ को शान्त करना चाहते थे, मगर देर हो चुकी थी। कोई बारह व्यक्तियों ने मच पर आकर नीग्रो को घेर लिया।

"इसकी ख़ूब पिटाई करो!" कोई बुढिया चिल्लाई।

नीग्रो ने हाथ बढ़ाया। वह शान्त था।

"ज़रा इत्मीनान कीजिये!"

लोगों का शोर, चीख़-चिल्लाहट और सीटियां नीग्रो की आवाज़ में दब गयीं। खामोशी छा गयी और उस ख़ामोशी में नीग्रो ने शान्त भाव से साफ़-साफ़ कहा—

"मैं नट तिबुल हूं।"

लोग हक्के-बक्के रह गये।

जिन लोगों ने तिबुल को घेर रखा था, वे पीछे हट गये।

"आह!" भीड़ ने गहरी सांस ली।

सैंकड़ों लोग आश्चर्य से सिहरे और स्तम्भित होकर रह गये।

केवल एक ही व्यक्ति ने बदहवासी में पूछा—

"तो तुम काले क्यों हो?"

"यह डाक्टर गास्पर आर्नेरी से पूछिये!" उसने मुस्कराकर डाक्टर की ओर संकेत किया।

"निस्सन्देह यह तिबुल ही है।"

"तिबुल!"

"हुर्रा! तिबुल सही-सलामत है! तिबुल ज़िन्दा है! तिबुल हमारे बीच है!"

"तिबुल ज़िंदाबाद!"

मगर ख़ुशी से नारे लगाते हुए लोग अचानक ही चुप हो गये। अप्रत्याशित कोई बुरी बात हो गयी थी। पीछे खड़े लोगों में घबराहट फैल गयी। लोग सभी दिशाओं में तितर-बितर होने लगे।

"खामोश! खामोश हो जाओ!"

"तिबुल भागो, अपनी जान बचाओ!"

चौक में तीन घुड़सवार आये और उनके पीछे एक घोड़ा-गाड़ी नमूदार हुई।

ये घुड़सवार थे—महल के सैनिकों का कप्तान काउंट बोनावेन्तूरा और उसके दो सैनिक। घोड़ा-गाड़ी में महल का एक कर्मचारी उत्तराधिकारी टूट्टी की टूटी हुई गुड़िया लिये बैठा था। घुंघराले कटे हुए बालों वाला गुड़िया का सिर करुणाजनक ढंग से कर्मचारी के कंधे के साथ सटा हुआ था।

ये लोग डाक्टर गास्पर की तलाश कर रहे थे।

"सैनिक!" कोई गला फाड़कर चीख उठा।

बहुत-से लोग पास की बाड़ फांद गये।

काली घोड़ा-गाड़ी रुक गयी। घोड़े सिर झटक रहे थे। उनके साज़ों की घंटियां टनटना रही थी, साज़ लौ दे रहे थे। हवा घोड़ों के सिरों पर लगे हुए नीले पंखों के गुच्छों से खिलवाड़ कर रही थी।

घुड़सवार घोड़ा-गाड़ी के गिर्द खड़े हो गये।

कप्तान बोनावेन्तूरा की आवाज़ बड़ी भयानक थी। अगर वायलिन की आवाज़ से दांत में दर्द-सा अनुभव होता था, तो कप्तान की आवाज़ से ऐसा लगता था मानो किसी ने दांत तोड़ डाला हो।

कप्तान ने रक़ाबों में उठकर पूछा—

"डाक्टर गास्पर आर्नेरी का घर कहां है?"

वह लगामो को कसे हुए था। वह हाथों में चौड़े-चौड़े कफ़ों वाले चमड़े के खुरदरे-से दस्ताने पहने था।

उसके प्रश्न की मानो एक बुढ़िया पर बिजली-सी गिरी। वह बुरी तरह सहम उठी और किसी एक दिशा मे उसने अपना हाथ हिला दिया।

"कहा है?" कप्तान ने प्रश्न दोहराया।

अब उसकी आवाज़ से ऐसी अनुभूति हुई मानो एक दांत नही, बत्तीसी ही तोड़ डाली गयी हो।

"मैं यहां हूं। कौन मुझे पूछ रहा है?"

लोग इधर-उधर बिखर गये। डाक्टर गास्पर सधे हुए क़दम रखते घोड़ा-गाड़ी के क़रीब आये।

"आप है डाक्टर गास्पर आर्नेरी?"

"हां, मैं ही हूं।"

घोड़ा-गाड़ी का पट खुला।

"फ़ौरन घोड़ा-गाड़ी मे बैठ जाइये। अभी आपको आपके घर ले जायेंगे और वहां आपको सारी बात का पता चल जायेगा।"

एक अरदली घोड़ा-गाड़ी के पीछे से कूदकर आगे आया और उसने डाक्टर गास्पर को सहारा देकर घोड़ा-गाड़ी में चढ़ाया। पट बन्द कर दिया गया।

धूल का बादल उड़ाता हुआ जुलूस रवाना हो गया। घड़ी भर बाद सभी लोग मोड़ मुड़कर ओझल हो गये।

न तो कप्तान बोनावेन्तूरा और न सैनिकों का ध्यान ही भीड़ के पीछे खड़े हुए तिबुल की ओर गया। वैसे भी नीग्रो को देखकर वे उस व्यक्ति को न पहचान पाते जिसे ढूंढ़ने के लिए पिछली रात वे बेहद दौड़-धूप करते रहे थे।

ऐसा प्रतीत हुआ मानो खतरा टल गया था। मगर अचानक किसी की गुस्से से भरी आवाज़ सुनाई दी।

पहलवान लापीतूप मामजामे से ढके लकडी के घेरे पर चढता हुआ चिल्ला रहा था—

'ज़रा ठहरो ज़रा ठहरो तो, अब तुम्हे मज़ा चखाऊगा, मेरे दोस्त! मैं अभी सैनिको को जाकर बताता हू कि तुम यहा हो!"

इतना कहकर वह लकडी के घेरे पर चढ गया।

लकडी का घेरा मोटे का वज़न बर्दाश्त न कर पाया। वह ज़ोर से चरमराकर टुकडे-टुकडे हो गया।

पहलवान की टाग सध म फस गई। उसने उसे बाहर निकाला और लोगो की भीड को चीरता हुआ तेज़ी से घोडा-गाडी के पीछे भाग चला।

"रुक जाइये!" वह भागता हुआ अपने नगे और गोल मटोल हाथो को हिलाता ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता जा रहा था। "रुक जाइये! नट तिबुल का पता चल गया! नट तिबुल यहा है! मेरी मुट्ठी म बन्द है!"

मामले ने खतरनाक रुख ले लिया। घूमती हुई आख की पुतली और पेटी के साथ टगी हुई पिस्तौल वाला स्पेनी भी सामने आ गया। दूसरी पिस्तौल उसके हाथ मे थी। उसने हो-हल्ला मचा दिया। वह मच पर उछलता-कूदता हुआ शोर मचा रहा था—

'उपस्थितगण! हम तिबुल को सौंप देना चाहिए, वरना हमारी शामत आ जायेगी! हम तीन मोटो से नही उलझना चाहिए!"

मडप का वह मैनेजर भी उसके साथ आ मिला जिसके पहलवान को तिबुल ने मच से भगा दिया था। वह चिल्लाया—

'इसने मेरा तमाशा चौपट कर दिया! इसने पहलवान लापीतूप को मच से भगा दिया! मैं इसके लिए तीन मोटो के गुस्से का शिकार नही होना चाहता!

लोगा की भीड ने तिबुल को अपनी ओट मे कर लिया।

पहलवान घुडसवारा तक नही पहुच पाया। वह फिर से चौक म लौट आया। वह तेज़ी से तिबुल की ओर बढा जा रहा था। स्पेनी कूदकर मच से नीचे उतर गया और उसने दूसरी पिस्तौल भी बाहर निकाल ली। मडप का मैनेजर न जाने कहा से सफेद कागज़ का एक चक्र उठा लाया। सरकस मे सधे हुए कुत्ते ऐसे ही चक्रो के बीच से कूदते है। वह इसी चक्र को घुमाता हुआ स्पेनी के पीछे-पीछे मच से नीचे कूद गया।

स्पेनी ने पिस्तौल का घोडा चढा लिया।

तिबुल ने समझ लिया कि अब उसे भाग जाना चाहिए। भीड ने रास्ता दे दिया। पलक झपकते मे वह चौक से गायब हो गया। वह बाड फादकर सब्ज़ी के खेत मे जा

पहुचा। उसने सेंध मे से झाककर देखा। पहलवान, स्पेनी और मैनेजर खेत की ओर भागे आ रहे थे। नज़ारा ऐसा था कि बरबस हंसी आ जाये। तिबुल हंस पड़ा।

पहलवान उन्मत्त हाथी की तरह भागा आ रहा था, स्पेनी पिछली टागों पर उछलने वाले चूहे जैसा लग रहा था और मैनेजर घायल टांग वाले कौए की तरह कूद रहा था।

"हम तुम्हें ज़िन्दा पकड़ लेंगे!" वे चिल्लाये। "अपने को हमारे हवाले कर दो!"

स्पेनी पिस्तौल के घोड़े को खटखटा रहा था, दात किटकिटा रहा था। मैनेजर काग़ज़ का चक्र घुमा रहा था।

तिबुल हमला होने का इन्तज़ार करने लगा। वह भुरभुरी काली मिट्टी पर खड़ा था। उसके चारों ओर क्यारियां थी। उन में पत्तागोभी के कल्ले थे, चुकन्दर थे, हरे-हरे सिर बाहर निकले हुए थे, डंठल हिल रहे थे और चौड़े-चौड़े पत्ते पड़े हुए थे।

हवा मे सभी कुछ हिल-डुल रहा था। निर्मल नीलाकाश ख़ूब चमक रहा था।

लड़ाई शुरू हुई।

तीनों व्यक्ति बाड़ के क़रीब पहुंचे।

"तुम यहां हो?" पहलवान ने पूछा।

कोई उत्तर नही मिला।

तब स्पेनी ने कहा—

"अपने को हमारे हवाले कर दो! मेरे दोनों हाथों में पिस्तौलें हैं। ये पिस्तौलें दुनिया की सबसे अच्छी फ़र्म 'ठग और बेटा' की बनी हुई हैं। मैं देश का सबसे बढ़िया निशानेबाज हूं, समझे?"

तिबुल को पिस्तौल चलाने की कला में कमाल हासिल नही था। उसके पास तो पिस्तौल थी भी नहीं। मगर उसके हाथ के पास या शायद यह कहना अधिक ठीक होगा कि उसके पैर के पास पत्तागोभी के बहुत-से कल्ले ज़रूर पड़े हुए थे। वह झुका, उसने एक गोल और भारी-सा कल्ला तोड़ा और बाड़ के दूसरी ओर दे मारा। कल्ला मैनेजर के पेट पर जाकर लगा। इसके बाद उसने दूसरा और तीसरा कल्ला फेंका... वे लगभग बम की तरह फटे।

दुश्मनों के होश हवा हो गये।

तिबुल चौथा कल्ला उठाने के लिए झुका। उसने उसे दोनों हाथों मे भर लिया, उखाड़ने के लिए ज़ोर लगाया, मगर नही, उसे कामयाबी नही मिली। इतना ही नहीं, उसने तो इन्सान की तरह बात भी करनी शुरू कर दी!

"यह गोभी का कल्ला नही, मेरा सिर है। मैं गुब्बारे बेचनेवाला हूं। मै एक भूमिगत मार्ग द्वारा तीन मोटों के महल से भाग आया हूं। इस मार्ग का आरम्भ होता है



एक देग से ग्रोर ग्रन्त होता है यहा। वह माग जमीन के नीचे लम्बी ग्रात की तरह फैला हुग्रा है ''

तिबुल को ग्रपने काना पर विश्वास नही हुग्रा। पत्तागोभी का कल्ला इन्सान का सिर वन गया था।

तिबुल तब झुका ग्रौर उसने ध्यान से इस करिश्मे की ग्रोर देखा। उसे ग्रपनी ग्राखा पर विश्वास करना ही पडा। वह व्यक्ति जो रस्स पर चल सकता है, उसकी ग्राखें धाखा नही खा सकती थी। उसने जो कुछ देखा था, उसम पत्तागोभी के कल्ले जैसी काई चीज नही थी।

यह गुब्वारे बेचनेवाने का गाल मटोल तोबडा था। सदा की भाति वह बेल-बूटा ग्रौर पतली टूटी वाली केतली के समान लग रहा था।

गुब्बारे बेचनेवाले का सिर ज़मीन से ऊपर को उठा हुआ था और उसकी गर्दन के गिर्द काली, सीली मिट्टी का कालर-सा बना हुआ था।

"यह भी ख़ूब रही!" तिबुल ने कहा।

गुब्बारे बेचनेवाला गोल-गोल आंखों से तिबुल की ओर देख रहा था जिनमें निर्मल नीलाकाश प्रतिबिम्बित हो रहा था।

"मैंने रसोइये-छोकरों को अपने गुब्बारे दे दिये और उन्होंने भागने में मेरी सहायता की... वह देखो, उनमे से एक गुब्बारा उड़ भी रहा है..."

तिबुल ने उधर नज़र दौड़ाई और बहुत ऊंचाई पर नीले आकाश में संतरे रंग का एक छोटा-सा गुब्बारा उड़ता हुआ देखा।

यह उन गुब्बारों में से एक था जो रसोइये-छोकरों ने उड़ा दिये थे।

उन तीनों ने भी जो बाड़ के पीछे खड़े हमले की योजना बना रहे थे, गुब्बारा देखा। अब स्पेनी तो सब कुछ ही भूल गया। वह ज़मीन से ऊपर को उछला, उसने अपनी आंख की पुतली घुमाई और निशाना साधने की मुद्रा बना ली। उसे तो निशानेबाज़ी का जनून था।

"उधर देखिये," वह चिल्लाया। "दस बुर्जों की ऊंचाई पर वह निकम्मा गुब्बारा उड़ रहा है! मैं सोने की दस मुहरों की शर्त लगाने को तैयार हूं कि उसे बीध डालूंगा। मुझसे बेहतर निशानेबाज़ ढूढ़े नहीं मिलेगा!"

कोई भी उससे शर्त लगाने को तैयार नही था, मगर इस से स्पेनी के जोश में कमी नही आई। पहलवान और मैनेजर तो गुस्से से लाल-पीले हो उठे।

"पाजी!" पहलवान चिल्ला उठा। "एकदम पाजी! यह गुब्बारो को निशाने बनाने का समय नही है। पाजी न हो तो! हमें तिबुल को पकड़ना है! बेकार कारतूस बरबाद न करो।"

मगर इस से कोई लाभ नही हुआ। यह बढ़िया निशानेबाज़ किसी भी तरह अपने पर क़ाबू न पा सका। निशाना लगाने के लिये गुब्बारा बहुत ही आकर्षक था। स्पेनी ने अपनी घुमती हुई पुतलीवाली आख बन्द करके निशाना साधना शुरू किया। जब तक वह निशाना साधता रहा, तिबुल ने गुब्बारे बेचनेवाले को ज़मीन से बाहर निकाला। कैसा दृश्य था वह! उसके कपड़ों पर क्या कुछ नही था! कही कुछ क्रीम लगी थी और कहीं शर्बत, कही कीचड़ चिपका हुआ था तो कही फलों के मुरब्बे के बने सितारे!

उस जगह, जहां से तिबुल ने उसे बोतल के डाट की तरह खीचकर बाहर निकाला, बड़ा-सा काला सूराख़ रह गया। उसमें मिट्टी भर गई और ऐसी आवाज़ हुई मानो छत पर बरसात की मोटी-मोटी बूंदें टपटपा रही हों।

स्पेनी ने गोली चलाई। गुब्बारे को तो ख़ैर, वह निशाना न बना पाया। ओह! उसकी गोली तो मैनेजर के हरे टोप में, जो ख़ुद भी एक बुर्ज के बराबर ऊंचा था, जा लगी।

तिबुल ने सब्ज़ी के खेत की बाड फादी और नौ-दो-ग्यारह हो गया।

हरा टाप गिर पडा और समोवार की पाइप की तरह लुढकने लगा। स्पेनी के हाथो के तोते उड गये। उसकी बढ़िया निशानेबाज़ होने की ख्याति मिट्टी मे मिल गयी थी। इतना ही नही, वह मैनेजर की नज़रो मे गिर गया था।

"अरे उल्लू!" मैनेजर आपे से बाहर हो गया। उसने कागज़ी चक्र स्पेनी के सिर पर दे मारा।

कागज़ फट गया और स्पेनी के सिर के गिर्द दातेदार कागज़ी कालर-सा बन गया।

सिर्फ लापीतूप ही मुह ताकता हुआ खडा रह गया। गोली दगने की आवाज़ से आसपास के कुत्ते भडक उठे। उनमे से एक कही से भागता हुआ आया और पहलवान की ओर झपटा।

"भागो, भागो बचकर!" लापीतूप ने चिल्लाकर कहा।

तीनो सिर पर पाव रखकर भागे।

गुब्बारे बेचनेवाला अकेला ही रह गया। उसने बाड पर चढ़कर इधर-उधर नज़र दौडाई। तीनो मित्र एक हरी-भरी पहाडी से नीचे लुढक रहे थे। लापीतूप एक टाग पर उछल रहा था और दूसरी मोटी टाग को उस जगह से पकडे हुए था जहा से कुत्ते ने उसे काट लिया था। मैनेजर एक वृक्ष पर जा चढा था और उसके साथ लटका हुआ उल्लू जैसा लग रहा था। स्पेनी कागज़ी चक्र मे से अपने सिर को हिलाता-डुलाता हुआ कुत्ते पर गोली चलाता था और हर बार खेत मे खडे कनकौवे को ही बीधता था।

कुत्ता पहाडी के ऊपर खडा था और ऐसा ही प्रतीत होता था मानो उसने फिर से झपटने का इरादा छोड दिया हो।

कुत्ते को लापीतूप की मोटी टाग से जो मजा मिला था, वह उस से सन्तुष्ट नज़र आता था। वह अपनी चमकती हुई गुलाबी जबान बाहर निकाले पूछ हिला रहा था और खुश दिखाई दे रहा था।

छठा अध्याय

अप्रत्याशित परिस्थितिया

तिबुल से जब यह पूछा गया था कि वह काला कैसे हो गया है तो उसने जवाब दिया था कि "डाक्टर गास्पर आर्नेरी से पूछिये"।

मगर डाक्टर गास्पर से पूछे बिना भी कारण का अनुमान लगाना कठिन नही है। हमे याद है कि तिबुल लडाई के मैदान से बच निकलने मे सफल हो गया था। हमे इस

बात का भी स्मरण है कि सैनिक उसकी तलाश करते रहे थे, उन्होने मजदूरों के मुहल्ले जला दिये थे और सितारे के चौक में गोलियां चलाई थी। तिबुल भागकर डाक्टर गास्पर के घर में आ छिपा था। मगर यहा उसे किसी भी क्षण पकड़ा जा सकता था। ख़तरा इसी बात का था कि यहा उसे बहुत बड़ी संख्या में लोग पहचानते थे।

हर दुकानदार तीन मोटो का हिमायती था, क्योंकि वह खुद भी मोटा और धनी था। डाक्टर गास्पर के अड़ोस-पड़ोस मे रहनेवाले धनी लोग सैनिकों तक यह ख़बर पहुंचा सकते थे कि तिबुल डाक्टर गास्पर के घर में है।



"आपको अपनी शक्ल-सूरत बदलनी होगी," डाक्टर गास्पर ने उस रात को कहा जब तिबुल उनके घर नमूदार हुआ।

डाक्टर गास्पर ने ही उसे नीग्रो बना दिया था।

उन्होने कहा था—

"तुम लम्बे-तड़ंगे हो। तुम्हारा सीना उभरा हुआ, कधे चौड़े-चौड़े, दात चमकते हुए और बाल सख्त, काले और घुघराले है। अगर त्वचा गोरी न होती तो उत्तरी अमरीका के नीग्रो जैसे लगते। हा, यह ख़ूब सूझी! मै तुम्हे काला बनने में मदद दूगा।"

डाक्टर गास्पर आर्नेरी को सौ विज्ञानों की जानकारी थी। वे बहुत ही गम्भीर, मगर उदारमना व्यक्ति थे। काम के वक़्त काम और खेल के वक़्त खेल ही होना चाहिए।

इसलिए वे कभी-कभी अपना जी भी बहलाते। मगर विश्राम भी करते तो वैज्ञानिक की भांति। तब वह गरीब यतीम बालको के लिए उपहारस्वरूप पानी मे भिगोकर उतारी जानेवाली तस्वीरे, अद्भुत फुलझड़िया, खिलौने, गज़ब की और अनजानी आवाज़ो वाले वाद्ययन्त्र और नये रग बनाते।

"यह देखिये," उन्होने तिबुल से कहा। "इस बोतल मे रगहीन तरल पदार्थ है। खुश्क हवा मे जिस भी शरीर पर इसे लगाया जायेगा, वह काला हो जायेगा, सो भी कुछ कुछ बैंगनी-सा – नीग्रो जैसे रग का। और इस बोतल मे वह पदार्थ है जो इस रग को साफ कर देता. "

तिबुल ने रग-बिरगे तिकोनो से बनी हुई अपनी बिरजस उतारी और कार्क की बदबू तथा जलन पैदा करने वाला तरल पदार्थ अपने तन पर मला।



एक घटे बाद उसकी त्वचा का रग काला हो गया।

तभी मौसी गानीमेड अपना चूहा लिये हुए आई थी। इसके बाद की कहानी हमे मालूम है।

अब हम डाक्टर गास्पर की ओर लौटते है। हमे याद है कि कप्तान बोनावेन्तूरा उन्हे महल के कर्मचारी के साथ काली घोडा-गाडी मे बिठाकर ले गया था।

घोडा-गाडी उडी चली जा रही थी। यह तो हमे मालूम ही है कि पहलवान लापीतूप उस तक नही पहुच पाया था। घोडा-गाडी के अन्दर अधेरा था। भीतर जाने पर डाक्टर ने शुरू मे तो यह समझा कि उसके पास बैठा हुआ कर्मचारी अस्तव्यस्त बालो वाली एक बालिका को अपनी गोद मे लिये है।

कर्मचारी मौन साधे था। बालिका भी।

"क्षमा कीजिये, आपके लिये जगह थोडी तो नही हो रही?" डाक्टर ने टोप उतारते हुए शिष्टतावश पूछा।

कर्मचारी ने रुखाई से जवाब दिया –

"आप चिन्ता न करे।"

घोडा-गाडी की छोटी-छोटी खिडकियो से कुछ-कुछ रोशनी छन रही थी। कुछ क्षण बाद आखो को अन्धेरे मे नजर आने लगा। तब डाक्टर को लम्बी नाक वाला कर्मचारी,

जो अपनी पलकों को कुछ-कुछ मूदे था, दिखाई दिया और बहुत ही सुन्दर फ़ॉक पहने प्यारी-सी बालिका की भी झलक मिली। बालिका बहुत ही उदास-सी प्रतीत हुई। सम्भवतः उसका रंग ज़र्द था, मगर अंधेरे में यह तय करना मुमकिन नहीं था।

"बेचारी बच्ची!" डाक्टर गास्पर ने सोचा। "ज़रूर यह बीमार है।" उन्होंने फिर से कर्मचारी को सम्बोधित किया –

"सम्भवतः आप मुझसे मदद लेने आये हैं? लगता है यह बेचारी बच्ची बीमार हो गयी है?"

"हा, आपकी मदद की जरूरत है," लम्बी नाक वाले कर्मचारी ने उत्तर दिया।

"निश्चय ही यह तीन मोटों में से किसी एक की भतीजी या उत्तराधिकारी टूट्टी की कोई छोटी-सी मेहमान है।" डाक्टर ने अनुमान लगाया। "इसकी पोशाक बढ़िया है, इसे महल से लाया जा रहा है और सैनिकों का कप्तान इसके साथ आया है। ज़ाहिर है कि यह कोई साधारण बालिका नही है। मगर ज़िन्दा बच्चों को तो उत्तराधिकारी टूट्टी के निकट ही नही आने दिया जाता। तब यह नन्ही परी वहां कैसे जा पहुंची?"

डाक्टर अपने अनुमानों में ही उलझ गये। उन्होंने फिर से लम्बी नाक वाले कर्मचारी से बातचीत शुरू की –

"कहिये तो बच्ची को क्या बीमारी है? डिफ्थीरिया तो नही?"

"नहीं, उसकी छाती में छेद है।"

"आपका मतलब है कि फेफड़ों में कुछ गड़बड़ है?"

"उसकी छाती में छेद है," कर्मचारी ने दोहराया।

डाक्टर ने शिष्टतावश बात को गोलमोल ही रहने दिया।

"बेचारी बच्ची!" उन्होंने गहरी सांस ली।

"यह बच्ची नही, गुड़िया है," कर्मचारी ने कहा।

इसी समय घोड़ा-गाड़ी डाक्टर के घर के सामने जा पहुंची।

कर्मचारी और कप्तान बोनावेन्तूरा डाक्टर के पीछे-पीछे उनके घर में गये। डाक्टर उन्हें अपनी प्रयोगशाला मे ले गये।

"अगर यह गुड़िया है तो भला मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

कर्मचारी ने सारी बात स्पष्ट की।

मौसी गानीमेड सुबह की घटना को अभी तक नही भूली थी और उत्तेजित थी। उसने छेद में से, भीतर झांककर देखा। वहा उसे डरावना कप्तान बोनावेन्तूरा दिखाई दिया। वह अपनी तलवार की टेक लगाये खड़ा था और घुटनों तक के मुड़े हुए किनारों वाले बड़े-बड़े बूट पहने अपने एक पैर को हिला-डुला रहा था। उसके बूटों की एड़िया दुमदार तारों

जैसी थी। मौसी को बढिया गुलाबी फ्रॉक मे उदास और बीमार बालिका भी नज़र आई जिसे कर्मचारी ने आराम कुर्सी पर बिठा दिया था। बालिका का अस्तव्यस्त बालो वाला सिर झुका हुआ था। ऐसा लगता था मानो वह फुदनो की जगह लगाये गये सुनहरे गुलाबी वाले प्यारे-प्यारे रेशमी सैंडलो की ओर देख रही थी।

तेज़ हवा के झोके हॉल के शटरो को खटखटा रहे थे और इस से मौसी गानीमेड के बातचीत सुनने मे बाधा पड रही थी। फिर भी कुछ न कुछ तो उसकी समझ मे आ ही गया।

कर्मचारी ने डाक्टर गास्पर को तीन मोटा की राज्यीय परिषद् का फरमान दिखाया। डाक्टर ने उसे पढा तो उनके हाथो के तोते उड गये।

"गुडिया कल सुबह तक ठीक हो जानी चाहिए," कर्मचारी ने उठते हुए कहा।

कप्तान बोनावेन्तूरा ने एडिया बजायी।

"मगर... मगर..." डाक्टर ने हाथ हिलाये। "मै कोशिश करूगा, मगर वादा नही कर सकता। मै इस जादुई गुडिया के कल-पुर्जो से अपरिचित हू। मुझे उन्हे देखना-समझना होगा, यह मालूम करना होगा कि इनमे क्या खराबी हुई है और नये पुर्जे तैयार करने होगे। इसके लिये बहुत काफी वक्त की ज़रूरत होगी। हो सकता है कि यह मेरी समझ मे ही न आये... मुमकिन है कि मै इस खराब की हुई गुडिया को ठीक ही न कर पाऊ... मै विश्वास के साथ नही कह सकता, भद्रजन... इतना थोडा समय है... केवल एक रात... मै वादा नही कर सकता..."

कर्मचारी ने उन्हे टोका। उगली उठाते हुए उसने कहा—

"उत्तराधिकारी टुट्टी के दुख का पारावार नही, इसलिए देर नही होनी चाहिए। गुडिया कल सुबह तक ठीक-ठाक हो जानी चाहिए। तीन मोटो का यही हुक्म है। उनके हुक्म अदूली करने की किसी को जुर्रत नही हो सकती। कल सुबह आप ठीक-ठाक और भली-चगी गुडिया लिये हुए तीन मोटो के महल मे आइयेगा।"

"मगर... मगर .." डाक्टर ने विरोध किया।

"यह 'अगर-मगर' बन्द कीजिये! गुड़िया कल सुबह तक ठीक हो जानी चाहिए। अगर आप यह कर देगे तो आपको इनाम दिया जायेगा, अगर नही, तो कडी सज़ा।"

डाक्टर के तो होश हवा हो गये थे।

"मै कोशिश करूगा," वह मिनमिनाये। "मगर इतना तो समझिये कि यह बहुत अधिक ज़िम्मेदारी का काम है।"

"बेशक!" कर्मचारी ने फौरन कहा और उगली नीचे कर ली। "मैने आदेश आप तक पहुचा दिया, आपका काम है उसे पूरा करना। नमस्कार!"

मौसी गानीमेड दरवाज़े से पीछे हटी और अपने कमरे मे भाग गयी जहा कोने मे ख़ुशक़िस्मत चूहा ची-ची कर रहा था। डरावने मेहमान बाहर निकले। कर्मचारी घोड़ा-गाड़ी में जा बैठा, काउंट बोनावेन्तूरा अपनी चमक-दमक दिखाता उछलकर घोड़े पर सवार हो गया। सैनिकों ने अपने टोप नीचे को कर लिये। सभी वहा से रवाना हो गये।

उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया डाक्टर की प्रयोगशाला मे रह गयी।

डाक्टर ने मेहमानों को विदा किया, फिर मौसी गानीमेड के पास आये और असाधारण कड़ाई से बोले—

"मौसी गानीमेड, ध्यान से मेरी बात सुनिये। लोग मुझे बुद्धिमान व्यक्ति मानते हैं, डाक्टर के नाते मेरी अच्छी ख्याति है और मुझे निपुण कारीगर भी माना जाता है। मैं अपनी ख्याति को बडा महत्व देता हूं। इसके अलावा मैं अपने सिर को भी सही-सलामत देखना चाहता हू। कल सुबह मेरी ख्याति को भी बट्टा लग सकता है और सिर भी कलम किया जा सकता है। आज रात भर मुझे बहुत मुश्किल काम करना है। समझी?" डाक्टर ने तीन मोटों की राज्यीय परिषद् का फ़रमान हिलाते हुए उसे दिखाया। "मेरे काम मे किसी तरह का ख़लल नही पड़ना चाहिये! शोर-गुल नही होना चाहिये। तश्तरियो को नही बजाइयेगा। चूल्हे पर कुछ नही जलाइयेगा। मुर्ग़ियों को आवाज नही दीजियेगा। चूहे को मत पकड़ियेगा। आमलेट, फूलगोभी, मिठाई और दिल को ताक़त देनेवाली दवाई की बात नही कीजियेगा! समझ गयी?"

डाक्टर गास्पर बहुत गुस्से मे थे।

मौसी गानीमेड ने अपने को कमरे में बन्द कर लिया।

"अजीब बातें हो रही हैं, बड़ी ही अजीब बाते!" वह बड़बड़ाती रही। "ख़ाक भी तो मेरी समझ में नहीं आ रहा... पहले तो वह नीग्रो कही से आ टपका, फिर गुड़िया और अब यह फ़रमान... अजीब बातें हो रही हैं आजकल!"

अपने को शान्त करने के लिये वह अपनी भतीजी के नाम ख़त लिखने बैठ गयी। ख़त बहुत सावधानी से लिखना पड़ा ताकि क़लम की आवाज न हो। वह नही चाहती थी कि डाक्टर बिगड़ उठें।

एक घंटा गुज़र गया। मौसी गानीमेड लिखे जा रही थी। वह यहां तक लिख चुकी थी कि कैसे उस सुबह को डाक्टर की प्रयोगशाला में अचानक ही एक नीग्रो नमूदार हुआ था। उसने आगे लिखा—

"...वे दोनो बाहर गये। डाक्टर महल के एक कर्मचारी और सैनिकों के साथ लौट आये। कर्मचारी और सैनिक एक गुड़िया लेकर आये जो बिल्कुल जिन्दा लड़की लगती है, मगर नीग्रो उनके साथ नहीं लौटा। वह कहा चला गया मुझे मालूम नहीं..."



नीग्रो, जो वास्तव मे नट तिबुल था, कहा चला गया था, यह सवाल डाक्टर गास्पर को भी परेशान कर रहा था। गुडिया की मरम्मत करते हुए वे लगातार तिबुल के बारे म सोचते रहे। वे झुझला उठे। अपने आप से बात करने लगे—

"हद हो गयी लापरवाही की भी! मैंने उसे नीग्रो बनाया, उसे अद्‌भुत रग से रगा, ऐसा बना दिया कि कोई भी पहचान न पाये, मगर चौदहवे बाजार म उसने खुद ही अपना भडाफोड कर दिया! उसे तो गिरफ्तार किया जा सकता था! ओह! कितना लापरवाह है वह! क्या वह लोहे के पिजरे मे बन्द होना चाहता है?" डाक्टर खीझ रहे थे। तिबुल की लापरवाही, फिर यह गुडिया इसके अलावा पिछले दिन की परेशानिया, अदालत चौक मे जल्लादो के दस तख्ते

"बडा भयानक वक्त आ गया है!" डाक्टर कह उठे।

डाक्टर को यह मालूम नही था कि उस दिन दी जानेवाली सजायें रद्द कर दी गयी हैं। महल का कर्मचारी नपी-तुली बात करनेवाला व्यक्ति था। उसने महल मे घटी घटना के बारे मे डाक्टर को कुछ नही बताया। डाक्टर उस बेचारी गुडिया की ओर देखते हुए सोचने लगे—

"इस पर ये वार किसने किये हैं? जरूर किसी हथियार से, शायद तलवार से ही। इस गुडिया, इस प्यारी बच्ची पर वार किये किसने ऐसा किया? किसे हिम्मत हुई उत्तराधिकारी टुट्टी की गुडिया को तलवार से बीधने की?"

डाक्टर यह अनुमान नही लगा पाये कि सैनिको ने ऐसा किया था। उनके दिमाग मे यह बात नही आ सकती थी कि महल के सैनिक भी तीन मोटा का साथ देना बन्द कर जनता की ओर होते जा रहे हैं। अगर उन्हे यह मालूम हो जाता, तो कितनी खुशी होती!

डाक्टर ने गुडिया का सिर हाथो मे ले रखा था। सूरज खिडकी मे से झाक रहा था। गुडिया उसके प्रकाश मे खूब चमक रही थी। डाक्टर उसे गौर से देख रहे थे।

"अजीब बात है, बडी अजीब बात है," वह सोच रहे थे, 'यह चेहरा तो मैंने कही पहले भी देखा है हा, जरूर! मैंने इसे देखा है, मै इसे पहचान रहा हू। मगर कहा देखा था मैंने इसे? कब देखा था? वह जीता-जागता चेहरा था, एक जीवित बालिका का चेहरा, बडा प्यारा-सा, मुस्कराता हुआ, तरह तरह के मुह बनाता, गम्भीर होता, चचलता दिखाता और उदास होता हुआ हा, हा! इसमे रत्ती भर भी शक शुबह नही हो सकता! मगर मेरी कम्बख्त कमजोर नजर चेहरा को याद कर पाने मे बाधा डालती है।"

डाक्टर ने गुडिया के घुघराले सिर को अपनी आखो के निकट कर लिया।

"कैसी कमाल की गुडिया है! कैसे सधे हुए हाथो ने इसे बनाया है! साधारण गुडिया जैसी तो उसमे कोई बात ही नही। गुडियो की आम तौर पर फूली फूली नीली आखें होती हैं, उन

मे इन्सानी ग्राखों जैसी कोई भी चीज़ नही होती, वे भावनाशून्य होती हैं, उनकी छोटी-सी नाक, फीते जैसे होंठ और वेढंगे से भूरे वाल होते हैं मेमने के ऊन जैसे। गुड़िया वैसे तो सुखी दिखाई देती है, पर वास्तव मे होती है भावनाशून्य... मगर इस गुड़िया में ऐसी कोई भी चीज़ नही है। कसम खाकर कहता हूं कि यह तो बिल्कुल ऐसी है मानो किसी लड़की को ही गुड़िया मे बदल दिया गया हो!"

डाक्टर गास्पर अपनी असाधारण रोगिनी पर मुग्ध हुए जा रहे थे। उनके दिमाग में लगातार यह बात आ रही थी कि कभी, और कही तो उन्होने यह पीला-सा चेहरा, गम्भीर भूरी आखे और कटे हुए अस्तव्यस्त वाल देखे है। सिर को हिलाने-डुलाने का ढंग और आखों का अन्दाज तो खास तौर पर जाना-पहचाना प्रतीत हुआ। वह अपने सिर को ज़रा-सा एक ओर को घुमाकर डाक्टर को झुकी-झुकी नजर से, वहुत ग़ौर से और शरारत भरे ढग से देखा करती थी...

डाक्टर अपने पर क़ावू न रख पाये और उन्होने ऊचे स्वर में पूछ ही लिया—

"क्या नाम है तेरा, गुड़िया?"

मगर लड़की चुप रही। तभी डाक्टर को एहसास हुआ कि गुड़िया ख़राव हो गयी है; उसकी आवाज़ लौटानी है, उसके दिल की मरम्मत करनी है, उसकी मुस्कान लौटानी है, उसे नाचना और इसी उम्र की लड़कियों के समान व्यवहार करना सिखाना है।

"देखने में कोई वारह साल की लगती है।"

इत्मीनान से काम करने का वक़्त नही था। डाक्टर काम मे जुट गये। "मुझे इस गुड़िया को जिन्दा करना है!"

मौसी गानीमेड ने ख़त खत्म कर लिया। दो घटे तक जैसे-तैसे ऊब वर्दाश्त करती रही। अब उसे कुरेद हुई—"जाने ऐसा क्या काम है जो डाक्टर को फ़ौरन करना चाहिये? जाने वह गुड़िया कैसी है?"

वह दवे पाव डाक्टर की प्रयोगशाला के दरवाजे पर आयी और उसने दिल की शक्लवाले छेद में से झांकने की कोशिश की। ओह! वहां तो चावी लगी हुई थी। उसे कुछ भी नज़र न आया। इसी समय दरवाज़ा खुला और डाक्टर गास्पर वाहर आये। वे इतना अधिक परेशान थे कि उन्होने मौसी गानीमेड को उसकी इस वेहूदा हरकत के लिये डाटा-डपटा भी नही। मौसी गानीमेड के तो डाट-डपट के विना ही होश-हवास उड़ गये।

"मौसी गानीमेड, मैं जा रहा हूं," डाकटर ने कहा, "लगता है कि मुझे जाना ही होगा। बग्घी ले आइये।"

वह चुप हो गये और फिर हथेली से माथा सहलाते हुए वोले—

"मैं तीन मोटा के महल मे जा रहा हू। वहुत मुमकिन है कि मैं वहा से लौटकर न आऊ।"

मौसी गानीमेड को तो जैसे धक्का लगा, वह एकदम पीछे को हट गयी –

"तीन मोटो के महल म ?"

"हा, मौसी गानीमेड। मामला वहुत टेढा है। मेरे पास उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया लायी गयी है। वह दुनिया म सवसे अच्छी गुडिया है। उसका स्प्रिग टूट गया है। तीन मोटो की राज्यीय परिषद् न मुझे कल सुवह तक इस गुडिया को ठीक ठाक करने का हुक्म दिया है। मुझे कठोर दण्ड दिया जायेगा "



मौसी गानीमेड तो रुआसी हो गयी।

"मैं इस वेचारी गुडिया को ठीक नही कर पा रहा हू। मैंने इसकी छाती म छिपे हुए स्प्रिग को खोज निकाला है, उसके सभी राज समझ गया हू और इसे ठीक भी कर सकता हू। मगर वह तो छोटी-सी चीज है! वडी मामूली-सी चीज के कारण मैं इसे ठीक नही कर सकता। इस रहस्यपूर्ण स्प्रिग मे एक दातेदार चक्र है जो टूटा हुआ है वह विल्कुल वेकार हो गया है! नया बनाने की जरूरत है . मेरे पास आवश्यक धातु भी है, चादी जैसी . मगर काम शुरू करने से पहले यह जरूरी है कि मैं इस धातु को कम से कम दो दिन तक तूतिये मे भिगोये रखू। समझती है न, दो दिन तक मगर यह गुडिया तो कल सुवह तक तैयार हो जानी चाहिये।"

"क्या कोई और चक्र नही लगा सकते?" मौसी गानीमेड ने झिझकते हुए पूछा।

डाक्टर ने निराशा से हाथ झटकते हुए कहा –

' मैं हर तरह की कोशिश कर चुका हू, मगर वेसूद।"

पाच मिनट वाद एक वन्द वग्घी डाक्टर गास्पर के दरवाजे के सामने आकर खडी हो गयी। डाक्टर ने तीन मोटो के महल मे जाने का इरादा बना लिया।

"मैं उनसे कह दूंगा कि कल सुवह तक गुड़िया तैयार नहीं हो सकती। फिर वे जैसा भी चाहें, मेरे साथ सुलूक कर सकते है..."

मौसी गानीमेड अपने पेशवन्द का छोर चवाने और सिर हिलाने लगी। वह तव तक सिर हिलाती रही जब तक कि उसे उसके अलग होकर गिर जाने की चिन्ता न हुई।

डाक्टर गास्पर ने गुड़िया को अपने पास विठा लिया और वग्घी रवाना हो गयी।

सातवां अध्याय

अजीब गुड़िया की रात

हवा डाक्टर गास्पर के दोनों ओर सीटिया वजा रही थी। सान रखनेवाले द्वारा छुरी तेज़ करते समय जो आवाज़ पैदा होती है, हवा की शूं-शां उस से भी ज्यादा नागवार लग रही थी।

डाक्टर ने कालर से कान ढक लिये और हवा की ओर पीठ कर ली।

तब हवा ने सितारों से खिलवाड़ शुरू किया। वह कभी उन्हें मानो फूंक मारकर वुझा देती, कभी उन्हें झूला झुलाती और कभी काली तिकोनी छतों के पीछे छिपा देती। जव यह खेल खेलकर उसका मन ऊव गया तो वह वादलो से उलझने लगी। मगर वादल पुरानी मीनारों की भाति इधर-उधर विखर जाते। तव हवा गुस्से से एकदम सर्द हो गयी।

डाक्टर को लवादा ओढ़ लेना पड़ा। आधा लवादा उन्होने गुड़िया को ओढ़ा दिया।

"ज़रा तेज़ी से हाकते चलो! भई कोचवान, ज़रा तेज़ी से!"

न जाने क्यों डाक्टर को डर महसूस होने लगा और वे कोचवान से घोड़े को जल्दी-जल्दी हाकने का अनुरोध करने लगे।

सड़कों पर अन्धेरा था, वे वीरान-सुनसान थी और वातावरण दिल में दहशत पैदा करता था। केवल कुछ ही खिड़कियो मे से लाल-लाल सी रोशनी छन रही थी, बाक़ी वन्द थीं। लोगों को भयानक घटनायें घटने की आशंका थी।

इस शाम को वहुत-सी वातें ग़ैरमामूली-सी लग रही थी, वे मन में तरह-तरह की शंकायें पैदा कर रही थीं। डाक्टर को ऐसा भी लगा कि अन्धेरे में इस अजीव-सी गुड़िया की आंखें कही दो पारदर्शी पत्थरों की तरह चमक न उठें। उन्होंने गुड़िया की ओर से नज़र वचाने की कोशिश की।

"वकवास है!" उन्होंने अपने को तसल्ली दी। "यह तो महज़ मेरे दिल की कमज़ोरी है। यह हर शाम जैसी शाम है, केवल राहगीर कम हैं। सिर्फ़ हवा ही उनकी

परछाइयो से ऐसा खिलवाड़ कर रही है कि हर राहगीर रहस्यमय लबादे मे लिपटा-लिपटाया किराये का हत्यारा प्रतीत होता है... और चौराहो मे जल रहे लैम्पो की रोशनी भी बडी अजीब तरह की नीली-नीली है. काश कि हम जल्दी से तीन मोटो के महल मे पहुच जायें!"

डर से निजात पाने की एक बहुत अच्छी दवाई है—सो जाना। कम्बल से मुह-सिर ढक लेना तो विशेषत बहुत लाभदायक रहता है। डाक्टर ने भी यही दवाई आज़माने का निश्चय किया। कम्बल की जगह उन्होने अपना टोप नीचे की ओर खीचकर आखें ढक ली। और ज़ाहिर है कि जैसे होना चाहिए था, उन्होने एक सौ तक गिनना शुरू किया। मगर इस से कोई फायदा न हुआ। तब उन्होने ज्यादा कारगर तरीका आज़माया। उन्होने मन ही मन दोहराना शुरू किया—

"एक हाथी और एक हाथी—ये हुए दो हाथी। दो हाथी और एक हाथी—ये हुए तीन हाथी। तीन हाथी और एक हाथी—ये हुए चार हाथी..."

इस तरह गिनते-गिनते उन्होने हाथियो के झुण्ड तक गिनती कर डाली। एक सौ तेईसवा काल्पनिक हाथी तो सचमुच का हाथी बन गया। चूकि डाक्टर यह न समझ पाये थे कि वह हाथी था या गुलाबी पहलवान लापीतूप, इसलिए जाहिर है कि वे सो गये थे और सपने देखने लगे थे।

जागृत अवस्था की तुलना मे सोते हुए समय कही अधिक तेज़ी से गुज़रता है। पर खैर, सपने मे डाक्टर न केवल तीन मोटो के महल मे जा पहुचे, बल्कि उन्होने यह भी देखा कि उनके खिलाफ मुकदमे की कार्रवाई की जा रही है। हर मोटा उनके सामने हाथ मे गुडिया लिए ऐसे ही खडा था जैसे जिप्सी नीले लहगेवाली बन्दरिया को उठाये रहता है।

वे किसी तरह का हीला-हवाला सुनने को तैयार न थे।

"तुमने हमारा फरमान पूरा नही किया," वे कह रहे थे, "तुम्हे इस के लिए कडी सज़ा दी जायेगी। तुम्हे गुडिया हाथ मे लिए हुए सितारे के चौक मे कसे हुए रस्से पर चलना होगा। मगर पहले तो तुम अपना चश्मा उतार लो..."

डाक्टर ने क्षमा कर देने की प्रार्थना की। उन्हे सबसे ज्यादा फिक्र तो गुडिया की थी उन्होने कहा—

"मै तो गिरने का आदी हो चुका हू ... अगर मै रस्से से फिसलकर नीचे तालाब मे जा भी गिरा, तो कोई खास बात नही। मुझे इसका तजरबा है—मै शहर के फाटक के करीब बुर्ज के साथ नीचे गिर चुका हू.. मगर गुडिया, बेचारी गुडिया का तो ख्याल कीजिये! वह तो चूर-चूर हो जायेगी... कृपया इस पर रहम कीजिये ... देखिये, मुझे

यकीन है कि यह गुड़िया नही है, जीती-जागती लड़की है, बहुत ही प्यारा-सा नाम है इसका, जो मैं भूल गया हू, जो मुझे याद नहीं ग्रा रहा..."

"नही!" तीन मोटे चिल्लाये। "नही, तुम्हें हरगिज माफ़ नही किया जायेगा! तीन मोटों का यही हुक्म है!" वे इतने ज़ोर से चिल्लाये कि डाक्टर की ग्राख खुल गयी।

"तीन मोटो का यही हुक्म है!" किसी ने डाक्टर के कानों के पास ही चीख़कर कहा।

डाक्टर ग्रब सो नही रहे थे। वास्तव मे ही कोई ऐसे चिल्ला रहा था। डाक्टर ने ग्रपनी ग्राखो से, शायद यह कहना ज्यादा सही होगा, ग्रपने चश्मे से टोपी हटाई ग्रौर इधर-उधर नज़र दौडाई। जितनी देर वे सोये रहे थे, इसी बीच रात की चादर ग्रौर ग्रधिक काली हो गयी थी।

बग्घी खडी थी। काली-काली ग्राकृतिया उसे घेरे हुए थी। इन्ही के शोर ने डाक्टर का स्वप्न भंग कर दिया था। वे लालटेनें हिला रहे थे। इसी से हिलती-डुलती परछाइयां नज़र ग्रा रही थीं।

"यह क्या मामला है?" डाक्टर ने पूछा। "हम कहां हैं? ये लोग कौन हैं?"

एक ग्राकृति निकट ग्रायी ग्रौर उसने डाक्टर के सिर तक लालटेन ऊंची करके डाक्टर पर प्रकाश डाला। लालटेन हिल-डुल रही थी। लालटेन वाला हाथ चौड़े कफ़वाले चमड़े के खुरदरे दस्ताने से ढका हुग्रा था।

डाक्टर समझ गया—सैनिक है।

"तीन मोटों का यही हुक्म है," उस ग्राकृति ने दोहराया।

पीले प्रकाश मे यह ग्राकृति टुकड़े-टुकड़े सी हो गयी। उसका मोमजामे का चमकता हुग्रा टोप रात के समय लोहे का प्रतीत हो रहा था।

"किसी को भी महल के करीब एक किलोमीटर तक निकट जाने की इजाज़त नही है। यह हुक्म ग्राज जारी किया गया है। शहर में गड़बड़ है। ग्रागे जाना मना है!"

"पर मेरा तो महल मे जाना बिल्कुल लाजिमी है।"

डाक्टर झल्लाये हुए थे।

सैनिक ने बहुत कडाई से कहा—

"मैं सन्तरियों का कप्तान त्सेरेप हू। मैं ग्रापको एक कदम भी ग्रागे नही जाने दूगा! बग्घी लौटाग्रो!" उसने लालटेन तानते हुए चीख़कर कोचवान से कहा।

डाक्टर का ग्रब तो दिल ही बैठ गया। मगर फिर भी उन्हें यकीन था कि सैनिकों को जब यह पता चलेगा कि मैं कौन हूं ग्रौर किस लिये महल मे जाना चाहता हूं, तो वे फ़ौरन ग्रागे जाने की ग्रनुमति दे देंगे।

"मैं डाक्टर गास्पर ग्रार्नेरी हूं," उन्होने कहा।

जवाब मे ज़ोर का ठहाका गूज उठा। सभी ओर लालटेनें हिलन-डुलने लगी।

"देखिये हज़रत, ऐसे खतरनाक समय मे और इतनी देर से रात को हमे हसी-मज़ाक पसन्द नही," सन्तरियों के कप्तान ने कहा।

"मै आप से कह रहा हू कि मैं डाक्टर गास्पर आर्नेरी हू।"

कप्तान भडक उठा। उसने हर शब्द धीरे-धीरे और तलवार टनकारते हुए कहा—

"महल मे पहुच जाने के लिए आप झूठे नाम का सहारा ले रहे हैं। डाक्टर गास्पर आर्नेरी राता को सडका पर नही घूमते। आज की रात तो खास तौर पर ऐसा नही हो सकता। इस समय वे एक बहुत ही जरूरी काम मे लगे हुए हैं—वे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया को ठीक-ठाक कर रहे हैं। वे तो कल सुबह ही महल मे आयेगे। और आपको मैं धोखेबाजी के लिए गिरफ्तार करता हू!"

"क्या?!" अब डाक्टर के भडकने की बारी थी।

"क्या?! वह मुझ पर यकीन नही करना चाहता? खैर, मैं अभी उसे गुडिया दिखाता हू!" डाक्टर ने गुडिया की ओर हाथ बढाया —मगर

गुडिया अपनी जगह पर नही थी। डाक्टर जब सपने देख रहे थे, उसी बीच गुडिया बग्घी से नीचे जा गिरी थी।

डाक्टर को ठडे पसीने आ गये।

"शायद मैं सपना देख रहा हू?" डाक्टर के मन मे यह खयाल आया।

ओह नही! यह तो हकीकत थी।

"तो अब कहिये!" दात पीसते और लालटेन को उगलिया के बीच झुलाते हुए कप्तान बडबडाया। "जहनुम मे जाइये! आप जैसे सिरफिरे बुड्ढे से माथापच्ची न करनी पडे, इसी लिए छोड देता हू . जाइये यहा से!"

अब तो कोई चारा ही नही था। कोचवान ने बग्घी मोडी। पहियो ने चर्र-मर्र की, घोडा हिनहिनाया, लोहे की लालटेनें आखिरी बार लहरायी और बेचारे डाक्टर वापिस हो लिए।

वे अपने का बस मे न रख पाये और रो पडे। ये लोग उनके साथ बहुत बुरी तरह पश आये थे, उन्हे सिरफिरा बुड्ढा कहा था। इतना ही नही, उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया भी तो खो गयी थी! "इसका मतलब यह है कि अब मेरा सिर गया।"

वे आसू बहाते रहे। उनके चश्मे के शीशे धुधला गये थे और अब उन्हे कुछ भी नजर नही आता था। उनका मन हुआ कि तकिये मे सिर छिपाकर खूब रोयें। मगर कोचवान तो घोडा कुदाता जा रहा था। दस मिनट तक डाक्टर का ऐसा ही बुरा हाल रहा। मगर जल्द ही उनकी सामान्य समझ-बूझ लौट आई।

"मैं अभी भी गुड़िया को खोज सकता हूं," डाक्टर ने सोचा। "आज रात सड़क पर बहुत कम लोग आ-जा रहे हैं। ये सड़कें तो वैसे ही हमेशा सुनसान रहती हैं। मुमकिन है इस बीच वहा से कोई भी व्यक्ति न गुजरा हो..."

उन्होने कोचवान को आदेश दिया कि घोड़े की चाल धीमी कर दे और सड़क पर नज़र गड़ाये रहे।

"क्यों, कुछ नजर आया? कुछ दिखाई दिया?" वे हर क़दम पर पूछते थे।

"नही, कुछ भी नजर नही आया, कुछ भी नही," कोचवान जवाब देता।

कोचवान ने सड़क पर पड़ी ऐसी बेकार चीजों के नाम लिए जिनमें किसी की दिलचस्पी नही हो सकती थी। उसने कहा –

"पीपा पड़ा है।"

"नही... यह नही..."

"शीशे का अच्छा और बड़ा-सा टुकड़ा पड़ा है।"

"नही।"

"टूटा हुआ जूता पड़ा है।"

"नही," डाक्टर की आवाज़ अधिकाधिक धीमी होती जाती थी।

कोचवान तो सचमुच ही अपनी पूरी कोशिश कर रहा था। वह आंखें फाड़-फाड़कर देख रहा था। अन्धेरे मे भी वह इतनी अच्छी तरह देख पाता था कि मानो बग्घी का कोचवान न होकर महासागरीय जहाज़ का कप्तान हो।

"आपको कहीं कोई गुड़िया... गुड़िया नज़र नहीं आ रही है? गुलाबी फ़्रॉक में?"

"गुड़िया तो नज़र नही आ रही," कोचवान ने भारी और दुःखद आवाज़ मे उत्तर दिया।

"इसका मतलब है कि वह किसी के हाथ लग गयी... अब और तलाश करने मे कोई तुक नही। इसी जगह मेरी आंख लगी थी... उस वक़्त तक तो वह मेरे पास बैठी थी... आह!" और डाक्टर का मन फिर से रोने को हुआ।

कोचवान ने सहानुभूति दिखाते हुए कई बार नाक सुड़की।

"तो अब हमें क्या करना है?"

"ओह, नही जानता... मै कुछ नही जानता..." डाक्टर हाथों में सिर थामे बैठे थे और दुख तथा बग्घी के धचकों से उनका सिर हिल-डुल रहा था। "मैं समझता हूं, सब समझता हूं," उन्होने कहा। "यह ज़ाहिर है... बिल्कुल ज़ाहिर है... पहले से यह बात मेरे दिमाग में क्यों नही आई! वह भाग गई, भाग गई वह गुड़िया... मेरी आंख लग गई और वह खिसक गई। मामला बिल्कुल साफ़ है। वह गुड़िया नही, जीती-जागती

लडकी थी। मुझे तो देखते ही यह बात महसूस हुई थी। मगर इससे तीन मोटो की नजर मे तो मेरा अपराध कुछ कम सगीन नही हो जाता "

अब अचानक डाक्टर को ज़ोर की भूख महसूस हुई। वे कुछ देर चुप रहे और फिर उन्होंन बहुत गम्भीरतापूर्वक कहा –

"मैने आज दिन को खाना नही खाया! मुझे नजदीक के किसी भोजनालय मे ले चलिए।"

भूख ने डाक्टर को शान्त कर दिया।

वे देर तक अन्धेरी गलियो मे चक्कर काटते रहे। सभी भोजनालयो के दरवाजे बन्द पडे थे। उस रात, उस खतरनाक रात को सभी मोटे पेटवाले परेशान थे।

उन्होंने नये ताले लगा दिये और दरवाज़ो के पीछे छोटी-बडी अलमारिया रख दी थी। उन्होंने खिडकियो मे परो वाली गद्दिया और धारीदार तकिये ठूस दिये थे। उनकी आखो से नीद गायब हो गयी थी। जो मोटे और धनी थे, उन्हे उस रात हमला होने की आशका थी। उन्होने अपने गुस्सैल कुत्तो को सुबह से ही खाने-पीने को कुछ नही दिया था ताकि वे ज्यादा होशियार रहे, भूख से तिलमिलाते हुए आग-बबूला हो जायें। मोटा और धनियो के लिए भयानक रात थी। उन्हे यकीन था कि लोग किसी भी क्षण फिर विद्रोह कर सकते हैं। सारे शहर मे यह खबर भी फैल चुकी थी कि कुछ सैनिको ने तीन मोटो के साथ गद्दारी करते हुए उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया पर तलवारा से वार किये और महल छोडकर चले गये। इस खबर से धनियो और पेटुआ के पैरा तले की धरती ही खिसक गई थी।

"बेडा गर्क!" वे परेशान होते हुए कह रहे थे। "अब तो हम सैनिको पर भी भरोसा नही कर सकते। कल उन्होने जनता की बगावत कुचली और आज अपनी तोपो के मुह हमारे घरो की ओर मोड देंगे।"

डाक्टर गास्पर को इस बात की उम्मीद न रही कि वे अपनी भूख को शान्त कर सकेगे, थोडा सुस्ता पायेंगे। आसपास की किसी चीज़ मे कोई हरकत न थी, जिन्दगी के कही कोई आसार न थे।

"तो क्या अब घर ही लौटना होगा?" डाक्टर ने दुखी होते हुए सोचा। "मगर वह तो बहुत दूर है मेरी तो भूख से जान निकल जायेगी '

अचानक उन्हे किसी भुनी हुई चीज़ की गध आई। हा, गध बहुत ही प्यारी थी, शायद प्याज़ के साथ भूने गये भेड के मास की। कोचवान को इसी समय थोडी-सी दूरी पर रोशनी नज़र आई। प्रकाश की पतली सी रेखा हवा म हिल-डुल रही थी। यह रोशनी कैसी है?

"काश, यह भोजनालय हो!" डाक्टर ने ख़ुश होते हुए कहा।

वे निकट पहुंचे। मगर यह भोजनालय नही था।

कुछ छोटे-छोटे घरो से जरा परे एक ख़ाली मैदान पड़ा था। वहा पहियों वाला एक घर खड़ा था। उसी के कुछ-कुछ खुले दरवाज़े में से प्रकाश की रेखा छन रही थी।

कोचवान अपनी सीट से नीचे उतरा और जाच-पड़ताल करने के लिए चल दिया। डाक्टर सभी दुर्घटनाओ को भूल-भाल कर भुने हुए मास की गन्ध मे खो गये। वे गुनगुनाने लगे, चहक उठे और उन्होने खुशी से आंखें मूद ली।

"ओह यहां कही कुत्ते न हो!" कोचवान अन्धेरे में से चिल्लाया। "लगता है कि यहा कुछ पैड़ियां-सी हैं..."

मगर अन्त अच्छा ही रहा। कोचवान पैड़ियां चढ़कर दरवाज़े के पास पहुचा और उसने दरवाज़े पर दस्तक दी।

"कौन है?" प्रकाश की पतली-सी रेखा चौड़ी और चमकती हुई चौकोर में बदल गयी। दरवाज़ा खुला। दहलीज़ पर एक आदमी नजर आया। इर्द-गिर्द के अन्धेरे और इस व्यक्ति के पीछे चमकते हुए प्रखर प्रकाश के कारण वह काले कागज़ का पुतला-सा प्रतीत हुआ।

कोचवान ने डाक्टर की ओर से जवाब दिया—

"डाक्टर गास्पर आर्नेरी। आप कौन हैं? यह पहियो वाला घर किसका है?"

"यह चाचा ब्रिज़ाक का मेलों-ठेलो में घूमनेवाला पहियेदार घर है," दहलीज़ पर नजर आ रही छाया ने उत्तर दिया। यह छाया अब खिल उठी थी, उत्तेजित सी प्रतीत हुई और हाथ हिलाती-डुलाती बोली—"आइये, पधारिये सज्जनो! चाचा ब्रिज़ाक की गाड़ी में डाक्टर गास्पर आये हैं यह हमारा धन्य-भाग्य है।"

ख़ूब ही बढ़िया अन्त रहा! बहुत काफ़ी भटक लिये थे रात के अंधेरे मे! चाचा ब्रिज़ाक की गाड़ी जिन्दाबाद!

यहां डाक्टर, कोचवान और घोड़े को पनाह मिली, खाना और आराम मिला। पहियों वाला घर मेहमाननेवाज था। इस मे चाचा ब्रिज़ाक का घूमने-फिरने वाला कलाकार-दल रहता था।

कौन भला चाचा ब्रिज़ाक के नाम से परिचित नहीं था! कौन नहीं जानता था मेलों-ठेलों मे घूमनेवाली इस गाड़ी को! पर्वों-त्योहारों के अवसर पर साल भर इस पहिया-गाड़ी के कलाकार बाज़ार के चौकों मे अपने खेल-तमाशे पेश करते थे। कैसे कमाल के थे इस दल के कलाकार! क्या बढ़िया होते थे इनके तमाशे! सबसे बड़ी बात तो यह थी कि इसी दल में होता था रस्से पर चलनेवाला नट तिबुल।

यह तो हम जानते ही हैं कि तिबुल देश के सबसे अच्छे नट के रूप में प्रसिद्ध था। उसकी फुर्ती तो हम ख़ुद भी सितारे के चौक मे देख चुके हैं। हमें याद है कि सैनिकों की

गोलियों की बौछार में वह किस तरह ऊपर तार पर चला था।

तिबुल जब बाजार के चौकों में अपने करतब दिखाता था तो छोटे-बड़े सभी लोगों के तालियां बजा-बजाकर हाथ दर्द करने लग जाते थे। दुकानदार, बूढ़ी महिलाएं, स्कूली बालक, नौकर और बाकी सभी लोग इसी तरह जोर-जोर से तालियां बजाकर उसे दाद देते थे... मगर अब दुकानदारों और बाल-बच्चों का पहलेवाला चाव ठंडा पड़ गया था—"हम उसके लिए तालियां बजाते थे और अब वह हमारे ही विरुद्ध मोर्चा ले रहा है!"



नट तिबुल ने चाचा ब्रिजाक की पहिया-गाड़ी से नाता तोड़ लिया था और इस तरह अब वह गाड़ी सूनी-सूनी हो गई थी।

डाक्टर गास्पर ने इसकी कोई चर्चा नहीं की कि तिबुल के साथ क्या बीती थी। उन्होंने उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया का भी कोई जिक्र नहीं किया।

डाक्टर गास्पर ने मेला-ठेला में घूमनेवाली इस गाड़ी, इस पहियेदार घर के अन्दर क्या देखा?

डाक्टर को बड़े-से तुर्की ढोल पर बिठाया गया जो जाल के समान सुनहरी झालरवाले तिकोने लाल कपड़े से सुसज्जित था।

यह पहियेदार घर गाड़ी के डिब्बे की तरह बना हुआ था। कन्वास के पर्दे लगाकर इसे कई कक्षों में विभाजित कर दिया गया था।

रात काफ़ी बीत चुकी थी। इस पहियेदार घर के निवासी सो रहे थे। दरवाज़ा खोलने और परछाईं-सा प्रतीत होनेवाला व्यक्ति बूढ़ा मसख़रा अगस्त था। इस रात वह ड्यूटी पर था। डाक्टर जब इस पहियेदार घर के निकट पहुचे थे, उस समय वह अपने लिए रात का खाना पका रहा था। वास्तव में ही वह प्याज के साथ भेड़ का मांस तल रहा था।

डाक्टर ढोल पर बैठे हुए इर्द-गिर्द नज़र दौड़ा रहे थे। लकड़ी के बक्से पर डिबरी

जल रही थी। दीवारों पर बारीक सफ़ेद और गुलाबी काग़ज़ों में लिपटे हुए चक्र, धातु की चमकती हुई मूठों वाले लम्बे धारीदार चाबुक टंगे हुए थे, कपड़ों के रंग-बिरंगे टुकड़ों, सुनहरे छल्लो, बेल-बूटों और तारों-सितारों से सुसज्जित चमकती हुई पोशाकें लटक रही थी। वहां तरह-तरह के नकाब भी नजर आ रहे थे—कुछ सीगों वाले, कुछ अजीब लम्बी नाकों वाले और कुछ के मुंह कानों तक फैले हुए। एक और नक़ाब था बड़े-बड़े कानों वाला। सबसे अजीब बात तो यह थी कि उसके कान थे तो इन्सानों जैसे, मगर बहुत ही बड़े-बड़े।

कोने में रखे पिंजरे में एक अजीबोग़रीब जानवर बैठा था।

एक दीवार के पास लकड़ी की एक लम्बी मेज़ रखी थी। उसके ऊपर दस दर्पण लटके हुए थे। हर दर्पण के पास एक मोमबत्ती खड़ी थी, अपने ही मोम से जमी हुई। ये मोमबत्तियां बुझी हुई थीं।

मेज़ पर तरह-तरह के डिब्बे, तूलिकायें, रंग, पाउडर-पफ़, गुलाबी पाउडर और बनावटी बाल पड़े थे; जहां-तहां रंग-बिरंगे धब्बे सूख रहे थे।

"आज हमने सैनिकों से बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई," मसख़रे ने कहा। "बात यह है कि नट तिबुल हमारे ही दल का कलाकार था। सैनिक हम को पकड़ पाना चाहते थे। वे समझते हैं कि हमने उसे कही छिपा दिया है," बूढ़े मसख़रे ने बहुत उदास होते हुए अपनी बात जारी रखी। "मगर हम तो ख़ुद नहीं जानते कि नट तिबुल कहा है। शायद उसकी हत्या कर दी गयी या उसे लोहे के पिंजरे मे बन्द चर दिया गया।"

मसख़रे ने गहरी सांस ली और पके बालों वाला अपना सिर हिलाया। पिंजरे में बैठा जानवर बिल्ली जैसी आखों से डाक्टर की ओर देख रहा था।

"बड़े अफ़सोस की बात है कि आप हमारे यहां इतनी देर से आये," मसख़रे ने कहा। "हम आपको बहुत प्यार करते हैं। आप हमें कुछ तसल्ली, कुछ दिलासा देते। हम जानते है कि आप ग़रीबों के, जनसाधारण के दोस्त हैं। इस सिलसिले में मैं आपको एक घटना याद दिलाना चाहता हूं। पिछले वर्ष के बसन्त में हम कलेजी बाज़ार के चौक में अपना तमाशा पेश कर रहे थे। मेरी बेटी ने वहां एक गीत गाया था..."

"हां, हा..." डाक्टर को याद आया। वे अचानक उत्तेजित हो उठे।

"याद है न आपको? उस समय आप भी वही थे। मेरी बेटी ने उस कचौड़ी के बारे में गाना गाया था जो किसी मोटे कुलीन के पेट में जाने के बजाय चूल्हे में ही जल जाने को अपना सौभाग्य मानती थी..."

"हां, हा... मुझे याद है... तो आगे क्या हुआ था?"

"कोई कुलीन महिला, एक बुढ़िया यह गाना सुनकर नाराज़ हो गयी थी। उसने लम्बी नाकों वाले अपने नौकरों को हुक्म दिया था कि वे लड़की की पिटाई करें।"

"हा, हा, मुझे याद है। मैंने उसे ऐसा नही करने दिया था। मैंने नौकरो को भगा दिया था। उस महिला ने जब मुझे पहचाना था तो उस पर घडो पानी पड गया था। ऐसा ही हुआ था न?"

"हा। बाद मे जब आप चले गये तो मेरी बेटी ने कहा कि अगर उस कुलीन बुढ़िया के नौकरो ने मेरी पिटाई की होती, तो मैं शर्म के मारे किसी तरह भी जिन्दा न रह पाती... आपने उसकी जान बचाई थी। वह आपका यह एहसान कभी नहीं भूल सकेगी!"

"अब आपकी बेटी कहा है?" डाक्टर ने पूछा। वे बहुत ही उत्तेजित हो रहे थे।

बूढे मसख़रे ने कन्वास के पर्दे के निकट जाकर आवाज़ दी।

कुछ अजीब-सा नाम पुकारा उसने। दो ध्वनियों का कुछ ऐसे उच्चारण किया मानो लकड़ी की गोल डिबिया का बड़ी मुश्किल से खुलनेवाला ढक्कन खोला गया हो – "सुग्रोक!"

कुछ क्षण बीते। कन्वास का पर्दा हटा और उसके पीछे से लडकी का अस्तव्यस्त बालो वाला कुछ-कुछ झुका हुआ सिर नज़र आया। वह अपनी भूरी आखो को कुछ-कुछ झुकाये हुए बहुत ध्यान से और कुछ-कुछ शरारती ढग से डाक्टर की ओर देख रही थी।

डाक्टर ने उसकी ओर देखा तो सकते मे आ गये – उनके सामने उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया खडी थी!



तीसरा भाग





सूओक

आठवां अध्याय

छोटी-सी अभिनेत्री की कठिन भूमिका

हां यह वही थी!

मगर शैतान जाने, वह यहा आ कहा से गयी थी? करिश्मा? इसका क्या सवाल पैदा होता है! डाक्टर गास्पर अच्छी तरह से जानते थे कि करिश्मे नही होते। उन्होने समझ लिया कि उनके साथ धोखा हुआ है, छल-कपट हुआ है। गुडिया वास्तव मे जीती-जागती लडकी थी और जब वे असावधानी के कारण बग्घी मे सो गये थे, तो वह शरारती लडकी की तरह बाहर कूद गयी थी।

"ऐसे मुस्कराने से कुछ हासिल नही होगा! आपकी मासूम मुस्कान से आपका जुर्म कुछ कम सगीन नही हो जायेगा," डाक्टर ने कडाई से कहा। "आपको तो अपने किये की खुद ही सजा मिल गयी है। सयोगवश मैंने आपको वहा आ ढूढा है, जहा ढूढ पाना शायद असम्भव था।"

गुडिया आखें फाड फाडकर उनकी ओर देख रही थी। फिर वह छोटे-से खरगोश की भाति आखें झपकाने लगी। उसने मानो कुछ न समझते हुए मसखरे अगस्त की ओर देखा। उसने गहरी सास ली।

"कौन हैं आप? साफ-साफ बताइये!"

डाक्टर ने अपनी आवाज को यथाशक्ति कठोर बनाया। मगर गुडिया इतनी प्यारी थी कि उससे नाराज होना बहुत मुश्किल था।

"तो आप मुझे भूल गये," उसने कहा। "मै सूओक हू।"

"सू-ओक..." डाक्टर ने दोहराया। "मगर आप तो उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया है!"

"कैसी गुड़िया! मै तो साधारण लडकी हू..."

"क्या? नही, नही, आप बन रही है!"

गुड़िया पर्दे से बाहर आ गई। लैम्प की तेज़ रोशनी अब उस पर पड़ रही थी। वह मुस्करा रही थी, उसका अस्तव्यस्त बालों वाला सिर एक ओर को झुका हुआ था। उसके बाल किसी भूरी चिड़िया के बच्चे के बालों के समान थे।

पिंजरे में बैठा हुआ झबरीला जानवर गुड़िया की ओर बहुत ध्यान से देख रहा था।

डाक्टर गास्पर कुछ भी नही समझ पा रहे थे। पाठकगण, थोड़ा सब्र कीजिये, सारा राज़ आपकी समझ में आ जायेगा। मगर इस समय हम एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, जो डाक्टर गास्पर आर्नेरी की नज़र से चूक गई थी। बात यह है कि आदमी जब उत्तेजित होता है तो ऐसी बातें भी नज़र से चूक जाती हैं जिनकी ओर सामान्यतः बरबस ध्यान जाता है।

वह बात यह है-पहियेदार घर में गुड़िया बिल्कुल दूसरी ही नजर आ रही थी। उसकी भूरी आखों में ख़ुशी की चमक थी। वह गम्भीर और सतर्क प्रतीत हो रही थी, मगर उसके चेहरे पर दुख-उदासी का नाम-निशान भी नही था। इसके विपरीत यह कहा जा सकता था कि वह ऐसी शरारती लड़की थी जो शर्मीली-लजीली होने का ढोंग कर रही थी।

बात यहीं ख़त्म नही हो जाती। उसका वह शानदार रेशमी गुलाबी फ़्रॉक क्या हुआ? सुनहरे गुलाबो वाले सैंडल कहां गये? उसकी पोशाक की चमक-दमक, सज-धज, तड़क-भड़क क्या हुई? उन्ही चीज़ों की बदौलत कोई भी लड़की यदि राजकुमारी नही तो नये साल के फ़र-वृक्ष पर सजाने के बढ़िया खिलौने जैसी तो अवश्य बन जाती है। अब गुड़िया बहुत ही साधारण पोशाक पहने थी। जहाज़ियों के नीले कॉलर वाला ब्लाउज़, पुराने-से सैंडल जो कभी सफ़ेद रहे होंगे, मगर इस समय मटमैले-से दिखाई दे रहे थे। वह जुराब भी नही पहने थी। मगर इस से आप यह न समझ बैठियेगा कि इस साधारण पोशाक से गुड़िया बदसूरत नज़र आने लगी थी। इसके विपरीत, यह पोशाक उसे ख़ूब जंच रही थी। कभी-कभी कोई लड़की इतने बुरे ढंग के कपड़े-लत्ते पहने होती है कि उसकी ओर देखने तक को मन नही होता, मगर ज़रा ध्यान देने पर बिल्कुल दूसरा ही रूप सामने आता है। वह तो बहुत प्यारी, राजकुमारी से भी अधिक प्यारी होती है।

फिर, जैसा कि आपको याद होगा, सबसे बड़ी बात तो यह है कि उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया की छाती पर बहुत भयानक काले कटाव थे। मगर वे अब ग़ायब थे।

यह तो बड़ी ख़ुशमिज़ाज, बड़ी स्वस्थ गुड़िया थी!

मगर डाक्टर गास्पर का किसी भी बात की ओर ध्यान नही गया। बहुत मुमकिन है कि अगले कुछ क्षणों में डाक्टर यह सब कुछ भाप जाते, मगर तभी किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। अब मामला और भी उलझ गया। गाड़ी में एक नीग्रो ने प्रवेश किया।

गुडिया काप उठी। पिजरे मे बैठा हुआ जानवर अजीबोगरीब बिल्ली की तरह घुरघुराने लगा, यद्यपि वह बिल्ली नही था।

हम जानते है कि यह नीग्रो कौन था। डाक्टर गास्पर भी उसे जानते थे। उन्होने तो तिबुल को नीग्रो बनाया था। मगर और कोई इस राज को नही जानता था। यह परेशानी, यह उलझन कोई पाच मिनट तक बनी रही। नीग्रो की हरकत भी बहुत ही भयानक थी। उसने गुडिया को हाथो मे लेकर ऊपर उठा लिया और उसके गालो और नाक को चूमने लगा। गुडिया अपने गालो को बहुत जोर से दायें-बायें हिला रही थी ताकि नीग्रो उन्हे चूम न पाये। नीग्रो उन्हे चूमने की कोशिश करता हुआ ऐसे लग रहा था मानो धागे के साथ लटके सेब को चखना चाहता हो। बूढे अगस्त ने आखें मूद ली। डर के मारे उसके चेहरे का रग जर्द हो गया। वह उस चीनी शहशाह की भाति सिर हिला डुला रहा था जो यह तय कर रहा हो कि अपराधी का सिर कलम करवाये या उसे शक्कर के बिना जिन्दा चूहा खाने की सजा दे?

गुडिया का सैंडल पैर से उतरकर लैम्प से जा टकराया। लैम्प उलटकर बुझ गया। एकाएक अन्धेरा हो गया। भय और भी बढ गया। तभी सब ने यह देखा कि पौ फटने लगी थी। दरवाजे की दरारो मे से प्रकाश की रेखा छनने लगी थी।

"सुबह होने को है," डाक्टर गास्पर ने कहा। "मुझे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया लेकर तीन मोटो के महल म पहुचना है।"

नीग्रो ने दरवाजा खोल दिया। धुधला-सा उजाला भीतर फैल गया। मसखरा पहले की तरह आखे मूदे बैठा था। गुडिया पर्दे के पीछे जा छिपी थी। डाक्टर गास्पर ने तिबुल को झटपट सारा किस्सा कह सुनाया। उन्होने बताया कि उत्तराधिकारी की गुडिया कैसे खो गयी थी और कैसे खुशकिस्मती से इस पहियेदार घर मे मिल गयी थी।

गुडिया पर्दे के पीछे सब कुछ सुन रही थी, मगर उसकी समझ मे कुछ भी नही आ रहा था।

'डाक्टर इसे तिबुल के नाम से सम्बोधित कर रहे है!' गुडिया हैरान हो रही थी। 'यह भला तिबुल कैसे हो सकता है? यह तो भयानक नीग्रो है। तिबुल तो खूबसूरत, गोरा चिट्टा है, वह तो काला नही है "

तब उसने पर्दे के पीछे से बाहर झाका। नीग्रो ने अपने लाल पतलून की जेब से एक लबोतरी-सी बोतल निकाली, उसका कार्क खोला, उसमे से चिडिया की ची ची सी हुई। नीग्रो ने इस बोतल मे से निकलनेवाला तरल पदार्थ अपने तन पर मलना शुरू किया। कुछ क्षण बाद मानो करिश्मा हुआ। नीग्रो गोरा चिट्टा और सुन्दर हो गया, काला नही रहा। अब तो कोई सन्देह बाकी न रह गया—यह तिबुल ही था!

"हुर्रा!" गुड़िया चिल्लाई और पर्दे के पीछे से लपककर तिबुल की गर्दन से जा लिपटी।

मसख़रे ने तो अपनी आंखों से कुछ नही देखा था। इसलिए उसने यह समझ लिया कि बस अब तो कुछ बहुत ही भयानक बात हो गयी है। वह अपनी सीट से नीचे फ़र्श पर जा गिरा और निश्चल-सा पड़ रहा। तिबुल ने उसका पतलून पकड़कर उसे उठाया।

अब गुड़िया अपने आप ही तिबुल को चूमने लगी।

"यह तो कमाल ही हो गया!" उसने ख़ुशी से हांफते हुए कहा। "तुम ऐसे काले कैसे हो गये थे? मैं तो तुम्हें पहचान ही न पाई..."

"सूओक!" तिबुल ने कड़ाई से कहा।

वह फ़ौरन उसकी चौड़ी छाती से नीचे उतरकर टीन के बने फ़ौजी की भांति उसके सामने सावधान खड़ी हो गई।

"क्या बात है?" उसने स्कूली छात्रा की भांति पूछा।

तिबुल ने उसके अस्तव्यस्त बालों वाले सिर पर हाथ रखा। सूओक ने अपनी ख़ुशी से मचकती हुई भूरी आखों को ज़रा ऊपर उठाकर उसकी ओर देखा।

"डाक्टर गास्पर ने कुछ देर पहले जो कुछ कहा, वह तुम ने सुना था?"

"हां। उन्होने कहा था कि तीन मोटों ने उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया ठीक करने के लिए उनके पास भेजी थी। वह गुड़िया बग्घी में से उतर भागी। उनका कहना है कि वह गुड़िया मैं हूं।"

"यह तो वे गलती कर रहे हैं," तिबुल ने कहा, "मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं कि यह गुड़िया नही है। यह तो मेरी नन्ही-सी दोस्त है, छोटी-सी नर्तकी सूओक है, सर्कस के करतबों में मेरी विश्वसनीय साथी।"

"बिल्कुल सच!" गुड़िया ने ख़ुशी से तिबुल का समर्थन किया। "देखो न हम दोनों तो अनेक बार एकसाथ रस्से पर चले हैं।" तिबुल ने उसे अपनी विश्वसनीय साथी कहा था, वह इस बात से बहुत ख़ुश हुई थी।

"प्यारे तिबुल!" सूओक फुसफुसाई और उसने तिबुल के हाथ से अपना गाल रगड़ा।

"यह कैसे हो सकता है?" डाक्टर ने हैरान होते हुए कहा। "क्या यह जीती-जागती लड़की है? सूओक... यही बताते हैं न आप इसका नाम... हां! हां! आप ठीक कहते हैं! अब सारी बात मेरी समझ में आ गई है। मुझे याद आ गया है... इस लड़की को मैं एक बार पहले भी देख चुका हूं। हां... हां... मैंने इसे उस बुढ़िया के नौकरों से बचाया था जो डंडे से इसकी पिटाई करना चाहते थे!" अब डाक्टर ने अपने हाथ लहराये—



"हा-हा-हा! हा, अब समझ मे आया। इसीलिए मुझे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया इतनी जानी-पहचानी लगी थी। दोना हू-ब-हू एक जैसी है। यह एक अद्भुत घटना है।"

अब सारी बात साफ हो गई थी और इस से हर किसी को बहुत खुशी हुई।

उजाला बढता जा रहा था। निकट ही एक मुर्गे ने बाग दी।

डाक्टर फिर से उदास हो गये।

"हा, यह सब कुछ तो बहुत खूब है, मगर इसका मतलब है कि उत्तराधिकारी की गुडिया अब मेरे पास नही है। इसका मतलब यह है कि मैं सचमुच ही उसे खो बैठा हू "

"नही, इसका मतलब यह है कि आपको वह मिल गई है," लडकी को प्यार से अपने साथ सटाते हुए तिबुल ने कहा।

"क्या मतलब?"

"वही, जो मैंने कहा है. . सूओक, तुम तो समझती हो न मेरा मतलब?"

"लगता तो ऐसा ही है," सूओक ने धीरे से उत्तर दिया।

"तो क्या ख्याल है?" तिबुल ने पूछा।

"मैं तैयार हू," गुडिया ने कहा और मुस्करा दी।

डाक्टर के पल्ले कुछ नही पडा।

"इतवार के दिन जब हम लोगा की भीड के सामने अपने करतब दिखाते थे, तब भी तुम मेरी बात माना करती थी। ठीक है न? तुम धारीदार चबूतरे पर खडी गा। [illegible] मैं तुम से कहता था—'चलो!' तब तुम तार पर चढकर मेरी ओर आती थी। मैं भीड के ऊपर बहुत ऊचाई पर तार के मध्य मे खडा होता था। तब मैं अपना एक घुटना झुकाकर फिर से तुम्हे कहता था—'चलो!'—तब तुम मेरे घुटने पर पैर रख मेरे कधे पर चढ जाती थी. तब तुम्हे कभी डर महसूस हुआ था क्या?"

"नही। तुम मुझ से कहते थे—'चलो!'—इसका मतलब था कि मुझे शान्त-स्थिर रहना चाहिये, किसी चीज से नही डरना चाहिये।"

"हा, तो, अब मैं फिर तुम से कहता हू—'चलो!'—तुम गुडिया बनोगी।"

"ऐसा ही सही, मैं गुडिया बनूगी।"

"गुडिया?" डाक्टर ने पूछा। "क्या मतलब?"

पाठकगण, मैं आशा करता हू कि आप सब कुछ समझ गये है! आपको तो डाक्टर गास्पर के समान परेशानियो और हैरानियो से दो-चार नही होना पडा। इसलिए आप तो ऐसे उत्तेजित नही है और बात को अधिक आसानी से समझ सकते है।

जरा ख्याल कीजिये—डाक्टर पिछले दो दिनो से थोडी देर के लिए भी ढग से नही सो पाये थे। इसलिए उनकी काम करने की इस हिम्मत को देखकर तो केवल हैरानी ही होती है।

मुर्गे के दूसरी बांग देने के पहले ही सब कुछ तय हो गया था। तिबुल ने पूरी कार्य-योजना तैयार कर ली थी –

"सूग्रोक, तुम अभिनेत्री हो। उम्र की छोटी होते हुए भी तुम्हें अपनी कला में कमाल हासिल है। वसन्त में जब हमारे दल ने मूक-नाटक 'बुद्धू बादशाह' पेश किया था तो उसमें तुमने पत्तागोभी की सुनहरी जड़ का बहुत अच्छा अभिनय किया था। फिर बैले में तुमने उतारनी तस्वीर का अभिनय किया था और मिल-मालिक से केतली में ख़ूब ही बदली थी। नाचने में तुम सबसे बढ़-चढ़कर हो और गाने में भी। तुम दूर की कौड़ी भी ख़ूब लाती हो। सबसे बड़ी बात तो यह है कि तुम साहसी लड़की हो, बहुत समझदार भी हो।"

सूग्रोक के चेहरे पर ख़ुशी की लालिमा दौड़ गयी थी। इतनी अधिक प्रशंसा के कारण उसे तो लज्जा भी अनुभव हो रही थी।

"हां तो, तुम्हें उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया की भूमिका अदा करनी होगी।"

सूग्रोक ने तालियां बजायी और बारी-बारी से तिबुल, बूढ़े अगस्त और डाक्टर गास्पर को चूमा।

"जरा रुको," तिबुल ने अपनी बात जारी रखी। "मुझे अभी कुछ और भी कहना है। तुम्हे मालूम ही है कि हथियारसाज प्रोस्पेरो तीन मोटों के महल में लोहे के पिंजरे में बन्द है। तुम्हें उसे आजाद कराना होगा।"

"क्या पिंजरा खोलना होगा?"

"हां। मै वह राज़ जानता हूं जो प्रोस्पेरो को महल से निकल भागने में सहायता देगा।"

"राज़?"

"हां। वहा एक सुरंग है।"

तिबुल ने गुब्बारे बेचनेवाले का सारा क़िस्सा कह सुनाया।

"इस सुरंग का मुह किसी देग में है। यह देग महल के रसोईघर में होना चाहिए। तुम्हें इसे ढूढ़ना होगा।"

"ठीक है।"

अभी सूर्योदय नही हुआ था, मगर पक्षी चहकने लगे थे। गाड़ी के दरवाज़े में से बाहर हरी घास नजर आ रही थी। उजाला हो जाने पर पिंजरे में बन्द रहस्यपूर्ण जानवर रहस्यमय न रहा। वहा साधारण लोमड़ी नजर आने लगी थी।

"अब हमें वक़्त नही गवाना चाहिए! बहुत दूर जाना है।"

डाक्टर गास्पर ने कहा –

"अब आप अपना सबसे सुन्दर फ़्रॉक छाट लीजिये..."



सूम्रोक अपने सभी फ्रॉक निकाल लाई। वे सभी बहुत बढिया थे, क्योकि उसने खुद ही उन्हे तैयार किया था। सभी प्रतिभाशाली अभिनेत्रियो की भाति सूम्रोक की पसन्द भी बहुत बढ़िया थी।

डाक्टर गास्पर देर तक रग बिरगे फ्रॉको को ध्यान से देखते रहे।

"मेरे ख्याल मे तो यह फ्रॉक ठीक रहेगा। टूटी हुई गुडिया के फ्रॉक से यह कुछ बुरा नही है। इसे पहन लीजिये।"

सूम्रोक ने यह फ्रॉक पहन लिया। वह गाडी के बीचोबीच खडी थी, सूर्य की पहली किरणो मे नहाती हुई सी। एकदम अनुपम थी उसकी छवि, उसका रूप। उसका फ्रॉक गुलाबी था। मगर सूम्रोक जब हिलती-डुलती थी तो ऐसा प्रतीत होता था मानो सुनहरी बरसात हो रही हो। फ्रॉक चमकता था, सरसराता था और उससे प्यारी-प्यारी सुगन्ध आती थी।

"मैं तैयार हूं," सूग्रोक ने कहा।

घड़ी भर में उन्होंने विदा ले ली। सरकस में काम करनेवाले लोगों को टसुए बहाना पसन्द नही होता। वे तो अक्सर अपनी जान हथेली पर लिये रहते हैं। फिर कसकर आलिंगन करना भी ठीक नही था कि फ़ॉक में सिलवटें न पड़ जायें।

"जल्दी ही लौट आना!" बूढ़े अगस्त ने कहा और गहरी सांस ली।

"मैं अब मजदूरों के मुहल्लों में जाता हूं। हमें वहां अपनी ताक़त का अनुमान लगाना चाहिए। मज़दूर मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं। उन्हें मालूम हो गया है कि मैं ज़िन्दा और आज़ाद हूं।"

तिबुल ने लबादा लपेटा, चौड़ा-सा टोप पहना, काला चश्मा चढ़ाया और बनावटी लम्बी नाक लगा ली। यह नाक 'काहिरा की यात्रा' मूक-नाटक में तुर्क बादशाह का अभिनय करते समय काम में लाई जाती थी। अब कोई लाख सिर पटकने पर भी उसे पहचान नही सकता था। यह सच है कि बड़ी-सी नाक से उसका चेहरा भयानक हो गया था, मगर उसके लिए सुरक्षित रहने का यही सबसे अच्छा तरीक़ा था।

बूढ़ा अगस्त दहलीज़ पर खड़ा रहा। डाक्टर, तिबुल और सूग्रोक गाड़ी से बाहर निकले।

अब पूरी तरह दिन निकल आया था।

"जल्दी कीजिये, जल्दी कीजिये!" डाक्टर ने उतावली मचाते हुए कहा।

एक मिनट बाद वे सूग्रोक के साथ बग्घी में जा बैठे।

"तुम डर महसूस नही करती?" डाक्टर ने पूछा।

सूग्रोक जवाब मे मुस्करा दी। डाक्टर ने उसका माथा चूमा।

सड़कें अभी भी सुनसान पड़ी थी। लोगों की आवाज बहुत ही कम सुनाई देती थी। मगर अचानक कोई कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। कुछ देर बाद वह ऐसे गुर्राने और चीख़ने लगा मानो कोई उसके मुह की बोटी छीन लेना चाहता हो।

डाक्टर ने बग्घी से बाहर झाका।

ज़रा ग़ौर कीजिये, यह वही कुत्ता था जिसने पहलवान लापीतूप को काटा था! मगर बात केवल इतनी ही नही थी, डाक्टर ने यह दृश्य देखा। यह कुत्ता किसी व्यक्ति से उलझ रहा था। व्यक्ति लम्बा और दुबला-पतला था। उसका सिर बहुत छोटा-सा था। वह सुन्दर, मगर अजीब-सा सूट पहने था और टिड्डा-सा प्रतीत होता था। वह कोई गुलाबी, सुन्दर और समझ में न आनेवाली चीज़ कुत्ते के मुह से छुड़ा लेने के लिए ज़ोर लगा रहा था। सभी दिशाओं में गुलाबी टुकड़े उड़ रहे थे।



आदमी जीत गया। उसने वह चीज कुत्ते के मुह से छुडाकर छाती के साथ चिपका ली और उस दिशा मे तेजी से भाग चला जिधर से डाक्टर की बग्घी आ रही थी।

यह व्यक्ति जब बग्घी के बराबर पहुचा, तो डाक्टर की पीठ के पीछे से झाकती हुई सूओक ने एक भयानक चीज देखी। यह अजीब सा आदमी भाग नही रहा था, छलागें मारता हुआ बैले नर्तक की भाति मानो हवा म तैर रहा था। उसके फ्रॉक कोट के हरे छोर पवन चक्की के पखा की भाति हवा म लहरा रहे थे। और वह अपने हाथा मे अपने हाथो मे काले काले घावा वाली एक लडकी उठाय था।

"यह तो मैं हू!" सूओक चिल्ला उठी। वह अपनी सीट पर पीछे को हट गई और उसने मखमली तकिये से मुह ढक लिया।

चीख सुन, भागते हुए व्यक्ति ने मुडकर देखा। अब डाक्टर को उसे पहचानन म देर न लगी। यह नृत्य शिक्षक था, श्रीमान एक-दो-तीन।

नौवां अध्याय

तेज़ भूखवाली गुड़िया

उत्तराधिकारी टूट्टी छज्जे मे खड़ा था। भूगोल का अध्यापक दूरबीन में से देख रहा था।

उत्तराधिकारी टूट्टी यह माग कर रहा था कि कुतुबनुमा भी लाया जाये। मगर उसकी ज़रूरत नहीं थी।

उत्तराधिकारी टूट्टी गुड़िया के लौटने की वेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था।

वह अत्यधिक उत्तेजित रहा था, इसलिए उसे वहुत गहरी और मीठी नीद आई थी।

छज्जे से नगर के फाटकों से महल की ओर जानेवाली सड़क साफ तौर पर दिखाई दे रही थी। नगर के ऊपर चढ़ते हुए सूरज के कारण आखें मिचमिचा रही थीं। उत्तराधिकारी हथेली से आखों पर ओट किये हुए था। वह अपनी नाक को सिकोड़ रहा था, छीकना चाहता था, मगर उसे छीक नही आ रही थी।



"अभी तो कोई भी नज़र नही आ रहा," भूगोल के अध्यापक ने कहा।

इसे यह ज़िम्मेदारी का काम इसलिए सौंपा गया था कि भूगोलविज्ञ होने के कारण वह फ़ासलों, विस्तारों और हिलती-डुलती वस्तुओं को सबसे अधिक अच्छे ढग से समझ सकता था।

"आप यक़ीन के साथ कह सकते हैं कि वहा कुछ भी नहीं है?" टूट्टी ने ज़ोर देकर पूछा।

"मुझसे बहस नहीं कीजिये। दूरबीन के

अलावा मेरे पास ज्ञान है और मैं चीजो का सही अनुमान भी लगाना जानता हू। मुझे चमेली की लता दिखाई दे रही है जिसका लातीनी भापा म बहुत ही सुन्दर, मगर मुश्किल-सा नाम है। उसके आगे पुल है और फिर सन्तरी नजर आ रहे हैं जिनके इर्दगिर्द तितलि-या उड रही है। इनके आगे सडक है जरा रुकिये। रुकिय तो।"



उसने दूरबीन का शीशा घुमाया। उत्तराधिकारी टूट्टी पजा के बल खडा हो गया। उसका दिल ऐसे उछल रहा था मानो उसने पाठ न तैयार किया हो।

"हा," अध्यापक ने कहा।

इसी समय तीन घुडसवार महल के पार्क से सडक की ओर जाते दिखाई दिये। कप्तान बोनावेन्तूरा अपने घुडसवारो के साथ उस बग्घी की ओर जा रहा था जो सडक पर दिखाई दी थी।

"हुर्रा।" उत्तराधिकारी इतने जोर से चिल्लाया कि दूर-दूर के गावो म कलहस की बिलक का राग अलापने लगे।

छज्जे के नीचे कसरत का शिक्षक इस बात के लिए तैयार खडा था कि अगर उत्तरा-धिकारी खुशी के कारण पत्थर की मुडेर से नीचे जा गिरे, तो वह उसे हाथो मे साध ले।

हा तो, डाक्टर की बग्घी महल की ओर जा रही थी। अब न तो दूरबीन की जरूरत रही थी और न ही भूगोल के अध्यापक के ज्ञान की। अब तो सभी को बग्घी और सफेद घोडा नजर आ रहे थे।

बडी खुशी की घडी थी। बग्घी आखिरी पुल के पास जाकर खडी हुई। सन्तरी हट गये। उत्तराधिकारी जोर से दोनो हाथ हिलाता हुआ उछल रहा था, उसके सुनहरे बाल लहरा रहे थे। आखिर उसे वह चीज दिखाई दी जिसका इन्तजार था। छोटे क़द

का एक व्यक्ति बूढ़े की तरह धीरे धीरे बग्घी से बाहर निकला। सन्तरी तलवार पर हाथ रखकर सम्मान प्रकट करते हुए दूर खड़े थे। इस नाटे व्यक्ति ने एक अद्भुत गुड़िया बग्घी से बाहर निकाली। यह रेशमी फ़ीतों में लिपटी हुई ताज़ा गुलाबों के गुलदस्ते जैसी लग रही थी।

सुबह के नीले-नीले आकाश और घास तथा किरणों की चमक में यह दृश्य तो देखते ही बनता था।

घड़ी भर बाद गुड़िया महल में पहुंच गई। वह अपने आप ही चली जा रही थी। ओह, ख़ूब बढ़िया निभा रही थी सूग्रोक अपनी भूमिका! अगर वह सचमुच की गुड़ियों में जा पहुंचती, तो निश्चय ही वे उसे अपने समान मान लेतीं।

सूग्रोक बिल्कुल शान्त और स्थिर थी। वह अनुभव कर रही थी कि उसे अपने अभिनय में सफलता मिल रही है।

"इस भूमिका से कही अधिक कठिन काम करने पड़ते हैं," वह मन ही मन सोच रही थी, "जैसे कि जलती हुई मशाल लेकर बाज़ीगरी के करतब करना या दोहरी कलाबाज़ी लगाना..."

सूग्रोक ने सरकस में ये दोनो ही काम किये थे।

मतलब यह कि सूग्रोक का दिल मजबूत रहा। इतना ही नहीं, उसे तो यह अभिनय पसन्द भी आया। डाक्टर गास्पर कही अधिक चिन्तित थे। वे सूग्रोक के पीछे-पीछे जा रहे थे। सूग्रोक छोटे-छोटे क़दम उठा रही थी, पंजों के बल चलनेवाली बैले नर्तकी की भांति। उसका फ़ॉक हिलता-डुलता, लहराता और सरसराता था।

पालिश किया हुआ फ़र्श चमचमा रहा था। वह इस फ़र्श की सतह पर गुलाबी बादल की तरह प्रतिबिम्बित हो रही थी। बड़े-बड़े हॉलों में, जो चमकते हुए फ़र्श के कारण और भी अधिक बड़े और दर्पणों के कारण और भी अधिक चौड़े लग रहे थे, वह बहुत ही छोटी-सी लग रही थी।

ऐसा प्रतीत होता था मानो स्थिर विराट जल-विस्तार पर फूलों की एक छोटी-सी टोकरी बही चली जा रही हो।

सूग्रोक ख़ुश-ख़ुश और मुस्कराती हुई चली जा रही थी, सन्तरियों के पास से, कवचधारी और चमड़े की वर्दी पहने हुए लोगों के क़रीब से जो उसे स्तम्भित-से देख रहे थे। वह गुजरी महल के उन कर्मचारियों के पास से, जो जीवन में पहली बार मुस्कराये थे।

ये लोग सूग्रोक के पास आने पर आदरपूर्वक उसे रास्ता देते। ऐसा लगता मानो वह इस महल की स्वामिनी हो, इस पर अधिकार पाने के लिए आई हो।

ऐसा गहरा सन्नाटा छा गया कि सूग्रोक के हल्के-हल्के कदमों की आहट भी साफ़ सुनाई देती थी। यह आहट जमीन पर गिरनेवाली पंखुड़ी के समान हल्की थी।





इसी समय सूओक के समान छोटा-सा और कान्तिमय बालक चौड़ी-चौडी सीढियों से नीचे भागा आ रहा था, गुड़िया का स्वागत करने के लिए। यह था उत्तराधिकारी टूट्टी।

इन दोनो का कद एक जैसा था।

सूओक रुक गई।

"तो यह है उत्तराधिकारी टूट्टी!" उसने सोचा।

उसके सामने एक दुबला-पतला-सा लड़का खड़ा था, किसी गुस्सैल लडकी से मिलता-जुलता। भूरी आंखो वाला, चेहरे पर कुछ-कुछ उदासी की छाप लिये हुए। उसका अस्त-व्यस्त बालो वाला सिर एक ओर को ज़रा झुका हुआ था।

सूओक को मालूम था कि टूट्टी कौन है। वह जानती थी कि तीन मोटे कौन हैं। उसे अच्छी तरह ज्ञात था कि गरीब और भूखो मरते लोग जितना लोहा, जितना कोयला निकालते हैं, जितना अनाज पैदा करते हैं, वह सभी तीन मोटे हथिया लेते हैं। वह उस कुलीन महिला को नही भूली थी जिसने अपने नौकरो को उसकी पिटाई करने के लिए भेजा था। वह जानती थी कि तीन मोटे, कुलीन वृद्धाएं, बाके-छैले, दुकानदार और सैनिक—

वे सभी जिन्होंने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को लोहे के पिंजरे में बन्द किया और अब हाथ धोकर उसके मित्र नट तिबुल के पीछे पड़े हैं, एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

सूग्रोक जब महल की ओर रवाना हुई थी तो उसने सोचा था कि उत्तराधिकारी टूट्टी बहुत भयानक व्यक्ति होगा, कुलीन बुढ़िया जैसा। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना कि उसकी लम्बी और पतली-सी लाल-लाल ज़बान हमेशा बाहर लटकती रहती होगी।

मगर नहीं, सूग्रोक को उसमें ऐसी कोई भयानक बात नज़र न आई। सच तो यह है कि टूट्टी को देखकर उसे ख़ुशी ही हुई।

वह अपनी ख़ुशी से चमकती हुई भूरी आंखों से उसकी ओर देख रही थी।

"अरे, तुम हो गुड़िया?" उत्तराधिकारी टूट्टी ने उसका हाथ छूते हुए पूछा।

"ओह, अब मैं क्या करूं?" सूग्रोक को डर महसूस हुआ। "क्या गुड़ियां बातें भी किया करती हैं? आह, मुझे तो किसी ने पहले से कुछ बताया ही नहीं! मुझे तो मालूम नहीं कि सैनिकों ने जिस गुड़िया को तोड़ डाला था, वह क्या कुछ कर सकती थी..."

डाक्टर गास्पर ने स्थिति को सम्भाला।

"श्रीमान जी," डाक्टर ने रस्मी अन्दाज में कहा, "मैंने आपकी गुड़िया को ठीक-ठाक कर दिया है! जैसा कि आप अपनी आंखों से देख रहे हैं मैंने केवल उसमें फिर से जान ही नहीं डाली, उसे पहले से ज्यादा सजीव बना दिया है। यक़ीनन यह पहले से बढ़िया गुड़िया बन गई है, उसका फ़्रॉक भी बदल दिया गया है, जो कहीं अधिक सुन्दर है। मुख्य बात तो यह है कि मैंने आपकी गुड़िया को बातें करना, गीत गाना और नाचना भी सिखा दिया है।"

"यह तो कमाल हो गया!" उत्तराधिकारी ने धीरे से कहा।

"अब मुझे अपना फ़न दिखाना चाहिए!" सूग्रोक ने तय किया।

अब चाचा ब्रिज़ाक के कलाकार दल की छोटी-सी अभिनेत्री ने नये रंगमंच पर अपनी पहली भूमिका खेलनी शुरू की।

यह रंगमंच था महल का मुख्य हॉल। वहां ढेरों दर्शक जमा हो गये थे। सभी ओर उनकी भीड़ लगी हुई थी। वे सीढ़ियों के सिरों पर खड़े थे, बरामदों और गैलरियों में जमा थे। वे गोल खिड़कियों में से झांक रहे थे, छज्जों में भीड़ लगाये थे। इसलिए कि अधिक अच्छे ढंग से देख-सुन सकें, वे स्तम्भों पर चढ़े हुए थे।

बहुत ही रंग-बिरंगे सिर और पीठें सूर्य की प्रखर किरणों में चमचमा रहे थे।

सूग्रोक अपने इर्दगिर्द बहुत-से लोगों को देख रही थी। उनके खिले हुए चेहरे उसे ताक रहे थे।

इस भीड मे हलवाई थे जिनकी उगलियो से शाख से बहनेवाली राल की भाति लाल शरबत या बादामी रग की गाढी-गाढी चटनी बह रही थी। यहा मत्री भी थे जो मुर्गो के समान रग-बिरगे फ्रॉक कोट पहने थे और बन्दरो की सी हरकते कर रहे थे। इस भीड मे तग फ्रॉक कोटो वाले छोटे-छोटे और मोटे-मोटे वादक, दरबारी लोग, कुबडे डाक्टर, लम्बी नाको वाले विद्वान और लहराते बालो वाले हरकारे भी थे। यहा मन्त्रियो की तरह ठाठदार कपडे पहने नौकर-चाकर भी उपस्थित थे। ये सभी लोग एक दूसरे से चिपके खडे थे।

सभी एकदम खामोश थे। वे दम साधे गुलाबी गुडिया को देख रहे थे। यह गुडिया भी बिल्कुल शान्त थी और बारह साल की लडकी के अनुरूप गरिमा से इन सैकडो नजरो का सामना कर रही थी। वह ज़रा भी शर्मा या झेप नही रही थी। यहा के दर्शक चौक के उन दर्शको से अधिक माग करनेवाले नही थे जिनके सामने सूओक लगभग हर दिन अपना कला-प्रदर्शन करती थी। ओह, वे तो बहुत कठोर दर्शक होते थे—वे तमाशाई लोग, फौजी, अभिनेता, स्कूली छात्र और छोटे-मोटे दुकानदार! सूओक तो उनके सामने भी कभी नही घबराई-डरी थी। वे कहा करते थे—"सूओक दुनिया की सबसे अच्छी अभिनेत्री है .." और उसके कालीन पर अपनी जेब का छोटा-सा आखिरी सिक्का तक फेंक देते थे। बेशक यह सही है कि उस सिक्के से कलेजी की कचौडी खरीदी जा सकती थी जो जुराब बुननेवाली किसी औरत के लिए नाश्ते, दोपहर और रात के खाने का काम दे सकती थी।

इस तरह सूओक ने एक वास्तविक गुडिया की भूमिका अदा करनी शुरू की।

उसने अपने पजे जोडे, फिर पजो के बल खडी हुई और अपनी झुकी हुई बाहो को ऊपर उठाया। वह चीनी राजा की भाति अपनी कनिष्ठाओ को हिलाती हुई गाने लगी। उसका सिर गीत की लय के साथ-साथ दायें-बाये हिलने लगा।

सूओक की मुस्कान मे शोखी थी, शरारत थी। मगर उसने लगातार इस बात की कोशिश की कि सभी गुडियो की भाति उसकी आखें गोल-गोल और फैली-फैली-सी रहे।

गीत यह था—

किसी अजब विज्ञान-ज्ञान से
मुझे तपाकर भट्ठी मे।
नयी ज़िन्दगी दे डाली है
प्यारे डाक्टर गास्पर ने।।
सुनो, आह अब मै भरती हू
देखो तो, मै मुस्काई।
फिर से हसी-खुशी की मैने

नई ज़िन्दगी है पाई।।
तेरे पास पहुंच पाने को
बहुत बार पथ में भटकी।
भूल न जाना नाम बहन का
"सूग्रोक" रहे मन में अटकी।।
फिर से ज़िन्दा हो जाने पर
सोई तो सपना आया।
अपने लिए तुझे सपने में
ज़ार-ज़ार रोते पाया।।
देखो तो पलके हिलती हैं
कुंडल मेरा लहराया।
भूल न जाना कभी बहन को
प्यारा नाम "सूग्रोक" पाया।।

"सूग्रोक..." टूट्टी ने धीरे से दोहराया।

टूट्टी की आंखें डबडबायी हुई थीं और इसलिए वे दो नहीं, चार लग रही थीं।

गुड़िया ने गीत ख़त्म किया और श्रोताओं के सम्मुख सिर झुकाया। हॉल में उपस्थित सभी लोगों ने प्रशंसा करते हुए गहरी सांस ली। सभी हिले-डुले, सभी ने सिर हिलाये और अपनी ख़ुशी जाहिर करते हुए ज़बान से चटखारा भरा।

वास्तव मे ही गीत की धुन बहुत प्यारी थी, यद्यपि ऐसी कमउम्र लड़की की आवाज़ के लिए कुछ कुछ उदासी लिये हुए थी। उसकी आवाज़ तो बहुत ही ग़ज़ब की थी। ऐसा लगता था मानो चांदी या शीशे के कण्ठ से निकल रही हो।

"फ़रिश्ते की तरह गाती है," ख़ामोशी में आर्केस्ट्रा कंडक्टर के शब्द सुनाई दिये।

"हां, पर इसका गीत कुछ अजीब-सा था," तमग़े लगाये हुए किसी दरबारी ने कहा।

बस, आलोचना तो इतनी ही हुई। तीन मोटे हॉल में आये। इतनी भीड़ देखकर वे आग-बबूला हो सकते थे, इसलिए सभी लोग दरवाज़ों की तरफ भाग चले। इस हड़बड़ी-गड़बड़ी में हलवाई ने शरबत से सना हुआ अपना पंजा किसी सुन्दरी की पीठ पर लगा दिया। सुन्दरी चीख़ उठी। उसके चीख़ने से यह भी स्पष्ट हो गया कि उसके दात बनावटी हैं, क्योंकि वे निकलकर बाहर आ गिरे थे। सैनिकों के मोटे कप्तान का भद्दा-सा भारी बूट इस ख़ूबसूरत जबड़े के ऊपर जा पड़ा। बनावटी दात कचकच की आवाज़ करते हुए पिस गये। और प्रबन्धक ने फ़ौरन घूमकर डाटा—

"कैसी शर्म की बात है! यहा अखरोट बिखरा दिये! पैरो तले आते है!"

बनावटी जबडा खो बैठनेवाली सुन्दरी ने चीखकर शिकायत करनी चाही। उसने हाथ भी ऊपर उठाये, मगर जबडे के साथ ही उसकी आवाज़ का भी दम निकल गया था। उसने कुछ कहा, मगर किसी के पल्ले कुछ नही पडा।

क्षण भर बाद सभी फालतू लोग हॉल से जा चुके थे। केवल बडे-बडे अधिकारी ही बाकी रह गये।

अब सूओक और डाक्टर गास्पर तीन मोटो के सामने खडे थे।

ऐसा लगता था कि पिछले दिन घटी घटनाओ से तीन मोटो को कोई परेशानी नही हुई थी। वे तो पार्क मे डाक्टर की देख-रेख मे गेद खेलते रहे थे। शरीर मे चुस्ती-फुर्ती लाने के लिए वे अक्सर ऐसा करते थे। वे बहुत थक गये थे। पसीने से सराबोर उनके चेहरे चमक रहे थे। उनकी कमीज़ें पीठो से चिपकी हुई थी और पीठे हवा से फूले हुए पालो जैसी लग रही थी। इनमे से एक मोटे की आख के नीचे चोट का नीला-काला-सा निशान था जो भोडे गुलाब या खूबसूरत मेढक के समान था। दूसरा मोटा इस भोडे-से गुलाब को सहमी-सहमी नजर से देख रहा था।

"यह तो इस दूसरे मोटे ने उसके चेहरे पर गेद दे मारा है और चोट का खूबसूरत निशान बना दिया है," सूओक ने सोचा।

वह मोटा जिसे चोट लगी थी, गुस्से से फू-फा कर रहा था। डाक्टर गास्पर हतप्रभ से मुस्करा रहे थे। मोटे ग़ौर से गुडिया को देख रहे थे। खुशी से चमकते हुए उत्तराधिकारी टुट्टी के चेहरे को देखकर मोटो का मूड ठीक हुआ।

"हा, तो," एक मोटे ने कहा, "आप है डाक्टर गास्पर आर्नेरी?"

डाक्टर ने सिर झुकाया।

"गुडिया कैसी है?" दूसरे मोटे ने पूछा।

"बहुत ही खूब है!" टुट्टी खुशी से चिल्लाया।

मोटो ने उत्तराधिकारी को इतना अधिक खुश कभी नही देखा था।

"यह तो बहुत खुशी की बात है! गुडिया वास्तव मे बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रही है..."

पहले मोटे ने माथे से पसीना पोछा और चीखकर कहा—

"डाक्टर गास्पर, आपने हमारा फरमान पूरा कर दिया है। अब आप अपना इनाम माग सकते है।"

खामोशी छा गयी।



लाल रंग के विग लगाये हुए नाटा-सा मुंशी अपना पेन तैयार किये हुए था ताकि डाक्टर जो इनाम मांगे, वह उसे झटपट लिख ले।

डाक्टर ने यह कहा—"कल अदालत चौक में विद्रोहियों को दण्ड देने के लिए जल्लादों के दस तख्ते बनाये गये थे ..."

"उन्हें आज दण्ड दिया जायेगा," एक मोटे ने टोका।

"मैं भी इसी की चर्चा करने जा रहा हूं। मेरी आप से यह प्रार्थना है कि आप सभी बन्दियों की जान बख्श दें और उन्हें आजाद कर दें। मेरी प्रार्थना है कि आप सभी को माफ कर दें और तख्ते जलवा दें..."

लाल विगवाला मुंशी तो यह प्रार्थना सुनकर कांप उठा और उसके हाथ से पेन गिर पड़ा। पेन की निब बहुत ही तेज़ थी और वह दूसरे मोटे के पैर में जा घुसी। वह दर्द से चीख़ उठा और एक पैर पर लट्टू की तरह घूमने लगा। पहला मोटा, जिसकी आंख के नीचे चोट का निशान था, दुर्भावना से ठठाकर हंस दिया। उसे अब बदला मिल गया था।

"बेडा गर्क!" पाव से पेन निकालते हुए दूसरा मोटा चिल्लाया। कम्बख्त बिल्कुल तीर के समान है। "बेडा गर्क! ऐसी प्रार्थना करना अपराध है! आपको ऐसा इनाम मांगने का अधिकार नही है!"

लाल बनावटी वाला वाला मुशी अपनी जान लेकर भागा। रास्ते मे वह एक फूलदान से टकराया जो बम की सी आवाज करता हुआ नीचे गिरा और टुकडे टुकडे हो गया। अब तो यहा अच्छा-खासा हगामा ही हो गया था। मोटे ने पेन निकाला और भागे जाते मुशी की ओर फेंका। मगर ऐसा मोटा आदमी भला खाक निशानेबाज हो सकता है! पेन एक सन्तरी की पीठ मे जा घुसा। पर चूकि वह असली फौजी था, इस लिये टस से मस तक नही हुआ। जब तक पहरा बदला नही गया, पेन उसी जगह पर लगा रहा।

"मै आप से अनुरोध करता हू कि उन सभी मजदूरो की जान बख्श दी जाये जिन्हे मौत की सजा दी जानेवाली है और जल्लादो के सभी तख्ते जलवा दिये जायें।" डाक्टर ने धीरे से, मगर दृढतापूर्वक दोहराया।

जवाब मे तीनो मोटे ऐसे चीख उठे मानो कोई तख्ते तोड रहा हो।

"नही! नही! नही! ऐसा हरगिज़ नही हो सकता! उन्हे जरूर सजा दी जायगी!"

"मरने का अभिनय कीजिये," डाक्टर ने फुसफुसाकर गुडिया से कहा।

सूओक बात को फौरन भाप गई। वह पजो के बल खडी हुई, दर्दभरी आवाज मे कराही और लडखडाने लगी। उसका फ्रॉक पकड ली गई तितली के पखो की भाति फडफडा रहा था और उसका सिर लटक-सा गया था। ऐसा लगता था कि वह अभी ढेर हुई कि हुई।

उत्तराधिकारी उसकी ओर लपका।

"हाय! हाय!" वह चीख उठा।

सूओक और भी ज्यादा दर्दीली आवाज मे कराही।

"आप देख रहे है न?" डाक्टर गास्पर ने कहा। 'गुडिया फिर से दम तोडने जा रही है। उसके अन्दर लगे हुए पुर्जे बहुत ही सवेदनशील है। अगर आप मेरी प्रार्थना पर कान नही देंगे, तो वह बिल्कुल बेकार होकर रह जायेगी। मेरे ख्याल मे तो अगर श्रीमान उत्तराधिकारी की गुडिया बेकार का गुलाबी चिथडा बनकर रह जायेगी, तो उन्हे बहुत सदमा पहुचेगा।"

उत्तराधिकारी तो आपे से बाहर हो गया। वह हाथी के बच्चे की तरह पैर पटकने लगा। उसने कसकर आखे बन्द कर ली और सिर हिलाने लगा।

"हरगिज ऐसा नही होने दूगा! हरगिज नही!" वह चीख उठा। "डाक्टर का अनुरोध पूरा किया जाये! मै अपनी गुडिया को नही मरने दूगा! सूओक! सूओक!" वह फूट-फूटकर रोने लगा।

ज़ाहिर है कि तीन मोटों ने हथियार फेंक दिये। फ़ौरन हुक्म जारी कर दिया गया। विद्रोहियों को माफी दे दी गयी। डाक्टर गास्पर ख़ुश ख़ुश घर चल दिये।

"अब मैं घोड़े वेचकर सोऊंगा," डाक्टर रास्ते में सोचते जा रहे थे।

घर लौटते हुए उन्होंने नगर मे सुना कि अदालत चौक मे जल्लादों के तख़्ते जल रहे हैं और धनी लोग इस बात से बहुत नाराज़ है कि ग़रीबों को माफ़ कर दिया गया है।

इस तरह सूग्रोक तीन मोटो के महल मे रह गई।

टुट्टी उसे साथ लिये हुए बाग मे आया।

उत्तराधिकारी ने पैरों से फूलों की क्यारियां को रौंदा, बाड़ के कांटेदार तार से टकराया और तालाब में गिरते-गिरते बचा। ख़ुशी के मारे उसे मानो अपनी सुध-बुध ही नही रही थी।

"क्या वह इतना भी नही समझ पा रहा कि मैं जीती-जागती लड़की हूं?" सूग्रोक को हैरानी हो रही थी। "मैं तो कभी किसी के हाथों ऐसे उल्लू न बनती।"

नाश्ता लाया गया। सूग्रोक ने पेस्ट्रियां देखी और उसे याद आया कि केवल पिछले वर्ष की पतझर मे ही उसे एक पेस्ट्री खाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। और सो भी बूढ़े मसख़रे अगस्त ने कहा था कि वह पेस्ट्री नही, मीठी पाव-रोटी है। उत्तराधिकारी टुट्टी के लिये लाई गई पेस्ट्रियो की तो बात ही निराली थी। मधुमक्खियां उन्हें फूल ही समझ बैठी थीं और दसेक उनके इर्दगिर्द मंडराने लगी थीं।

"हाय, मैं क्या करू?" सूग्रोक व्यथित होती हुई सोचने लगी। "गुड़िया भला कभी खाती भी है? मगर गुड़िया तो तरह-तरह की होती हैं... ओह, मेरा बहुत मन हो रहा है पेस्ट्री खाने को!"

सूग्रोक अपना मन न मार सकी।

"मैं भी थोड़ी-सी पेस्ट्री खाना चाहती हूं..." उसने धीरे से कहा। उसके गाल लज्जारुण हो गये।

"यह तो बड़ी अच्छी बात है!" उत्तराधिकारी बहुत ख़ुश हुआ। "पहले तो तुम ने कभी कुछ खाना नही चाहा था। तब मुझे अकेले नाश्ता करते हुए बड़ी ऊब अनुभव होती थी। ओह, कितनी ख़ुशी की बात है! तुम्हें भूख लगने लगी है..."

सूग्रोक ने एक टुकड़ा खाया। उसके बाद एक और, एक और, फिर एक और। अचानक उसने देखा कि उत्तराधिकारी की देखभाल करनेवाला नौकर जो कुछ दूर खड़ा हुआ था उसकी ओर देख रहा है—सो भी साधारण ढग से नही, सहमा-डरा-सा।

वह मुह बाये हुए था।

नौकर का ऐसा करना स्वाभाविक ही था।

उसने भला कब अपने जीवन मे गुडियो को खाते देखा होगा।

सूओक सहम उठी। चौथी पेस्ट्री उसके हाथ से गिर गयी, सबसे अधिक क्रीम और अगूर के मुरब्बेवाली।

मगर मामला बिगडा नही। नौकर ने अपनी आखें मली और मुह बन्द कर लिया। उसने सोचा—

"यह तो मुझे भ्रम हुआ है। गर्मी की मेहरबानी है।"

उत्तराधिकारी लगातार बोलता-बतियाता रहा। आखिर थककर चुप हो गया।

गर्मी के इस वक्त गहरी नीरवता छाई हुई थी। जाहिर था कि पिछले दिन की हवा पख लगाकर कही दूर उड गई थी। अब एकदम शान्ति थी। और तो और पक्षियो ने भी पख समेट लिये थे।

ऐसी नीरवता मे उत्तराधिकारी के निकट घास पर बैठी हुई सूओक एक अनबूझ-सी आवाज सुन रही थी, बार-बार एक ही समय दोहरायी जाती हुई। यह ध्वनि रूई मे लिपटी हुई घडी की टिक-टिक के समान थी। अन्तर केवल इतना था कि घडी "टिक-टिक" करती है और यह ध्वनि थी "धक-धक" की।

"यह क्या है?" सूओक ने पूछा।

"क्या?" उत्तराधिकारी ने आश्चर्य से एक वयस्क की भाति अपनी नजर ऊपर उठाई।

"यह धक-धक की आवाज... शायद यह घडी है? तुम्हारे पास घडी है क्या?"

फिर से खामोशी छा गई और इस खामोशी मे फिर से यह धक-धक सुनाई दी। सूओक ने उगली उठाकर चुप रहने का सकेत किया। उत्तराधिकारी ने भी ध्यान से इस आवाज को सुना।

"यह घडी नहीं है," उत्तराधिकारी ने धीरे से कहा। "यह तो मेरा लोहे का दिल है जो धडक रहा है .."

दसवा अध्याय

चिड़ियाघर

दो बजे उत्तराधिकारी टूट्टी को पढाई के कमरे मे बुला लिया गया। पाठ का समय हो गया था। सूओक अकेली रह गई।

किसी को इस बात का सान गुमान भी नही हुआ कि सूओक जीती-जागती लडकी है। शायद उत्तराधिकारी टूट्टी की असली गुडिया जो अब नृत्य-शिक्षक श्रीमान एक-दो-तीन के पास थी, सूओक की भाति ही सजीव लगती होगी। निश्चय ही किसी बहुत बढिया कारीगर

के निपुण हाथो ने उसे बनाया होगा। हा, यह सच है कि वह पेस्ट्रियां नही खाती थी। मगर शायद उत्तराधिकारी टूट्टी ने सही कहा था कि उसे भूख ही नही लगती थी। तो खैर, इस तरह सूग्रोक अकेली रह गई।

स्थिति ख़ासी उलझी-उलझायी थी।

बहुत बड़ा महल, भूल-भुलैया से ढेरों दरवाज़े, बरामदे और सीढ़ियां।

दहशत पैदा करनेवाले सन्तरी, विभिन्न रंगों के विग लगाये हुए अनजाने-अपरिचित कठोर लोग, ख़ामोशी और चमक-दमक।

सूग्रोक की ओर कोई ध्यान नही दे रहा था।

वह उत्तराधिकारी के सोने के कमरे में खिड़की के पास खड़ी थी।

"तो मुझे अपने काम की योजना बना लेनी चाहिये," सूग्रोक ने तय किया। "हथियारसाज़ प्रोस्पेरो लोहे के जिस पिंजरे में बन्द है, वह उत्तराधिकारी टूट्टी के चिड़ियाघर मे रखा है। मुझे किसी तरह वहां पहुचना चाहिये।"

यह तो आप जानते ही हैं कि जीते-जागते बच्चों को उत्तराधिकारी के निकट भी नही फटकने दिया जाता था। उसे तो बन्द घोड़ा-गाड़ी में भी कभी नगर नही ले जाया गया था। वह तो महल में ही बड़ा हुआ था। उसे विज्ञानों की शिक्षा दी जाती थी, ज़ालिम बादशाहों और सेनानायकों के बारे मे किताबे पढ़कर सुनाई जाती थी। उसके आसपास रहनेवाले लोगों के लिये हंसना-मुस्कराना मना था। उसके सभी शिक्षक और अध्यापक दुबले-पतले थे, ऊंचे कद के बूढ़े थे, कसकर भींचे हुए पतले होंठों और मटैले चेहरों वाले। इसके अलावा उन सब के हाज़मे भी ख़राब रहते थे। गड़बड़ हाज़मेवाले लोग भी कभी हंसते है!

उत्तराधिकारी टूट्टी ने कभी ज़ोर की हंसी, गूंजते हुए ठहाके नही सुने थे। हा, कभी-कभार नशे मे धुत्त किसी कसाई या अपनी ही तरह के मोटे-मोटे मेहमानों की दावत करनेवाले तीन मोटों के ठहाके उसे ज़रूर सुनाई देते थे। मगर इन्हें प्यारी हंसी थोड़े ही कहा जा सकता था! यह तो भयानक चीख़-चिघाड़ होती थी। इस से मन खिलता नहीं, दहल उठता था।

मुस्कराती तो थी केवल गुड़िया। मगर तीन मोटे गुड़िया की मुस्कान को ख़तरनाक नहीं मानते थे। फिर गुड़िया बोलती तो थी ही नहीं। वह उत्तराधिकारी को उन बहुत-सी बातों के बारे में कुछ नहीं बता सकती थी जो महल के पार्क और लोहे के पुलों पर पहरा देते हुए सन्तरी उसकी नज़रों से दूर रखते थे। इसी लिये वह जनता, ग़रीबी, भूखे बच्चों, कारख़ानों, खानों, जेलख़ानों और किसानों के बारे में कुछ नहीं जानता था। इसी लिये उसे यह मालूम नहीं था कि धनी लोग ग़रीबों को मेहनत करने

के लिये मजबूर करते हैं और गरीबो के थके-हारे हाथो द्वारा तैयार की जानेवाली सभी चीजे हथिया लेते हैं।

तीन मोटे अपने उत्तराधिकारी को बहुत ही क्रोधी, बहुत ही क्रूर बनाना चाहते थे। उसे बच्चो से दूर रखा गया और उसके लिये चिडियाघर बना दिया गया।

"अच्छा यही है कि वह दरिन्दो को देखा करे," उन्होने तय किया । "उसे यह निर्जीव, हृदयहीन गुडिया दे दी जाये और उसके लिये जगली दरिन्दे जुटा दिये जाये। यही उचित है कि वह शेरो को कच्चा मास खाते और अजगर को जिन्दा खरगोश निगलते देखे। यही ठीक रहेगा कि वह दरिन्दो की दिल दहलानेवाली आवाजें सुने और अगारो की तरह जलती हुई उनकी लाल-लाल आखें देखे। तभी वह निर्दय, तभी वह सगदिल बन सकेगा।"

मगर तीन मोटो के मन के चीते न हो सके।

उत्तराधिकारी टूटी मन लगाकर पढता, वीरो और बादशाहो के बारे मे रोगटे खडे करनेवाली कहानिया सुनता, अपने शिक्षको की फुसियो वाली नाको को नफरत से देखता, मगर वह सगदिल न बना।

उसे दरिन्दो की तुलना मे गुडिया कही अधिक अच्छी लगती थी।

बेशक आप यह कहेगे कि बारह साल के बालक के लिए गुडियो से खेलना शर्म की बात है। इस उम्र मे बहुत-से तो शेरो का शिकार करना चाहेगे। मगर उत्तराधिकारी के सिलसिले मे इसकी एक खास वजह थी। वक्त आने पर आप को उस कारण की जानकारी हो जायेगी।

फिलहाल हम सुग्रोक की ओर लौटते है।

उसने शाम होने तक इन्तजार करने का फैसला किया। उसे दर असल ऐसा ही करना भी चाहिये था। जाहिर है कि गुडिया का दिन-दहाडे महल मे अकेले इधर-उधर घूमते फिरना बडा अजीब-सा लगता।

पाठ के बाद वे फिर दोनो इकट्ठे हो गये।

"तुम्हे एक बात बताऊ," सुग्रोक ने कहा, "जब मैं डाक्टर गास्पर के यहा बीमार पडी थी, तो मैंने एक विचित्र सपना देखा था। उस सपने मे मैं गुडिया से जीती-जागती लडकी मे बदल गई. . मुझे दिखाई दिया मानो मैं सरकस की कलाकार थी। मैं अन्य कलाकारो के साथ मेलो-ठेलो मे घूमनेवाले पहियेदार घर मे रहती थी। यह गाडी एक जगह से दूसरी जगह जाती, मेलो-ठेलो मे ठहरती और हम बडे-बडे चौको मे अपने खेल-तमाशे दिखाते। मैं रस्से पर चलती, नाचती, बाजीगरी के मुश्किल करतब करती और मूक नाटको मे तरह-तरह की भूमिकाए खेलती ."



उत्तराधिकारी आंखें फाड़-फाड़कर उसे देखता हुआ ये बातें सुन रहा था।

"हम बहुत गरीब लोग थे। अक्सर दोपहर का खाना नहीं खाते थे। हमारे पास एक बड़ा-सा सफ़ेद घोड़ा था। उसका नाम था अनरा। फटे हुए पीले कपड़े से ढके उसके चौड़े ज़ीन पर खड़ी होकर मैं बाज़ीगरी के करतब दिखाती। फिर वह घोड़ा मर गया, क्योंकि पूरे एक महीने तक हमारे पास उसे अच्छी तरह से खिलाने-पिलाने के लिये काफ़ी पैसे नहीं थे..."

"गरीब?" टुट्टी ने पूछा। "यह बात मेरी समझ में नहीं आती। आप लोग गरीब क्यों थे?"

"बात यह है कि हम गरीबों के सामने अपने खेल-तमाशे पेश करते थे। वे तांबे-पीतल के छोटे-छोटे सिक्के ही हमारी ओर फेंकते थे। कभी-कभी तो ऐसा भी होता था कि तमाशे के बाद मसखरा अगस्त अपना टोप लेकर दर्शकों के सामने चक्कर लगाता और टोप बिल्कुल ख़ाली ही रह जाता, उसे एक कौड़ी भी दर्शकों से न मिलती।"

उत्तराधिकारी टुट्टी कुछ भी न समझ पाया।

सूओक शाम होने तक उसे ऐसी ही बातें सुनाती रही। उसने उसे ग़रीबों के कठिन जीवन, बड़े नगर और उस कुलीन वृद्धा के बारे में बताया जो उसकी पिटाई कराना चाहती थी। उसने चर्चा की उन अमीरों की जो जीते-जागते बालकों पर कुत्ते लुहा देते हैं। उसने ज़िक्र किया नट तिबुल और हथियारसाज़ प्रोस्पेरो का और यह भी बताया कि मज़दूर, खनिक और जहाज़ी धनियों और मोटों की सत्ता का तख़्ता उलट देना चाहते हैं।

सब से अधिक तो उसने सरकस का ज़िक्र किया। धीरे-धीरे वह अपनी बातों की तरंगों में ऐसी बही कि यह तक भूल गई कि वह सपने की चर्चा कर रही है।

"मैं बहुत अर्से से चाचा ब्रिज़ाक के पहियेदार घर में रह रही हूं। मुझे तो यह भी याद नहीं कि किस उम्र में मैं नाचने, घुड़सवारी करने और कसरती झूले पर तरह-तरह की कसरतें और करतब करने लग गई थी। ओह, मैं कैसे-कैसे बढ़िया करतब करना जानती हूं!" उसने हाथ बजाते हुए कहा, "मसलन, पिछले इतवार को हमने बन्दरगाह में

अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वहा मैंने आडूआ की गुठलियों पर वाल्ज़ की धुन बजायी..."

"आडूओ की गुठलियो पर? वह कैसे?"

"ओह, तुम यह भी नही जानते! क्या तुमने आडू की गुठली से बनाई गई सीटी कभी नही देखी? यह तो बडी मामूली-सी बात है। मैंने बारह गुठलिया जमा की और उनकी सीटिया बना ली। जब तक उन म सूराख नही हो गया, उन्हे पत्थर पर घिसती रही, घिसती रही..."

"वाह, यह तो बहुत दिलचस्प बात है!"

"केवल बारह गुठलियो पर ही नही, मैं तो चाबी पर भी वाल्ज की धुन बजा सकती हू. ."

"चाबी पर भी? वह कैसे? जरा बजाकर दिखाओ! मेरे पास बहुत बढिया चाबी है.."

इतना कहकर उत्तराधिकारी टूट्टी ने अपनी जाकेट के कालर का बटन खोला और गले मे से एक पतली-सी जजीर निकाली। इस ज़जीर के साथ एक छोटी-सी सफेद चाबी लटक रही थी।

"यह लो!"

"तुम इसे इस तरह छिपाये क्यो रहते हो?" सूओक ने पूछा।

"मुझे यह चाबी सरकारी सलाहकार ने दी है। यह मेरे चिडियाघर के एक पिजरे की चाबी है।"



"तो क्या तुम सभी पिंजरों की चाबियां अपने पास रखते हो?"

"नहीं। मुझसे कहा गया है कि यह सबसे महत्त्वपूर्ण चाबी है। मुझे इसे बहुत सम्भालकर रखना चाहिये..."

सूओक ने उसे अपनी कला दिखाई। उसने चाबी का सूराख़वाला भाग होंठ के साथ लगाकर एक प्यारी-सी धुन बजाई।

उत्तराधिकारी ऐसा मस्त हुआ कि वह चाबी जो उसे बहुत सम्भालकर रखने के लिये सौंपी गई थी, उसे उसकी सुध-बुध ही न रही। चाबी सूओक के पास ही रह गई। उसने अनजाने ही उसे लैस से सुसज्जित गुलाबी जेब में डाल लिया।

शाम हुई।

गुड़िया के लिये उत्तराधिकारी टुट्टी के सोने के कमरे की बग़ल में ही एक विशेष कमरा तैयार किया गया था।

उत्तराधिकारी टुट्टी को सपने में अद्भुत चीज़ें दिखाई दे रही थीं—लम्बी-लम्बी नाकों वाले ऐसे नकाब कि देखकर बरबस हंसी आये; अपनी नंगी पीली पीठ पर बड़ा-सा चिकना पत्थर लादे हुए एक व्यक्ति और एक मोटा जो इस व्यक्ति पर अपना काला-सा कोड़ा बरसा रहा था। उत्तराधिकारी ने चिथड़े पहने एक छोकरे को आलू खाते देखा। उसे सफ़ेद घोड़े पर सवार एक बनी-ठनी बुढ़िया भी नज़र आई जो आड़ुओं की बारह गुठलियों के सहारे वाल्ज की कोई भद्दी-सी धुन बजा रही थी...

इसी समय इस छोटे-से शयन-कक्ष से काफ़ी दूर, महल के पार्क के एक कोने में कुछ और ही घटनायें घट रही थीं। आप घबरायें नहीं, पाठकगण, वहां कोई भयानक बात नहीं हुई थी। इस रात केवल उत्तराधिकारी टुट्टी ने ही सपने में अजीबोग़रीब चीज़ें नहीं देखी थीं। ऐसा ही अद्भुत सपना देख रहा था वह सन्तरी जो उत्तराधिकारी टुट्टी के चिड़ियाघर के फाटकवाली चौकी पर पहरा देते-देते ऊंघने लगा था।

सन्तरी जंगले के साथ टेक लगाये पत्थर पर बैठा था और प्यारी-प्यारी नींद का मज़ा ले रहा था। चौड़ी मियान में बन्द उसकी तलवार घुटनों के बीच रखी हुई थी। काले रेशमी रूमाल के बीच से पिस्तौल बड़े इत्मीनान से उसकी बग़ल में लटक रही थी। उसके निकट ही बजरी पर जंगलेवाली लालटेन रखी थी। सन्तरी के बूट और उसकी आस्तीन पर पत्तों के बीच से आ गिरनेवाला तितली का लम्बा-सा लार्वा लालटेन की रोशनी में चमक रहे थे।

एकदम शान्तिपूर्ण वातावरण था।

हां, तो सन्तरी सो रहा था, अजीबोग़रीब सपना देख रहा था। उसने देखा कि उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया उसके पास आई। वह हू-ब-हू वैसी ही थी जैसी कि सुबह के समय, जब डाक्टर गास्पर आर्नेरी उसे लेकर आये थे। वही गुलाबी फ़्राक, वही रेशमी

फीते, वही बढ़िया लैस, वही चमक-दमक। मगर अब सपने मे वह जीती-जागती लडकी प्रतीत हुई। वह मनमाने ढग से हिलती-डुलती थी, दाये-बाये देखती थी, चौक उठती थी और होठो पर उगली रख देती थी।

उसका छोटा-सा शरीर लालटेन की रोशनी मे चमक रहा था।

सन्तरी तो सपने मे मुस्करा भी दिया।

इसके बाद उसने गहरी सास ली, अधिक सुविधाजनक ढग से बैठ गया, कधा जगले के साथ टिका दिया और नाक जगले मे बने हुए लोहे के गुलाब पर रख दी।

सूग्रोक ने सन्तरी को सोते देखकर लालटेन उठाई और पजो के बल बहुत सावधानी से बाड को लाघ गई।

सन्तरी खर्राटे ले रहा था। नीद मे उसे ऐसे लगा मानो चिड़ियाघर मे शेर दहाड रहे हो।

किन्तु वास्तव मे गहरा सन्नाटा था। जानवर सो रहे थे।

लालटेन की रोशनी तो बहुत ही थोडे फासले तक पड रही थी। सूग्रोक धीरे-धीरे बढती जा रही थी, अधेरे मे इधर-उधर देखती हुई। खुशकिस्मती ही कहिये कि रात एकदम अन्धेरी नही थी। झिलमिलाते सितारे और इस जगह से कुछ दूर, वृक्षो की चोटियो और छतो पर से पडती हुई पार्क के लैम्पो की रोशनी इसको कालिमा को कुछ कम कर रही थी।

लडकी बाड लाघकर एक तग-सी वीथी पर चल दी, सफेद फूलो से ढकी छोटी-छोटी झाडियो के बीच से।

कुछ देर बाद उसे जानवरो की गध मिली। वह फौरन इसे पहचान गई। बात यह है कि एक बार शेरो को सधानेवाला एक व्यक्ति अपने तीन शेरो और एक ग्रेट डेन कुत्ते के साथ उनके सरकस-दल मे आ मिला था।

सूग्रोक खुले मैदान मे जा पहुची। उसे अपने इर्दगिर्द काली-काली परछाइया-सी नजर आई मानो छोटे-छोटे घर खडे हो।

"ये रहे पिजरे," सूग्रोक फुसफुसाई।

उसका दिल जोर से धडक रहा था। उसे जानवरो से डर लगता हो ऐसी बात नही। बात यह है कि सरकस मे काम करनेवाले लोग तो यो भी बुजदिल नही होते। उसे चिन्ता थी तो केवल इस बात की कि उसके पैरो की आहट और लालटेन की रोशनी से कोई जानवर न जाग उठे और शोर मचाकर सन्तरी को न जगा दे।

वह पिजरो के निकट गई।

"प्रोस्पेरो कहा है?" सूग्रोक चिन्तित हो रही थी।

वह लालटेन ऊपर उठाकर पिजरों को देख रही थी। कही भी कोई चीज हिल-डुल न रही थी, नीरवता छाई थी। लालटेन की रोशनी पिंजरों की सलाखों से विभाजित होकर असमान हिस्सो मे पिजरो मे प्रवेश करती हुई जानवरों पर पड़ रही थी।

उसे झबरीले मोटे कान नजर आये, फिर कोई फैला हुआ पंजा और फिर कोई धारीदार पीठ दिखाई दी... उक़ाब पंख फैलाकर सो रहे थे, प्राचीन मुकुटों जैसे लग रहे थे। कुछ पिजरो के अन्दर अजीब-सी काली आकृतियां नजर आ रही थी।

पतली रुपहली सलाखो वाले पिंजरों में ऊंची-नीची शाखाओं पर तोते बैठे थे। जब सूओक इस पिजरे के करीब खड़ी हुई, तो उसे लगा कि सलाख के बिल्कुल क़रीब बैठे हुए बूढे और लम्बी लाल दाढ़ी वाले तोते ने एक आख खोलकर उसकी ओर देखा। उसकी आंख नीबू के बीज के समान थी।

इतना ही नही, उसने झटपट वह आंख बन्द कर ली और ऐसे ज़ाहिर किया मानो सो रहा हो। फिर सूओक को ऐसे प्रतीत हुआ मानो वह अपनी लाल दाढ़ी में मुस्कराया भी।

"मैं तो निरी बुद्धू हूं," सूओक ने अपने को दिलासा दिया। मगर उसे डर महसूस हुआ।

वास्तव में ही उस खामोशी में कोई चीज हिलती-डुलती, सरसराती और हल्की-सी चरमर की आवाज़ करती...

कभी रात को अस्तबल या मुर्गीख़ाने मे जाइये। वहा की ख़ामोशी आपको आश्चर्यचकित कर देगी। मगर साथ ही वहा आपको अनेक हल्की-हल्की आवाज़ें सुनाई देगी—पख की फड़फड़ाहट, घुरघुराहट, तख्ते की चरमर और कोई बारीक-सी आवाज़ जो मानो किसी सोई हुई मुर्गी के कंठ से निकल गई हो।

"कहा होगा प्रोस्पेरो?" सूओक ने फिर से सोचा। मगर इस बार वह बहुत चिन्तित थी। "अगर आज उसे दण्ड दिया जा चुका और उसके पिजरे में उक़ाब बिठा दिया गया होगा, तब?"

इसी समय किसी की फटी-सी आवाज सुनाई दी—

"सूओक!"

इसी समय उसे किसी की भारी और तेज़ी से चलती हुई सास और कुछ ऐसी आवाजें सुनाई दी मानो कोई बड़ा-सा बीमार कुत्ता कराह रहा हो।

"ओह!" सूओक चौक उठी।

उसने उस तरफ लालटेन की जिधर से आवाज आई थी। वहा दो लाल-लाल चिंगारिया जल रही थी। पिजरे में भालू के समान कोई बड़ी-सी काली आकृति खड़ी थी, सलाखों को थामे हुए, उन पर अपना सिर टिकाये हुए।

"प्रोस्पेरो।" सूस्रोक ने धीरे से कहा।

इसी क्षण उसके दिमाग म ढेरा ख्याल कौध गये—

"वह ऐसा भयानक क्या है? उसके तन पर भालू की तरह वडे वडे वाल उगे हुए हैं। उसकी ग्राखा म लाल लाल चिगारिया हैं। उसके नाखून लम्बे ग्रौर खमदार हैं। वह नग धडग है। यह ग्रादमी नही, वनमानस है '

सूस्रोक रुग्रासी हो गई।

"ग्राखिर तुम ग्रा गई, सूस्रोक,' इस ग्रजीव से जन्तु ने कहा। मुझे यकीन था कि मैं तुम्ह देख पाऊगा।"

"नमस्ते। मैं तुम्ह ग्राजाद करान ग्राई हू,' सूस्रोक ने कापती हुई ग्रावाज म धीरे से कहा।

'मैं पिजरे से नही निकलूगा। मेरी ग्राखिरी घडी ग्रा पहुची है।

फिर से भारी भरकम ग्रौर खरखरी सी ग्रावाज सुनाई दी। यह जन्तु गिर पडा, फिर स उठा ग्रौर उसने ग्रपना माथा सलाखो के साथ सटा दिया।

"मेरे करीब ग्राग्रो, सूस्रोक।'

सूस्रोक करीब गई। वडा भयानक सा चेहरा उसकी ग्रोर देख रहा था। निश्चय ही यह किसी इन्सान का चेहरा नही था। वह तो भेडिये की थूथनी जैसा लगता था। सवसे भयानक वात तो यह थी कि इस भेडिये के कानो की वनावट इन्सान के काना जैसी थी यद्यपि वे छोटे छोटे सख्त वालो से ढके हुए थे।

सूस्रोक का मन हुग्रा कि ग्रपना मुह ढाप ले। लालटेन उसके हाथो मे हिल डुल रही थी। इसके फलस्वरूप हवा मे प्रकाश के पीले पीले धव्वे चमक उठते थे।

'तुम्हे मुझसे डर लगता है सूस्रोक। मैं तो ग्रव इन्सान जैसा नही लगता हू। डरो नही। मेरे नजदीक ग्राग्रो तुम कितनी वडी हो गई हो। तुम वडी दुवली पतली हो। तुम्हारा चेहरा वडा उदास है

वह वडी मुश्किल से ही वोल पा रहा था। वह नीचे ही नीचे धसकता जा रहा था ग्रौर ग्राखिर ग्रपने पिजरे के लकडी के फर्श पर लेट गया। वह वडी तेजी से सास ल रहा था, उसका मुह खुला हुग्रा था ग्रौर लम्वे लम्वे पीले दातो की दो कतारे दिखाई दे रही थी।

'मेरी ग्राखिरी घडी करीब ग्रा गई है। मगर मैं जानता था कि मरने से पहल तुम्ह एक वार फिर देखूगा।"

उसने वालो से भरी हुई बन्दर जैसी बाह फैलाकर कुछ टटोलना शुरू किया। वह अधेरे मे कुछ ढूढ़ लेना चाहता था। तख्ते में से एक कील निकालने की आवाज़ हुई और तब वह भयानक बाह सलाखों के बीच से बाहर आई।

इस जन्तु ने एक छोटी-सी तख़्ती आगे की ओर बढ़ाते हुए कहा—

"इसे ले लो। इस से सब कुछ तुम्हारी समझ मे आ जायेगा।"

सूग्रोक ने तख़्ती अपनी जेब मे छिपा ली।

"प्रोस्पेरो!" वह धीरे से फुसफुसाई।

मगर कोई उत्तर नही मिला।

सूग्रोक लालटेन क़रीब ले गई। जन्तु का मुह अब हमेशा के लिए खुला रह गया था। उसकी ज्योतिहीन आखें सूग्रोक को ताक रही थी।

"प्रोस्पेरो!" सूग्रोक के हाथ से लालटेन नीचे गिर गई। "वह मर गया! वह मर गया! प्रोस्पेरो!"

लालटेन बुझ गई।



चौथा भाग



हथियारसाज़ प्रोस्पेरो

ग्यारहवा अध्याय

मिठाईघर का बुरा हाल हो गया

चिडियाघर के जानवरो ने खूब शोर मचा दिया। इससे उस सन्तरी की नीद टूट गई जिस से फाटक पर हमारा परिचय हो चुका है और जिसकी लालटेन सूओक उठा ले गई थी।

जानवर चीख-चिघाड रहे थे, दहाड और गुर्रा रहे थे, पिजरे की सलाखो पर ज़ोर-ज़ोर से अपनी दुमे मार रहे थे, पक्षी पख फडफडा रहे थे...

सन्तरी ने अपने जबडे बजाते हुए जमुहाई ली, जगले पर मुट्ठिया जमाकर अगडाई ली और आखिर होश मे आया।

तब वह एकदम चौककर खडा हुआ। लालटेन गायब थी। सितारे धीमे धीमे झिलमिला रहे थे। चमेली की प्यारी-प्यारी खुशबू फैली हुई थी।

"बेडा गर्क!"

सन्तरी ने गुस्से से थूका। उसके थूक ने गोली का सा काम किया और चमेली के एक फूल को डाल से नीचे गिरा दिया।

जानवरो का सहगान अधिकाधिक ऊचा होता गया।

सन्तरी ने खतरे का सकेत दिया। घडी भर बाद लोग मशालें लिए उसकी ओर दौडते हुए आये। सन्तरी गालिया बक रहे थे। मशालें चट-चट की आवाज़ कर रही थी। कोई सन्तरी अपनी तलवार से अटककर गिर पडा और किसी दूसरे सन्तरी की एडी से टकराकर उसने अपनी नाक घायल कर ली।

"कोई मेरी लालटेन चुरा ले गया!"

"कोई चिडियाघर मे घुस आया है!"

"चोर!"

"विद्रोही!"

9 1492

टूटी नाक और टूटी एड़ीवाला सन्तरी तथा अन्य सन्तरी भी अंधेरे में मशालें लहराते हुए अनजाने शत्रु की खोज करने चल दिये।

मगर उन्हें चिड़ियाघर में सन्देह पैदा करनेवाली कोई चीज़ नज़र न आई।

शेर अपने दुर्गन्धवाले मुंहों को ख़ूब खोल-खोल कर दहाड़ रहे थे। बबर बेचैनी से अपने पिंजरों में इधर-उधर चक्कर काट रहे थे। तोते टीं-टीं और टांय-टांय कर रहे थे। वे पंख फड़फड़ाते हुए इधर-उधर फुदक रहे थे और इस तरह उनका पिंजरा एक शानदार रंग-बिरंगा हिंडोला-सा लग रहा था। बन्दर अपने झूलों पर झूल रहे थे। भालू भारी-भरकम आवाज़ में गुर्र-गुर्र कर रहे थे।

रोशनी और हो-हल्ले से जानवर और भी परेशान हो उठे।

सन्तरियों ने हर पिंजरे को बहुत ध्यान से देखा।

उन्हें कहीं भी कोई गड़बड़ दिखाई न दी।

उन्हें तो वह लालटेन भी नहीं मिली जो सूओक ने गिरा दी थी।

मगर अचानक घायल नाकवाले सन्तरी ने कहा—

"वह क्या है?" इतना कहकर उसने अपनी मशाल ऊंची की।

सभी की नज़रें ऊपर को उठ गईं। वृक्ष की हरी-भरी चोटी आकाश की छाया में काली-सी लग रही थी। पत्ते गतिहीन थे। बहुत ही शान्त रात थी।

"देख रहे हो न?" सन्तरी ने ऊंची आवाज़ में पूछा। उसने अपनी मशाल हिलाई।

"हां। वहां कुछ गुलाबी-सा है..."

"कुछ छोटा-सा..."

"वहां बैठा हुआ है..."

"अरे उल्लुओ! इतना भी नहीं जानते कि यह क्या है? यह तो तोता है। यह पिंजरे से उड़कर यहां आ बैठा है। ओह, इसे शैतान ले जाये!"

वह सन्तरी जो ड्यूटी पर था और जिसने ख़तरे का संकेत दिया था झेंप-सी अनुभव करता हुआ चुप खड़ा था।

"इसे नीचे उतारना चाहिए। इसी ने सभी जानवरों को परेशान कर डाला है।"

"तुम ठीक कहते हो। बूर्म, चलो, चढ़ो वृक्ष पर। तुम्हीं सबसे छोटे हो।"

बूर्म वृक्ष के क़रीब गया। वह झिझक महसूस कर रहा था।

"ऊपर जाओ और उसे दाढ़ी से पकड़कर नीचे घसीट लाओ।"

तोता बड़े इत्मीनान से बैठा हुआ था। घने हरे पत्तों में उसके पंख मशाल की रोशनी में ख़ूब गुलाबी नज़र आ रहे थे।

बूर्म ने अपना टोप माथे पर झुका लिया और अपनी गुद्दी खुजलाने लगा।

"मुझे डर लगता है... तोते ऐसे जोर से काटते हैं कि नानी याद आ जाती है।"

"उल्लू न हो तो!"

आखिर बूर्म वृक्ष पर चढ चला। मगर आधी ऊचाई तक जाकर रुका, कुछ क्षण तक ठहरा रहा और फिर नीचे उतर आया।

"मैं किसी भी हालत मे यह करने को तैयार नही हू!" उसने कहा। "यह मेरा काम नही है। मुझे तोतो से लडना नही आता।"

इसी समय किसी की बुढाई-सी गुस्से से भरी आवाज सुनाई दी। कोई व्यक्ति चप्पल फटफटाता हुआ अधेरे मे से सन्तरियो की ओर भागा आ रहा था।

"इसे मत छेडियेगा!" वह चिल्लाया। "इसे परेशान नही कीजियेगा!"

यह व्यक्ति था चिडियाघर का मुख्य कर्मचारी। वह वडा विद्वान और अच्छा प्राणिविज्ञ था, अर्थात् जानवरो के बारे मे वह सभी कुछ जानता था जो जानना सम्भव है।

वह शोर सुनकर जाग उठा था।

यह मुख्य कर्मचारी चिडियाघर मे ही रहता था। वह बिस्तर से उठा और ऐसे हडबडाकर भागा हुआ आया कि रात की टोपी भी उतारना भूल गया, इतना ही नही, उसने अपनी नाक पर से चमकता हुआ बडा खटमल भी नही उतारा।

वह बहुत नाराज था। ऐसा स्वाभाविक ही था—कुछ फौजियो ने आकर उसकी दुनिया मे दखल देने की जुर्रत की थी और अब कोई बुद्धू उसके तोते को दाढ़ी से पकडकर नीचे घसीटना चाहता था!

सन्तरियो ने उसे जाने का रास्ता दे दिया।

प्राणिविज्ञ ने अपना सिर पीछे की ओर कर ऊपर देखा। उसे भी पत्तो के बीच कुछ गुलाबी-सा नजर आया।

"हा," उसने कहा, "यह तोता ही है। यह मेरा सबसे अच्छा तोता है। वह बडा मनमौजी है। पिजरे मे टिककर तो बैठता ही नही। यह मेरा लौरा है... लौरा! लौरा!" वह उसे बारीक-सी आवाज मे बुलाने लगा। "इसे यही पसन्द है कि प्यार-दुलार से बुलाया जाये। लौरा! लौरा! लौरा!"

सन्तरियो ने मुह बन्द कर अपनी हसी का फव्वारा रोका। यह नाटा-सा बूढा फूलदार छापेवाला गाउन और चप्पल पहने था, पीछे की ओर सिर किये था तथा उसकी रात की टोपी का फुदना जमीन चूम रहा था। वह लम्बे-तडगे सन्तरियो, जलती मशालो और चीखते-चिघाडते जानवरो के बीच बडा अजीब-सा प्रतीत हो रहा था।

मगर सबसे दिलचस्प बात तो कुछ क्षण बाद हुई। प्राणिविज्ञ वृक्ष पर चढ़ने लगा। बहुत फ़ुर्ती दिखाई उसने इस काम में। ज़ाहिर था कि उसे इसका ख़ासा अभ्यास था। एक, दो, तीन! उसके गाउन के नीचे से उसका धारीदार पाजामा कुछ बार दिखाई दिया और यह प्रतिष्ठित बुर्जुग ऊपर चढ़ता चला गया। आख़िर उसका छोटा-सा, मगर ख़तरनाक रास्ता तय हुआ।

"लौरा!" उसने प्यार से और मुंह मे मिसरी घोलते हुए फिर से कहा।

अचानक उसकी चीख़ गूज उठी। वह चिड़ियाघर से बाहर पार्क और आसपास कम से कम एक किलोमीटर के फ़ासले तक सुनाई दी।

"शैतान!" वह चिल्लाया।

सम्भवतः वृक्ष पर तोता नहीं, कोई राक्षस बैठा था।

सन्तरी एकदम वृक्ष से पीछे हट गये। प्राणिविज्ञ तेज़ी से नीचे की ओर लुढ़क चला। ख़ुशक़िस्मती ही कहिये कि एक छोटे-से, मगर मज़बूत तने ने उसे नीचे गिरने से बचा लिया। वह वहीं लटककर रह गया।

काश! अन्य वैज्ञानिक अब अपने सम्मानित भाई को इस हाल में देख पाते! निश्चय ही वे उसके बुढ़ापे और उसके ज्ञान का सम्मान करते हुए जान-बूझकर दूसरी ओर मुंह फेर लेते! तने से लटकता हुआ उसका गाउन बहुत ही अटपटा लग रहा था।

सन्तरी सिर पर पैर रखकर भागे जा रहे थे। उनकी मशालों की लपटें हवा में लहरा रही थीं। अन्धेरे में ऐसा प्रतीत होता था मानो दहकते हुए अयालों वाले काले घोड़े भागे जा रहे हों।

चिड़ियाघर में शोर कम हो गया। प्राणिविज्ञ लटका हुआ था, न हिलता था, न डुलता था। मगर उधर महल में शोर मचा हुआ था।

वृक्ष पर रहस्यपूर्ण तोते के नमूदार होने के कोई पन्द्रह मिनट पहले तीन मोटों को बहुत ही बुरी ख़बर मिली थी।

"शहर में भारी गड़बड़ है। मज़दूर बन्दूकें और पिस्तौलें लिए हुए हैं। वे सैनिकों को गोलियों का निशाना बना रहे हैं और सभी मोटों को नदी में फेंक रहे हैं।"

"नट तिबुल आज़ाद है। वह इर्द-गिर्द के लोगों को जमाकर अपनी सेना तैयार कर रहा है।"

"बहुत-से सैनिक मज़दूरों के मुहल्लों में चले गये हैं। वे तीन मोटों की नौकरी नहीं बजाना चाहते।"

"कारख़ानों की चिमनियों से धुआं नहीं निकल रहा। सभी मशीनें ठप पड़ी हैं। खनिक खानों में जाकर धनियों के लिए कोयला निकालने से इन्कार कर रहे हैं।"

"किसान ज़मीदारो से जूझ रहे हैं।'

मन्त्रियो ने तीन मोटो को उक्त समाचार दिये थे।

सदा की भाति इस बार भी तीन मोटे सोच सोचकर मोटे होने लगे। देखते ही देखते उन मे से प्रत्येक का आध पाव वज़न बढ गया।

'मैं इसे बर्दाश्त नही कर सकता," एक मोटे ने कहा। "मैं और बर्दाश्त नही कर सकता यह मेरी सहनशक्ति से बाहर है ओह, ओह! मेरा गला घुटा जा रहा है "

इसी क्षण उसका बर्फ जैसा सफेद कालर चटक की आवाज करता हुआ खुल गया।

"मैं मोटा होता जा रहा हू!" दूसरा मोटा चिल्लाने लगा। "मुझे बचाइये!"

तीसरे मोटे ने क्षुब्ध होते हुए अपने पेट पर नज़र डाली।



इस तरह राज्यीय परिषद् के सामने दो सवाल उठ खडे हुए—पहला ता यह कि किसी भी तरह मोटो की चर्बी को बढने से रोकना और दूसरे—नगर मे हो रही हलचल को शान्त करना।

पहले सवाल के बारे मे उन्होंने तय किया—

"नाच!"

"नाच! नाच! हा, नाच ही। यह सबसे अच्छा व्यायाम है।"

"घडी भर की भी देर न होने दी जाये और फौरन नृत्य-शिक्षक को बुलवाया जाये। वह तीनो मोटो को बैले नाच की शिक्षा दे।"

"हा, यह सही है," पहले मोटे ने कहना शुरू किया, "मगर "

मगर सबसे दिलचस्प बात तो कुछ क्षण बाद हुई। प्राणिविज्ञ वृक्ष पर चढ़ने लगा। बहुत फुर्ती दिखाई उसने इस काम में। ज़ाहिर था कि उसे इसका ख़ासा अभ्यास था। एक, दो, तीन! उसके गाउन के नीचे से उसका धारीदार पाजामा कुछ बार दिखाई दिया और यह प्रतिष्ठित बुज़ुर्ग ऊपर चढ़ता चला गया। आख़िर उसका छोटा-सा, मगर ख़तरनाक रास्ता तय हुआ।

"लौरा!" उसने प्यार से और मुह में मिसरी घोलते हुए फिर से कहा।

अचानक उसकी चीख़ गूज उठी। वह चिड़ियाघर से बाहर पार्क और आसपास कम से कम एक किलोमीटर के फ़ासले तक सुनाई दी।

"शैतान!" वह चिल्लाया।

सम्भवतः वृक्ष पर तोता नहीं, कोई राक्षस बैठा था।

सन्तरी एकदम वृक्ष से पीछे हट गये। प्राणिविज्ञ तेज़ी से नीचे की ओर लुढ़क चला। ख़ुशक़िस्मती ही कहिये कि एक छोटे-से, मगर मज़बूत तने ने उसे नीचे गिरने से बचा लिया। वह वहीं लटककर रह गया।

काश! अन्य वैज्ञानिक अब अपने सम्मानित भाई को इस हाल में देख पाते! निश्चय ही वे उसके बुढ़ापे और उसके ज्ञान का सम्मान करते हुए जान-बूझकर दूसरी ओर मुह फेर लेते! तने से लटकता हुआ उसका गाउन बहुत ही अटपटा लग रहा था।

सन्तरी सिर पर पैर रखकर भागे जा रहे थे। उनकी मशालों की लपटें हवा में लहरा रही थीं। अन्धेरे में ऐसा प्रतीत होता था मानो दहकते हुए अयालों वाले काले घोड़े भागे जा रहे हों।

चिड़ियाघर में शोर कम हो गया। प्राणिविज्ञ लटका हुआ था, न हिलता था, न डुलता था। मगर उधर महल में शोर मचा हुआ था।

वृक्ष पर रहस्यपूर्ण तोते के नमूदार होने के कोई पन्द्रह मिनट पहले तीन मोटों को बहुत ही बुरी ख़बर मिली थी।

"शहर में भारी गड़बड़ है। मज़दूर बन्दूकें और पिस्तौलें लिए हुए हैं। वे सैनिकों को गोलियों का निशाना बना रहे हैं और सभी मोटों को नदी में फेंक रहे हैं।"

"नट तिबुल आज़ाद है। वह इर्द-गिर्द के लोगों को जमाकर अपनी सेना तैयार कर रहा है।"

"बहुत-से सैनिक मज़दूरों के मुहल्लों में चले गये हैं। वे तीन मोटों की नौकरी नहीं बजाना चाहते।"

"कारख़ानों की चिमनियों से धुआं नहीं निकल रहा। सभी मशीनें ठप पड़ी हैं। खनिक खानों में जाकर धनियों के लिए कोयला निकालने से इन्कार कर रहे हैं।"

"किसान जमीदारो से जूझ रहे है।"

मन्त्रियो ने तीन मोटो को उक्त समाचार दिये थे।

सदा की भाति इस बार भी तीन मोटे सोच सोचकर मोटे होने लगे। देखते ही देखते उन मे से प्रत्येक का ग्राध पाव वजन बढ गया।

"मै इसे वर्दाश्त नही कर सकता," एक मोटे ने कहा। "मै ग्रौर वर्दाश्त नही कर सकता यह मेरी सहनशक्ति से वाहर है ग्रोह, ग्रोह! मेरा गला घुटा जा रहा है "

इसी क्षण उसका वर्फ जैसा सफेद कालर चटक की ग्रावाज करता हुग्रा खुल गया।

"मै मोटा होता जा रहा हू!" दूसरा मोटा चिल्लाने लगा। "मुझे बचाइये!"

तीसरे मोटे ने क्षुब्ध होते हुए ग्रपने पेट पर नजर डाली।



इस तरह राज्यीय परिपद् के सामने दो सवाल उठ खडे हुए—पहला तो यह कि किसी भी तरह मोटो की चर्बी को वढने से रोकना ग्रौर दूसरे—नगर मे हो रही हलचल को शान्त करना।

पहले सवाल के वारे मे उन्होने तय किया—

"नाच!"

"नाच! नाच! हा, नाच ही। यह सबसे ग्रच्छा व्यायाम है।"

"घडी भर की भी देर न होने दी जाये ग्रौर फौरन नृत्य शिक्षक को बुलवाया जाये। वह तीनो मोटो को वैले नाच की शिक्षा दे।"

"हा, यह सही है," पहले मोटे ने कहना शुरू किया, "मगर '

ठीक इसी समय चिड़ियाघर से प्राणिविज्ञ की चीख़ सुनाई दी जिसे वृक्ष पर अपने प्यारे तोते लौरा की जगह शैतान दिखाई दिया था।

पार्क में इधर-उधर दौड़ते हुए लोग बुरी तरह हांफ रहे थे।

सबसे ख़ूबसूरत काली और नारंगी रंग की तितलियों के तीस जोड़े डरकर पार्क से उड़ गये।

मशालों का सागर-सा लहराने लगा। सारा पार्क धुएं की गन्ध में डूबा और दहकता हुआ ऐसा जंगल बन गया जो अन्धेरे में भागा चला जा रहा हो।

जब चिड़ियाघर के फाटक से कोई दस क़दम का फ़ासला रह गया, तो उस ओर को भागे जाते सभी लोग अचानक ही रुक गये, मानो किसी ने उनके पैर काट डाले हों। वे सभी मुड़े और चीख़ते-चिल्लाते, एक दूसरे के ऊपर गिरते-पड़ते, दायें-बायें मुड़ते, पीछे की ओर भाग चले। वे सभी अपने को बचाने के फेर में पड़े थे। मशालें जमीन पर पड़ी थीं, उन से लपटें निकल रही थीं और काले-काले धुएं के बादल छा गये थे।

"ओह!"

"आह!"

"बचाइये!"

लोगों की चीख़-पुकार से पार्क में हंगामा मचा हुआ था। हवा में ऊंची उठती हुई चिंगारियां इधर-उधर भागते और परेशानहाल लोगों पर लाल-लाल रोशनी डाल रही थीं।

चिड़ियाघर की ओर से शान्त, दृढ़ और बड़े-बड़े क़दम बढ़ाता हुआ एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति चला आ रहा था।

इस रोशनी में लाल बालों और चमकती हुई आंखों वाला यह व्यक्ति फटी-सी जाकेट पहने भयानक छाया की तरह आ रहा था। वह एक हाथ से चीते के गले में पड़ा हुआ वह पट्टा थामे था जो जंजीर के टुकड़े से बनाया गया था। पीले रंग का यह पतला-सा दरिन्दा भयानक पट्टे से निजात पाने के लिए बेक़रार था। वह उछल-कूद रहा था, गुर्राता था और किसी सूरमा के झंडे पर बबर की भांति अपनी लम्बी लाल ज़बान कभी बाहर निकालता तो कभी अन्दर कर लेता।

भागते हुए लोगों में से कुछ ने पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत की तो उन्होंने देखा कि वह व्यक्ति अपने दूसरे हाथ में एक लड़की को उठाये हुए है जो चमकता हुआ गुलाबी फ़्रॉक पहने है। लड़की सहमी-सहमी सी गुस्से से गुर्राते हुए चीते को देख रही थी, सुनहरे गुलाबों वाले सैंडलों को पैरों से चिपकाये थी और अपने दोस्त के कंधे से सटी जा रही थी।

"प्रोस्पेरो!" भागते हुए लोग चिल्लाये।

"प्रोस्पेरो! यह तो प्रोस्पेरो है!"

"बचाइये!"

"गुडिया!"

"गुडिया!"

अब प्रोस्पेरो ने दरिन्दे को छोड दिया। चीता पूछ हिलाता और बडी-बडी छलागे मारता भागते हुए लोगो के पीछे दौड चला।

सूओक हथियारसाज़ के कधे से नीचे उतर गई। दौडते हुए लोग घास पर बहुत-सी पिस्तौलें गिरा गये थे। सूओक ने तीन पिस्तौलें उठा ली। उसने दो पिस्तौलें प्रोस्पेरो को दे दी और एक खुद ले ली। पिस्तौल उसके कद की आधी लम्बाई के बराबर थी। मगर वह उस काली और चमकती हुई चीज़ का इस्तेमाल करना जानती थी। उसे सरकस मे पिस्तौल से निशाना लगाना सिखाया गया था।

"आओ चलें!" हथियारसाज़ ने आदेश दिया।

पार्क के अन्दर क्या हो रहा था, इस बात मे उन्हे कोई दिलचस्पी नही थी। उन्होने इस बात की ओर भी ध्यान नही दिया कि चीता वहा क्या गुल खिला रहा था।

उन्हे तो महल मे से निकलने का मार्ग ढूढना था। उन्हे तो यहा से बच निकलना था।

वह वाछित देग कहा है जिसकी तिबुल ने चर्चा की थी? वह रहस्यपूर्ण देग कहा है जिसके द्वारा गुब्बारे बेचनेवाला बच निकला था?

"रसोईघर की ओर! रसोईघर की ओर!" रास्ते मे अपनी पिस्तौल हिलाते हुए सूओक चिल्लाई।

वे बिल्कुल अधेरे मे झाडियो के बीच से भागे जा रहे थे, सोये हुए पक्षियो को जगाते हुए। ओह, सूओक के बढिया फ्रॉक की अब कैसी दुर्गति हो गयी थी!

"किसी मीठी-मीठी चीज़ की गन्ध आ रही है," जगमगाती हुई खिडकियो के नीचे रुकते हुए सूओक ने कहा।

दूसरो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए लोग आम तौर पर उगली उठाते हैं। मगर सूओक ने इस समय उगली की जगह पिस्तौल ऊपर उठाई।

सन्तरी इनके पीछे भागे आ रहे थे। मगर ये दोनो वृक्ष की चोटी पर जा चढे थे। वे पलक झपकते मे खिडकियो को छूती डालो के सहारे मुख्य खिडकी मे जा पहुचे थे।

यह वही खिडकी थी जिसमे से एक दिन पहले गुब्बारे बेचनेवाला भीतर जा पहुचा था।

यह मिठाईघर की खिडकी थी।

बेशक रात काफी जा चुकी थी और खतरे का सकेत दिया जा चुका था, फिर भी यहा खूब ज़ोर-शोर से काम हो रहा था। सभी हलवाई और सफेद टोप पहने उनके सहायक

चुस्त छोकरे इधर-उधर दौड़-धूप कर रहे थे। वे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया के लौटने की ख़ुशी में अगले दिन के खाने के लिए फलों की एक विशेष जैली तैयार कर रहे थे। इस बार उन्होने केक न तैयार करने का फ़ैसला किया था। इस बात का भला कैसे यक़ीन हो सकता था कि फिर कोई उड़ता हुआ मेहमान कही आ धमकेगा और फ़्रांसीसी क्रीम तथा अद्भुत मुरब्बों का सत्यानाश नही कर डालेगा।

मिठाईघर के बीचोंबीच एक बड़े-से टब में पानी उबल रहा था। सभी ओर सफ़ेद भाप का बादल-सा छाया हुआ था। इसी बादल की छाया में रसोइये-छोकरे मौज मना रहे थे—जैली के लिए फल काट रहे थे।

हां तो... पर तभी भाप के बादल और मौज-मेले में से हलवाइयों ने एक भयानक दृश्य देखा।

खिड़की के बाहर शाखायें ज़ोर से हिली, पत्ते ऐसे ही सरसराये जैसे कि तूफ़ान आने के पहले और फिर खिड़की के दासे पर दो व्यक्ति नज़र आये—लाल बालों वाला देव और एक बालिका।

"हाथ उठाओ!" प्रोस्पेरो ने कहा। उसके दोनों हाथों में पिस्तौलें थी।

"ख़बरदार, कोई भी अपनी जगह से न हिले!" अपनी पिस्तौल ऊपर करते हुए सूओक ने ऊंची आवाज़ में कहा।

प्रोस्पेरो और सूओक को अपना आदेश दोहराने की आवश्यकता नहीं हुई। दो दर्जन सफ़ेद आस्तीनें ऊपर को उठ गईं।

इसके बाद पतीले इधर-उधर फेंके जाने लगे।

चमकते हुए शीशे और तावे, प्यारी-प्यारी और मीठी-मीठी गन्धवाली मिठाईघर की दुनिया का अब अन्त हो गया था।

हथियारसाज़ बड़े देग की तलाश कर रहा था। सिर्फ़ उसी के मिलने पर ख़ुद उसकी और उसकी नन्ही-सी मित्र की जान बच सकती थी जिसने उसे बचाया था।

उन्होने बर्तनों को उलट-पलट दिया, कड़ाहियों, चोगियों, तश्तरियों और प्लेटों को इधर-उधर फेंक दिया। शीशे छनछनाते हुए फ़र्श पर गिर रहे थे; आटा सफ़ेद बादल बनकर उड़ रहा था—सहारा रेगिस्तान की रेतीली आंधियों की भांति; सभी ओर बादाम, किशमिश और चेरियों का तूफ़ान बरपा था; ऊंचे ताक़ों से शकर जल-प्रपातों के समान नीचे गिर रही थी; फ़र्श पर फैला हुआ मीठा शर्बत टखनों को छू रहा था; पानी छपछपाता था, फल इधर-उधर उछल रहे थे, तावे के ढेरों बर्तन इधर-उधर लुढ़क रहे थे... सभी कुछ उथल-पुथल हो गया था। कभी-कभी सपने में ऐसा होता है और चूंकि यह मालूम हो कि यह सपना ही है तो आदमी मनमानी कर सकता है।



"मिल गया!" सूग्रोक चिल्लाई। "यह रहा!"

जिस चीज़ की उन्हे तलाश थी, वह मिल गई थी। देग का ढक्कन फूटी शीशा के ढेर मे जा मिला था। वह चिपचिपे लाल, हरे और पीले शर्बत में जा गिर गया। प्रोस्पेरो को तलहीन देग दिखाई दिया।

"जल्दी करो!" सूग्रोक चिल्लाई। "तुम चलो, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आती हूं।

हथियारसाज़ देग मे उतर गया। जब वह उसके भीतर जाकर गायब हो गया तो उसे मिठाईघर के लोगो का शोर सुनाई दिया।

सूग्रोक देग मे उतर न पायी। चीता पार्क और महल मे आतंक फैलाने के बाद यहा आ पहुचा था। सन्तरियो की गोलियो ने उसे जहा-जहा से घायल कर दिया था, वहा-वहा उसके तन पर खून के लाल धब्बे लगे हुए थे।

हलवाई एक कोने मे सिमट गये। सूग्रोक को अपनी पिस्तौल का ध्यान न रहा और उसने चीते पर एक नाशपाती फेंकी।

चीता सिर के बल प्रोस्पेरो के पीछे देग मे कूदा। वह अंधेरी और तंग सुरग मे उसके पीछे-पीछे लुढकता गया। उसकी पीली पूछ देग से बाहर हिलती-डुलती नज़र आ रही थी। फिर वह भी ग़ायब हो गई।

सूग्रोक ने हाथो से आखें ढाप ली।

"प्रोस्पेरो! प्रोस्पेरो!" वह चीख उठी।

हलवाइयो के पेट मे हसी के मारे बल पडे जा रहे थे। इसी समय सन्तरी मिठाईघर आ पहुचे। उनकी वर्दिया तार-तार थी, उनके चेहरो पर खून नज़र आ रहा था और उनकी पिस्तौलो से धुआ निकल रहा था—वे चीते से जूझते रहे थे।

"प्रोस्पेरो तो अब ज़िन्दा नही बचेगा! चीता उसके टुकडे-टुकडे कर डालेगा! अब मेरे लिए सब बराबर है। तुम लोग मुझे गिरफ्तार कर सकते हो।"

सूग्रोक ने बडे इत्मीनान से अपनी बात कही। बडी-सी पिस्तौल थामे उसका छोटा-सा हाथ उसकी बगल मे लटक रहा था।

तभी गोली दगी। प्रोस्पेरो ने सुरग मे चीते पर गोली चलाई थी।

सन्तरी देग के इर्दगिर्द जमा थे। शरबत की झील उनके घुटनो को छू रही थी। एक सन्तरी ने देग मे झाका। फिर उसने हाथ अन्दर डालकर कुछ बाहर खीचने की कोशिश की। दो और सन्तरियो ने मदद की। उन्होने ज़ोर लगाया और मरे हुए चीते को, जो चोंगे मे फसा हुआ था, पूछ से पकडकर बाहर खीचा।

"वह मर चुका है," एक सन्तरी ने माथे का पसीना पोछते हुए कहा।

"वह ज़िन्दा है! वह ज़िन्दा है! मैंने उसे बचा दिया! मैंने जनता के मित्र की जान बचा दी है!"

ऐसे ख़ुश हो रही थी सूत्रोक, बेचारी छोटी सूत्रोक, जिसका फ़्रॉक फटा हुआ था और जिसके सैंडलों और बालों में लगे हुए सुनहरे गुलाबों का बुरा हाल हो गया था।

ख़ुशी के मारे उसके चेहरे पर सुर्ख़ी आ गई थी।

उसने अपने मित्र नट तिबुल द्वारा सौंपा गया कार्यभार पूरा कर दिया था—उसने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को आज़ाद करा दिया था।

"हा, तो अब हम भी देखेंगे," सूत्रोक को हाथ से पकड़ते हुए एक सन्तरी ने कहा, "अब हम भी देखेंगे कि तुम्हारा क्या होता है, मशहूर गुड़िया! देखेंगे..."

"इसे तीन मोटों के पास ले चलो..."

"वे तुम्हें मौत की सज़ा दे देंगे।"

"उल्लू," अपने फ़्रॉक की गुलाबी लैस से शरबत का धब्बा चाटते हुए सूत्रोक ने इत्मीनान से कहा। यह धब्बा उसके फ़्रॉक पर तब लगा था जब प्रोस्पेरो ने मिठाईघर में तोड़-फोड़ की थी।

बारहवां अध्याय

नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन

सूत्रोक अब गुड़िया नहीं रही थी। उसका क्या हुआ, फ़िलहाल हम इसके बारे में कुछ नहीं जानते। इसके अलावा हम अभी यह भी स्पष्ट नहीं करेंगे कि वृक्ष पर किस किस्म का तोता बैठा था; बूढ़ा प्राणिविज्ञ जो शायद अभी तक रस्सी पर सूखने के लिए डाली गई क़मीज़ की भांति लटका हुआ था, इतना अधिक क्यों डर गया था; हथियारसाज़ प्रोस्पेरो कैसे पिंजरे से निकल भागा, चीता कहां से आया और सूत्रोक हथियारसाज़ के कंधे से कैसे जा सटी; वह भयानक जन्तु क्या था जिसने इन्सानी आवाज़ में सूत्रोक से बातचीत की, उसके द्वारा सूत्रोक को दिया गया लकड़ी का टुकड़ा कैसा था, और वह जन्तु मर क्यों गया था...

समय आने पर इनमें से प्रत्येक गुत्थी सुलझ जायेगी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि कहीं कोई करिश्मा नहीं हुआ और हर चीज़ का ठोस कारण था।

इस समय सुबह का वक़्त है। आज तो प्रकृति बहुत ही निखर उठी है। प्रकृति के इस जोबन का एक कुमारी बुढ़िया पर, जिसकी सूरत बकरी से मिलती-जुलती थी, ऐसा असर पड़ा कि उसके सिर में बचपन से रहनेवाला दर्द ग़ायब हो गया। इस सुबह को ऐसी ग़ज़ब की हवा थी। वृक्ष सरसरा नहीं रहे थे, बच्चों की सी ख़ुशीभरी आवाज़ में गा रहे थे।

ऐसी सुवह को हर कोई नाचना चाहता है। इसलिए इसम आश्चर्य की कोई वात नहीं कि नृत्य शिक्षक एक-दो-तीन का हॉल लोगो से खचाखच भरा हुआ था।

ज़ाहिर है कि भूखेपेट तो कोई नही नाचता। यदि मन भारी हो, तव भी काई नहीं नाचना चाहता। मगर भूखे और दुखी केवल वही थे जो आज मज़दूरो के मुहल्ला मे तीन मोटो के महल पर फिर से धावा बोलने के लिए जमा हो रहे थे। मगर बाके-छैल, धनी महिलायें और पेटुओ तथा धनियो के वेटे-वेटिया ख़ूव मजे मे थे। उन्ह इस वात की खवर नही थी कि नट तिवुल गरीवो और भूखे कारीगरा की फौज तैयार कर रहा है। उन्ह नही मालूम था कि छोटी-सी नर्तकी सूओक ने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को आज़ाद करा दिया है जिसकी जनता को वेहद ज़रूरत थी। नगर मे हो रही हलचल को वे वहुत महत्त्व नही देते थे।

"यह सव वकवास है!" एक प्यारी सी, मगर तीखी नाकवाली नवाबज़ादी ने नाच के सैंडल तैयार करते हुए कहा। "अगर वे फिर से महल पर हल्ला बोलेंगे तो सैनिक उन्ह पिछली बार की तरह पीसकर रख देंगे।"

"यकीनन!" एक जवान बाके-छैले ने सेब खाते और अपने फ्रॉक कोट की जाच करते हुए खिलखिलाकर कहा। "इन खनिको और गन्दे-मन्दे कारीगरो के पास न तो बन्दूकें हैं, न पिस्तौलें और न ही तलवारे। दूसरी तरफ सैनिको के पास तो तोपे भी हैं।"

खाते-पीते और निश्चिन्त लोगो के जोड़े एक-दो-तीन के घर चले आ रहे थे। उसके घर के दरवाज़े पर यह साइन-वोर्ड लगा हुआ था—

नृत्य-शिक्षक, श्रीमान एक-दो-तीन

केवल नृत्य ही नहीं, वल्कि नज़ाकत,
नफ़ासत, फुर्तीलेपन, शिष्टाचार और
जीवन के प्रति काव्यमय दृष्टिकोण
को भी शिक्षा देता है।
दस नृत्यो की फीस

पेशगी ली जाती है

गोल हॉल के शहदरगे लकडी के सुन्दर फश पर एक-दो-तीन अपनी कला सिखा रहा था।

वह काली वासुरी वजा रहा था। इसे तो करिश्मा ही कहना चाहिए कि वह उसके होठो से लगी रहती थी। कारण कि वह लैस के कफो और सफेद नर्म दस्ताना वाले अपन हाथा को लगातार हिलाता जा रहा था। वह वार-वार झुकता, मुद्रायें वनाता, आखें घुमाता

और ताल के साथ जूते की एड़ी बजाता और रह-रहकर दर्पण की ओर भागा जाता। वह दर्पण में अपना रूप निहारता, इस बात की जांच करता कि उसके तन पर जहां-तहां बंधे रिबनों की गाठें तो ठीक-ठाक है, उसके फुलेल लगे बाल तो चमक रहे हैं...

जोड़े नाच रहे थे। उनकी संख्या बहुत अधिक थी और वे पसीने से तर-ब-तर थे। ऐसा लगता था मानो कोई बहुत ही बढ़िया रंगतवाला, मगर बदजायका शोरबा तैयार हो रहा हो।

इस भारी भीड़ मे चक्कर लगाता हुआ कोई बांका-छैला या कोई सुन्दरी कभी तो बड़े-बडे पत्तों वाले शलजम जैसी दिखाई देती, कभी पत्तागोभी के पत्ते जैसी या फिर ऐसी ही कोई समझ में न आनेवाली, रंगीन और अजीब-सी चीज़ लगती, जो शोरबे से भरी तश्तरी में नज़र आ सकती हो।

एक-दो-तीन इस शोरबे में कलछुल जैसा लग रहा था। ऐसा तो इसलिए और भी अधिक सही था कि वह लम्बा, दुबला-पतला और लचीला था।

आह, अगर सूओक इन नृत्यों को देखती तो उसे बरबस हंसी आ जाती। उसने जब मूक नाटक 'बुद्धू बादशाह' में पत्तागोभी की सुनहरी गाठ की भूमिका अदा की थी, वह तब भी कही बढ़िया नाची थी। फिर उसे तो नाचना भी पत्तागोभी की गाठ की तरह था।

नाच की यह महफ़िल जब अपने रंग पर आई हुई थी तो चमड़े के खुरदरे दस्तानों से ढकी तीन बड़ी-बड़ी मुट्ठियों ने नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन का दरवाज़ा ज़ोर से खटखटाया।

ये मुट्ठिया देखने में मिट्टी के जगों जैसी प्रतीत होती थी।

"शोरबे" का नाच बन्द हो गया।

पाच मिनट बाद नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन को तीन मोटों के महल में ले जाया गया।

तीन सैनिक उसे लेने आये थे। उनमें से एक ने उसे अपने घोड़े पर बिठा लिया—पूछ की ओर उसका मुंह करके, यानी एक-दो-तीन उल्टी दिशा में सवारी कर रहा था। दूसरे सैनिक ने उसका गत्ते का बड़ा-सा बक्सा उठा लिया। उसमें बहुत-सी चीज़ें समा सकती थी।

"आप समझते ही है कि मेरे लिए कुछ सूट, वाद्ययन्त्र और विग, स्वर-लिपिया तथा मनपसन्द गीत अपने साथ ले जाना बिल्कुल ज़रूरी है," एक-दो-तीन ने जाने की तैयारी करते हुए कहा। "कौन जाने, मुझे कितने दिनो तक महल मे रहना पड़े। मैं तो नफासत और ख़ूबसूरती का दीवाना हूं और इसीलिए अक्सर कपड़े बदलता रहता हू।"

नाचनेवाले जोड़े घोड़ों के पीछे-पीछे दौड़े, उन्होने रूमाल हिलाये और एक-दो-तीन के सम्मान में नारे लगाये।

सूरज आकाश में ऊंचा उठ चुका था।

एक-दो-तीन इस बात से ख़ुश था कि उसे महल में बुलाया गया था। उसे तीन मोटे इसलिए पसन्द थे कि सभी अन्य मोटों और धनियों के बेटे-बेटियों को वे अच्छे लगते थे।



धनी आदमी जितना अधिक धनी होता था, एक-दो-तीन को वह उतना ही अधिक अच्छा लगता था।

"बात दर असल है भी ऐसी ही," वह सोचता, "गरीबो से मुझे भला लाभ ही क्या है? वे नाचना-बाचना तो सीखते नही। वे तो हमेशा काम-काज मे जुटे रहते हैं और उनके पास पैसे भी कभी नही होते। जहा तक धनी व्यापारियो, धनी बाके-छैलो और महिलाओ का सम्बन्ध है, उनके पास हमेशा ढेरो पैसा होता है और करने-धरने को कुछ भी नही।"

जाहिर है कि एक-दो-तीन अपनी अक्ल के मुताबिक़ बहुत समझदार था, मगर हमारी दृष्टि मे बुद्धू।

"बड़ी बेवक़ूफ़ है वह सूग्रोक!" नन्ही नर्तकी का स्मरण करते हुए वह हैरान होता। "वह ग़रीबों, फ़ौजियो, कारीगरों ग्रौर फटेहाल बालकों के लिए क्यों नाचा करती है? वे तो उसे बस चन्द कौड़ियां ही देते होंगे।"

स्पष्ट है कि ग्रगर इस बुद्धू एक-दो-तीन को यह मालूम होता कि उस नन्ही-सी नर्तकी ने ग़रीबो, कारीगरों ग्रौर फटेहाल बालको के नेता—हथियारसाज़ प्रोस्पेरो—को बचाने के लिए ग्रपनी जान की भी बाज़ी लगा दी, तो उसे ग्रौर भी ग्रधिक हैरानी होती।

घोड़े सरपट दौड़े जा रहे थे।

रास्ते में बहुत-सी ग्रजीब घटनाएं घटीं। दूरी पर लगातार गोलियां दग रही थी। घरों के दरवाज़ों पर उत्तेजित लोगों की भीड़ जमा थी। कभी-कभार हाथों में पिस्तौलें लिये हुए दो तीन कारीगर भागते हुए सड़क पार करते... ऐसा प्रतीत हो सकता है कि दूकानदारों के लिए ग्राज हाथ रंगने का सबसे बढ़िया दिन था। मगर उन्होने तो खिड़कियां बन्द कर ली थीं ग्रौर झरोखों के साथ ग्रपने चर्बीचढ़े चमकते हुए गाल सटाकर बाहर देख रहे थे। भिन्न-भिन्न लोगो की ज़बानी एक के बाद एक मुहल्ले में यह ख़बर पहुंचती जा रही थी—

"प्रोस्पेरो!"

"प्रोस्पेरो!"

"वह हमारे साथ है!"

"हमा-रे सा-थ है!"

रह-रहकर क़ाबू से बाहर होते ग्रौर झाग उगलते घोड़े पर सवार कोई सैनिक तेज़ी से गुज़रता। जब-तब कोई मोटा हांफता हुग्रा किसी सड़क पर से भागता हुग्रा जाता। उसके दायें-बायें लाल बालों वाले नौकर होते जो ग्रपने मालिक की रक्षा करने के लिए हाथों में लाठियां लिये रहते।

एक जगह नौकरों ने ग्रपने मालिक की रक्षा करने के बजाय ग्रप्रत्याशित ही उसकी पिटाई कर डाली। इससे सारे मुहल्ले मे ख़ूब शोर मचा।

एक-दो-तीन ने शुरू में तो यही समझा कि वे लोग सोफ़े को झाड़कर उसकी धूल-मिट्टी निकाल रहे हैं।

नौकरों ने ग्रपने मोटे स्वामी को कोई तीन दर्जन सोटियां लगाईं। फिर बारी-बारी से उसपर थूका, एक दूसरे के गले में बांहें डाली ग्रौर सोटियां हिलाते तथा यह चिल्लाते हुए कहीं भाग चले—

"तीन मोटे मुर्दाबाद! हम धनियों की नौकरी नही बजाना चाहते! जय जनता!"

इसी बीच लोग लगातार चिल्लाते रहे—

"प्रोस्पेरो!"

"प्रो स्पे रो!"

थोडे मे यह कि वहुत ही भयावह वातावरण था। हवा मे बारूद की गन्ध फैली हुई थी।

आखिर अन्तिम घटना घटी।

दस सैनिको ने अपने उन तीन साथियो का रास्ता रोक लिया जो एक दो तीन को लिये जा रहे थे। ये पैदल सैनिक थे।

"रुक जाओ!" उन दस मे से एक ने कहा। उसकी नीली आखे गुस्से से जल रही थी। "कौन हो तुम लोग?"

"अधे हो क्या?!" उस सैनिक ने भी ऐसे ही गुस्से से पूछा जिसके पीछे एक-दो-तीन बैठा था।

सैनिको के घोडे जो पूरी ताकत से दौडे जा रहे थे, अब कावू से वाहर हो रहे थे। उनके साज़ हिल रहे थे। नृत्य शिक्षक एक दो-तीन की टागें भी डर से हिल रही थी। यह कहना मुश्किल है कि साज़ ज्यादा ज़ोर से हिल रहे थे या नृत्य शिक्षक की टागें।

"हम तीन मोटो के महल के सैनिक हैं।"

'हम महल मे पहुचने की जल्दी म है। फौरन हमारा रास्ता छोड दीजिये!'

तब नीली आखो वाले सैनिक ने अपनी पिस्तौल निकाल ली और कहा—

"अगर यही वात है तो अपनी पिस्तौले और तलवारे हमारे हवाले कर दो। सैनिको के शस्त्रो को केवल जनता की सेवा करनी चाहिए, तीन मोटा की नही!"

इन दस के दस सैनिको ने अपनी पिस्तौल निकाल ली और घुडसवारो को घेर लिया।

घुडसवारो ने भी अपने शस्त्र सम्भाल लिये। एक-दो-तीन वेहोश होकर घोडे से नीचे जा गिरा। कब उसे होश आया, यह ठीक-ठीक कहना मुमकिन नही। मगर इतना निश्चित है कि ऐसा तभी हुआ जब उसे लेकर जानेवाले और उन्ह रोकनेवाले सैनिको के बीच लडाई खत्म हो गई। शायद रोकनेवालो की ही विजय हुई थी। एक-दो-तीन ने अपन निकट उसी सैनिक को पडे पाया, जिसके पीछे वह वैठा था। यह सैनिक मरा हुआ था।

"खून," एक-दो-तीन आखें मूदत हुए बुदबुदाया।

घडी भर वाद उसने जो कुछ देखा, उससे तो उसके दिल को वहुत ही ज़ोर का धक्का लगा।

उसका गत्ते का बक्सा टूटा पडा था। उसका सारा माल मता बाहर निकला हुआ था। उसके वढिया सूट, गीत और विग सडक की धूल चाट रहे थे...

"आह!"

लडाई की गर्मागर्मी मे उस सैनिक ने वह वक्सा नीचे फेंक दिया था। वह पत्थरा पर गिरकर टूट गया था।

"आह! आह!"

एक-दो-तीन अपने माल-मते की ओर लपका। उसने पागलों की तरह अपनी वास्कट, फ़ॉक कोट, जुराबें और सस्ते, मगर पहली नजर में सुन्दर दिखाई देनेवाले बक्सुओं से सजे हुए जूते समेटे और फिर से जमीन पर बैठ गया। उसके दुख की तो कोई सीमा ही नहीं थी। सभी चीजें, उसकी सभी पोशाकें ज्यों की त्यों मिल गई थीं, मगर मुख्य चीज ग़ायब थी। इसी बीच जबकि एक-दो-तीन अपनी पाव-रोटी जैसी मुट्ठियां नीले आकाश की ओर उठाये बैठा था, तीन घुड़सवार बहुत ही तेजी से घोड़े दौड़ाते हुए तीन मोटों के महल की ओर बढ़े जा रहे थे।

इनके घोड़े लड़ाई होने के पहले उन घुड़सवारों के क़ब्ज़े में थे जो नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन को अपने साथ ले जा रहे थे। लड़ाई के बाद उन तीन सैनिकों में से एक मारा गया था और बाक़ी दो ने आत्मसमर्पण कर दिया था। वे भी जनता के पक्ष में हो गये थे। उसी समय विजेताओं को एक-दो-तीन के टूटे हुए बक्से में मलमल के टुकड़े में लिपटी हुई कोई गुलाबी चीज मिली। तब उन दस में से तीन फ़ौरन छीने हुए घोड़ों पर उछलकर सवार हो गये और उनके घोड़े हवा से बातें करने लगे।

सबसे आगे-आगे था नीली आखों वाला सैनिक। वह मलमल के टुकड़े में लिपटी हुई कोई गुलाबी चीज अपनी छाती के साथ चिपकाये था।

रास्ते के लोग एक ओर को हट जाते थे। सैनिक के टोप पर लाल फ़ीता बंधा हुआ था। इसका अर्थ था कि वह जनता की ओर हो गया है। इसीलिए रास्ते में मिलनेवाले लोग (अगर वे मोटे या पेटू नहीं थे) उसके पास से गुजरने पर तालियां बजाते । मगर ग़ौर से सैनिक की ओर देखने पर वे हक्के-बक्के रह जाते। कारण कि सैनिक जो बंडल अपनी छाती से चिपकाये था, उसमें से एक बालिका की टांगें लटक रही थी। बालिका अपने पैरों में सुनहरे गुलाबों के बक्सुओं वाले गुलाबी सैंडल पहने थी...

तेरहवां अध्याय

विजय हुई

अभी अभी हमने उन असाधारण बातों की चर्चा की है जो उस सुबह हुई थीं। अब हम जरा पीछे लौटकर उस रात का उल्लेख करेंगे जो इस सुबह के पहले बीती। जैसा कि आप जानते ही हैं उस रात को भी कुछ कम अनहोनी बातें नही हुई थीं।

इसी रात को हथियारसाज़ प्रोस्पेरो तीन मोटो के महल से भागा था और सूम्रोक रगे हाथो गिरफ्तार कर ली गई थी।

इसके अलावा इसी रात को तीन आदमी ढकी हुई लालटेनें लिए हुए उत्तराधिकारी टूट्टी के सोने के कमरे मे आये थे।

यह घटना उस समय से लगभग एक घण्टे बाद घटी जब हथियारसाज़ प्रोस्पेरो ने महल के मिठाईघर मे तूफान मचाया और सैनिको ने सूम्रोक को सुरग के नज़दीक गिरफ्तार किया।

उत्तराधिकारी के सोने के कमरे मे अन्धेरा था।

बडी-बडी खिडकियो मे से सितारे झाक रहे थे।

लडका गहरी नीद सो रहा था, धीरे धीरे और चैन की सास लेता हुआ।

कमरे मे आनेवाले तीनो व्यक्ति अपनी लालटेनो की रोशनी छिपाने की भरसक कोशिश कर रहे थे।

उन्होने क्या किया, यह हम नही जानते। सिर्फ उनकी कानाफूसी सुनाई देती रही। सोने के कमरे के दरवाजे पर पहरा देनेवाला सन्तरी ऐसे खडा रहा मानो कुछ हुआ ही न हो।

सम्भवत उत्तराधिकारी के शयन-कक्ष मे आनेवाले इन तीनो व्यक्तियो को यहा आने का कुछ विशेष अधिकार प्राप्त था।

यह तो आप जानते ही है कि उत्तराधिकारी टूट्टी के शिक्षक दिलेर लोग नही थे। गुडियावाली घटना तो आप भूले नही होगे। बाग मे जब वह भयकर काण्ड हुआ था जब सैनिको ने गुडिया के तन मे तलवारे घुसेडी थी, तो शिक्षक का कैसे दम निकल गया था। आपको याद होगा कि तीन मोटो के सामने इस काण्ड की चर्चा करते हुए शिक्षक की कैसे घिग्घी बध गई थी।

इस बार जो शिक्षक ड्यूटी पर था, वह भी ऐसा ही बुज़दिल साबित हुआ।

जब ये तीनो अपरिचित लोग लालटेनें लिये हुए शयन-कक्ष मे आये तो शिक्षक कमरे मे ही था। उत्तराधिकारी की नीद मे कोई खलल न पडे, वह इसी बात की देखभाल करने के लिए खिडकी के पास बैठा था। इसलिए कि कही आख न लग जाये, वह सितारा को देखता हुआ खगोलशास्त्र की अपनी जानकारी को ताज़ा कर रहा था।

मगर इसी समय दरवाजा चरमराया, रोशनी हुई और तीन रहस्यपूर्ण आकृतिया कमरे मे नज़र आई। शिक्षक आराम-कुर्सी मे दुबक गया। उसे सबसे ज्यादा फिक्र तो इस बात की थी कि कही उसकी लम्बी नाक उसका भडाफोड न कर दे। बात दर असल थी भी कुछ ऐसी ही। सितारा से झिलमिलाती खिडकी की पृष्ठभूमि मे यह अनूठी नाक एकदम स्याह नज़र आने लगी थी और इसकी ओर फौरन ध्यान जा सकता था।

मगर इस कायर ने यह सोचकर अपने दिल को तसल्ली दी –"शायद वे इसे आराम-कुर्सी के हत्थे की सजावट या सामनेवाले घर की कार्निस ही समझेंगे।"

लालटेनों की हल्की पीली रोशनी में कुछ-कुछ नजर आती हुई ये आकृतियां उत्तराधिकारी के पलंग के करीब आईं।

"ठीक है," कोई फुसफुसाया।

"सो रहा है," दूसरे ने कहा।

"शी!"

"परेशानी की कोई बात नही। वह गहरी नींद सो रहा है।"

"तो काम शुरू कीजिये।"

कोई चीज़ छनकी।

शिक्षक को ठण्डे पसीने आ गये। उसे लगा कि डर के मारे उसकी नाक लम्बी होती जा रही है।

"तैयार है," कोई फुसफुसाया।

"तो शुरू कीजिये।"

फिर से कोई चीज़ छनछनाई, किसी तरल पदार्थ के बोतल में डालने की आवाज़ हुई। अचानक फिर से ख़ामोशी छा गई।

"कहां डाला जाये इसे?"

"कान में।"

"वह करवट लेकर सो रहा है। यह स्थिति अधिक अनुकूल भी है। डालिये कान में..."

"मगर बहुत सावधानी से। एक-एक बूंद करके।"

"ठीक दस बूंदें। पहली बूंद बहुत ठण्डी लगेगी, मगर दूसरी बूंद डालने पर कोई अनुभूति नही होगी, क्योंकि पहली बूंद फ़ौरन असर करती है। उसके बाद तो कुछ महसूस ही नही होता।"

"इस तरल पदार्थ को ऐसे डालने की कोशिश कीजिये कि पहली और दूसरी बूंद के बीच वक़्फ़ा न पड़ने पाये।"

"वरना लड़का ऐसा अनुभव करेगा मानो किसी ने बर्फ़ छुआ दी हो और जाग जायेगा।"

"शी! तो डालता हूं... एक, दो!"

और अब शिक्षक ने पोस्त के फूलों की तेज़ गन्ध अनुभव की। यह गन्ध सारे कमरे में फैल गई थी।



"तीन, चार, पाच, छ .." किसी ने धीमी आवाज़ ने जल्दी जल्दी गिनती की।
"डाल दी दस बूंदें।"

"अब यह तीन दिन तक गहरी नीद सोया रहेगा।"

"और उसे यह मालूम ही नही हो सकेगा कि उसकी गुडिया का क्या हुआ..."

"उसकी तभी आख खुलेगी जब सब कुछ खतम हो चुका होगा।"

"वरना वह रोने और पैर पटकने लगता। तब तीन मोटे मजबूर होकर लडकी को माफ कर देते और उसकी ज़िन्दगी बख्श देते .."

ये तीना अजनबी चले गये। तब कापता हुआ शिक्षक उठा। उसने नारगी रग के फूल की तरह जलनेवाला छोटा-सा रात्रि-दीप जलाया और पलग के क़रीब आया।

उत्तराधिकारी टूट्टी लैसवाली सुन्दर रेशमी चादर ओढ़े हुए सो रहा था, छोटा-सा मगर रोबीला-सा प्रतीत हाता हुआ। अस्तव्यस्त सुनहरे बालो वाला उसका सिर बड़े-बड़े तकिया पर टिका हुआ था।

१०

शिक्षक झुका और उसने लैम्प को लड़के के पीले चेहरे के क़रीव किया। छोटे-से कान में तरल पदार्थ की बूंद ऐसे चमक रही थी मानो सीप में मोती।

बूद में से सुनहरी और हरी आभा एकसाथ झलक दिखा रही थी।

शिक्षक ने कनिष्ठा से इस तरल पदार्थ को छुआ। छोटे-से कान से बूंद ग़ायव हो गयी, मगर शिक्षक की सारी वांह वर्फ़ की तरह सर्द हो गई।

लड़का गहरी नीद सो रहा था।

कुछ घण्टों के वाद उस शानदार सुवह् का आरम्भ हुआ जिसका हम पीछे वर्णन कर चुके है।

यह तो हमें मालूम ही है कि उस सुवह् को नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन के साथ क्या वीती थी। मगर हमारे लिए यह जानना कही अधिक दिलचस्प है कि इस सुवह् को सूओक का क्या हुआ। हमने उसे तो वहुत ही भयानक स्थिति में छोड़ा था!

शुरू मे तो यह तय किया गया कि उसे तहख़ाने में डाल दिया जाये।

"पर यह तो बहुत झंझटवाली वात होगी," सरकारी सलाहकार ने कहा। "हम झटपट उस पर न्यायपूर्ण मुक़दमा चलाकर उसे सज़ा दे देंगे।"

"हां, यह ठीक है। लड़की को लेकर ज्यादा झंझट करने की जरूरत नहीं है," तीन मोटों ने सहमति प्रकट की।

मगर आपको यह नही भूलना चाहिए कि तीन मोटों को चीते से बचने के लिये भागते समय वहुत परेशानी हुई थी। इसलिए यह जरूरी था कि वे कुछ देर आराम कर ले। उन्होने कहा—

"अब हम थोड़ी देर सोना चाहते है। सुबह् मुकदमे की कार्रवाई होगी।"

इतना कहकर वे अपने अपने सोने के कमरे में चले गये।

सरकारी सलाहकार को इस बात में तनिक भी सन्देह् नही था कि अदालत गुड़िया, यानी वालिका को मौत की सज़ा देगी। इसलिए उसने उत्तराधिकारी टूट्टी को गहरी नीद सुला देने का आदेश दिया ताकि वह अपने आंसुओं से कठोर दण्ड को हल्का न करवा दे।

जैसा कि आप जानते ही हैं लालटेनवाले तीन व्यक्तियों ने यह काम पूरा कर दिया था।

उत्तराधिकारी टूट्टी गहरी नीद सो रहा था।

सूओक सन्तरियों के कमरे में वैठी थी। उसके सभी ओर सन्तरी थे। अगर कोई अजनवी यहा आ जाता तो देर तक यही सोचकर आश्चर्यचकित होता रहता—यह प्यारी-सी, उदास-से चेहरे और सुन्दर गुलावी फ़ॉकवाली लड़की सन्तरियों के वीच क्या कर रही है? वह जीनो, वन्दूकों और वीयर के गिलासों के अटपटे वातावरण में वड़ी अजीव-सी लग रही थी।



सन्तरी ताश खेल रहे थे, उनकी पाइपो से नीला-नीला कडुआ धुआ निकल रहा था। वे एक दूसरे पर चीखते-चिल्लाते और हाथापाई भी करते। ये सन्तरी अभी तक तीन मोटो के प्रति वफादार थे। वे सूओक को अपने बडे-बडे घूसे दिखाते, पैर पटकते और तरह-तरह की सूरते बनाते।

सूओक ने उनकी इन हरकतो की ओर ध्यान न दिया। उनसे पिड छुडाने और उन्हे मजा चखाने के लिए वह अपनी जबान बाहर निकाल और उन सभी की ओर मुह करके बैठ गई। वह घण्टा भर ऐसे ही बैठी रही।

कठौने पर बैठे रहना उसे काफी आरामदेह प्रतीत हुआ। यह सही है कि इस तरह बैठने से उसके फ्रॉक मे सिलवटे पड रही थी। मगर वह तो वैसे भी अपनी पहलेवाली खूबसूरती खो बैठा था। शाखाओ मे उलझकर वह जहा-तहा से फट गया था, मशालो ने उसे कई जगह से जला दिया था, सैनिको ने उसमे ढेरो सिलवटें डाल दी थी और उस पर शरबत के धब्बे लग गये थे।

सूओक को अपनी कुछ चिन्ता नही थी। उसकी उम्र की लडकिया असली खतरे से नही डरती। अपने सामने पिस्तौल तनी देखकर उन्ह भय अनुभव नही होता, मगर अधेरे कमरे मे अकेले रहते हुए उनकी जान निकलती है।

सूओक सोच रही थी – "हथियारसाज़ प्रोस्पेरो आजाद हो गया। अब वह और तिबुल गरीबा को साथ लेकर महल पर धावा बोलेगे। वे मुझे आजाद करा लेगे।"

इसी समय जब सूओक इस तरह की बाते सोच रही थी, तीन सैनिक सरपट घोडे दौडाते हुए महल की ओर बढे जा रहे थे। हम पिछले अध्याय मे उनकी चर्चा कर चुके है। जैसा कि आपको मालूम है उनमे से एक, यानी नीली आखो वाला सैनिक एक रहस्यपूर्ण बडल उठाये हुए था। इसमे से सुनहरे गुलाबो वाले गुलाबी सैंडल पहने दो पैर बाहर लटक रहे थे।

ये तीना घुडसवार जब उस पुल के निकट पहुचे जहा तीन मोटो के प्रति वफादार सन्तरी खडे थे, तो उन्होने अपने टोपो से लाल रिबन उतार लिये।

ऐसा इसलिए करना जरूरी था कि सन्तरी उन्हे रोकें-टोकें नही।

अगर सन्तरियो को लाल रिबन दिखाई दे जाते, तो वे उन पर गोलिया चलाने लगते। लाल रिबन तो इस बात की निशानी थे कि इन्हे लगानेवाले सैनिक जनता की ओर हो गये है।

वे बहुत ही तेज़ी से सन्तरियो के पास से गुज़र गये। सन्तरियो का सरदार तो गिरते-गिरते बचा।

"ज़रूर कोई बहुत ही जरूरी सन्देश लेकर जा रहे होगे," नीचे गिरा हुआ अपना टोप उठाते और वर्दी से मिट्टी झाडते हुए सरदार ने कहा।

इसी समय सूम्रोक की आख़िरी घड़ी निकट आ गई। सरकारी सलाहकार सन्तरियों के कमरे में आया।

सन्तरी उछलकर अटेंशन खड़े हो गये।

"लड़की कहां है?" अपनी ऐनक ऊपर करते हुए सलाहकार ने पूछा।

"इधर आओ!" मुख्य सन्तरी ने सूम्रोक को आवाज़ दी।

सूम्रोक कठौते से नीचे उतरी।

सन्तरी ने बड़े भद्दे ढंग से सूम्रोक की पेटी पकड़कर उसे ऊपर उठा लिया।

"तीन मोटे अदालत-भवन में इसका इन्तज़ार कर रहे हैं," ऐनक नीचे करते हुए सलाहकार ने कहा। "लड़की को मेरे पीछे-पीछे लाओ।"

इतना कहकर सरकारी सलाहकार सन्तरियों के कमरे से बाहर चला गया। सूम्रोक को एक हाथ पर उठाये हुए सन्तरी सरकारी सलाहकार के पीछे-पीछे चल दिया।

ओह, सुनहरे गुलाब! ओह, गुलाबी रेशम! निर्दयी हाथ की बदौलत इन सबका बुरा हाल हुआ जा रहा था।

सूम्रोक पेटी के सहारे सन्तरी के हाथ में लटकी हुई थी। उसे दर्द महसूस हो रहा था, बड़ी तकलीफ़ हो रही थी। उसने सन्तरी की कोहनी के ऊपर चुटकी काट ली। उसने चुटकी इतने ज़ोर से काटी कि सैनिक की वर्दी की मोटी आस्तीन के बावजूद वह दर्द से तड़प उठा।

"सत्यानाश हो!" उसने गाली दी और सूम्रोक उसके हाथ से नीचे जा गिरी।

"क्या कहा?" सलाहकार घूमा।

इसी समय सलाहकार के कान पर अप्रत्याशित ही ऐसी ज़ोर की धौल पड़ी कि वह ज़मीन चाटने लगा।

उसके फ़ौरन बाद वह सन्तरी भी ज़मीन पर पड़ा दिखाई दिया जो कुछ ही क्षण पहले सूम्रोक को पेटी से पकड़कर लटकाये लिये जा रहा था।

सन्तरी के कान पर भी धौल जमायी गयी थी। सो भी कैसी! ज़रा कल्पना कीजिये कि कैसी ज़ोर की होगी वह धौल जिसने ऐसे हट्टे-कट्टे तथा क्रोधी सन्तरी को ज़मीन पर गिरा दिया था!

इससे पहले कि सूम्रोक मुड़कर कुछ देख पाती, किसी के हाथों ने उसे फिर से झपट लिया और उठा ले चले।

हाथ तो ये भी कठोर और मज़बूत थे, मगर दयालु प्रतीत हुए। उस सन्तरी के हाथों की तुलना में जो अब चमकते हुए फ़र्श पर पड़ा था, सूम्रोक को इन हाथों में अधिक आराम अनुभव हुआ।

"डरो नहीं!" किसी ने फुसफुसाकर कहा।

मोटे बहुत बेचैनी से अदालत-भवन मे इन्तज़ार कर रहे थे। वे चालाक गुडिया के मुकदमे की कार्रवाई का खुद सचालन करना चाहते थे। उनके इर्दगिर्द कर्मचारी, सलाहकार, न्यायाधीश और मुशी बैठे थे। सूरज की किरणो मे रग बिरगे – गुलाबी, जामुनी, भडकीले हरे, लाल, सफेद और सुनहरे – विग चमक रहे थे। मगर दिल खुश करनेवाली सूरज की किरणे भी इन विगा के नीचे उनके गुस्से से फूले हुए तोबडो पर रौनक नही ला सकी थी।

तीन मोटो का पहले की भाति अब भी गर्मी के मारे बुरा हाल था। उनके माथे से मटर के दानो की भाति पसीने की बूदें टपटप नीचे गिरती थी। इससे उनके सामने पडे हुए कागज़ खराब हो जाते थे। मुशी लगातार इन कागजो को बदलते जाते थे।

"हमारा सलाहकार बहुत इन्तज़ार करवाता है,' पहले मोटे ने फासी पर लटके हुए व्यक्ति की भाति उगलिया हिलाते हुए कहा।

आखिर प्रतीक्षा का अन्त हुआ।

तीन सैनिक भवन मे आये। उन मे से एक लडकी को हाथा मे उठाये था। ओह, कैसा दर्दनाक था लडकी का चेहरा!

उस गुलाबी फ्रॉक की, जो केवल एक दिन पहले अपनी चमक-दमक और बढिया कलात्मक सजावट से आश्चर्यचकित करता था, अब बहुत बुरी हालत हो गई थी। सुनहरे गुलाब मुरझा गये थे, चमकता हुआ सलमा और सितारे गिर चुके थे और रेशमी कपडे मे सिलवटें पड गई थी। लडकी का सिर सैनिक के कधे पर निर्जीव सा लटका हुआ था। लडकी का चेहरा एकदम ज़र्द था और उसकी शरारती भूरी आखो मे से चमक गायब हो चुकी थी।

रग बिरगे विगो वाली महफिल मे बैठे लोगा ने नज़रे ऊपर उठाईं।

तीन मोटो ने हाथ मले।

मुशियो ने अपने लम्बे-लम्बे कानो से लम्बी-लम्बी कलमे निकाली।

"हु," पहले मोटे ने कहा। "सरकारी सलाहकार कहा है?"

वह सैनिक जो लडकी को उठाये हुए था, आगे आया और बोला–

"श्रीमान सरकारी सलाहकार जब इधर आ रहे थे तो रास्ते मे उनके पेट म ज़ोर का दर्द हो गया।"

सैनिक ने जब ऐसा कहा था, तो उसकी नीली आखें चमक रही थी।

इस उत्तर से सभी सन्तुष्ट हो गये।

मुकदमे की कारवाई शुरू हुई।

सैनिक ने बेचारी लडकी को न्यायाधीशा की मेज के सामने खुरदरी-सी बेंच पर विठा दिया। वह सिर लटकाये बैठी थी। पहले मोटे ने पूछ-ताछ शुरू की।

मगर अब उन्हे बहुत बडी मुश्किल का सामना करना पडा – मूमोक एक भी सवाल का जवाब नही देना चाहती थी।

11*

"तो ऐसा ही सही!" एक मोटा खीझ उठा। "तो ऐसा ही सही! जवाब नहीं देना चाहती, तो न दे। इसी को इससे हानि होगी...हम इसे उतनी ही कड़ी सज़ा देंगे!"

सूओक तो हिली-डुली भी नहीं।

तीनों सैनिक उसके आस-पास बुत बने खड़े थे।

"गवाहों को बुलाइये!" मोटे ने हुक्म दिया।

गवाह सिर्फ़ एक ही था। उसे लाया गया। यह वही प्रतिष्ठित प्राणिविज्ञ था, चिड़ियाघर के जानवरों की देखभाल करनेवाला। उसने सारी रात तने पर ही बिताई थी। उसे अभी-अभी नीचे उतारा गया था। वह उसी हालत में यहां आ गया—फूलदार गाउन, धारीदार पाजामा और रात की टोपी पहने हुए। उसकी टोपी का फुंदना आंत की भांति उसके पीछे-पीछे ज़मीन पर घसिटता चला आ रहा था।

सूओक को बेंच पर बैठी देखकर प्राणिविज्ञ डर से थरथर कांपने लगा। उपस्थित लोगों ने उसे सहारा दिया।

"जो घटना घटी है, हमें कह सुनाइये।"

प्राणिविज्ञ ने कहना शुरू किया। उसने बताया कि मैं वृक्ष पर चढ़ा और वहां शाखाओं के बीच मुझे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया दिखाई दी। पर चूंकि मैंने कभी जीती-जागती गुड़िया नहीं देखी थी और इस बात की कल्पना तक नहीं की थी कि गुड़िया रात के समय वृक्ष पर चढ़ सकती है, इसलिये मैं बेहद डर गया और बेहोश हो गया।

"उसने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को कैसे आज़ाद कराया?"

"मुझे मालूम नहीं। मैंने न तो कुछ सुना और न देखा ही। मेरी बेहोशी बहुत गहरी थी।"

"अरी ओ दुष्ट लड़की, तू हमें बतायेगी या नहीं कि तू ने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को कैसे आज़ाद किया?"

सूओक ने कोई उत्तर न दिया।

"इसे हिलाइये-डुलाइये।"

"ख़ूब अच्छी तरह से!" तीन मोटों ने आदेश दिया।

नीली आंखों वाले सैनिक ने लड़की के कंधे पकड़कर उसे झकझोरा। इतना ही नहीं, उसने उसके माथे पर ज़ोर की चपत भी लगाई।

सूओक अब भी मौन साधे रही।

मोटे तो गुस्से से फू-फां करने लगे। भर्त्सना करते हुए लोगों के रंग-बिरंगे विगों वाले सिर हिलने लगे।

"ऐसा लगता है कि हमें कुछ भी तफ़सीलें मालूम नहीं हो सकेंगी," पहले मोटे ने कहा।

यह शब्द सुनकर प्राणिविज्ञ ने माथा ठोकते हुए कहा—
'मैं जानता हू कि हमे क्या करना चाहिये!'
हर किसी के कान खडे हो गये।
"चिडियाघर म तोतो का भी एक पिजरा है। वहा वहुत ही दुलभ और बढिया नसल के तोते है। आप यह तो जानते ही है कि तोते व्यक्ति के शब्दो को याद रख सकते है, उन्हे दोहरा सकते है। वहुत से तोतो के कान वहुत तेज होते है और याददाश्त वहुत गजव की मैं यह समझता हू कि उस रात को इस लडकी और हथियारसाज प्रोस्पेरो के बीच चिडियाघर मे जो वातचीत हुई, तोतो को वह सब याद है इसलिये मैं यह सुझाव देता हू कि मेरे अद्भुत तोतो म से एक को यहा गवाह के रूप मे लाया जाये।"
उपस्थित लोगो के अनुमोदन की हल्की-सी आवाज सुनाई दी।
प्राणिविज्ञ चिडियाघर की ओर गया और जल्द ही लौट आया। उसकी तजनी पर वडा-सा और लम्बी लाल दाढीवाला बूढा सा तोता बैठा था।
आपको उस समय का तो स्मरण होगा जव सूओक रात्रि को चिडियाघर मे घूमती रही थी। याद है न? उसे एक तोते पर सन्देह हुआ था। यह भी याद है न आपको कि कैसे उस तोते ने सूओक की ओर देखा था और फिर मानो सोने का वहाना करते हुए वह कैसे अपनी लम्बी लाल दाढी मे मुस्कराया था।
अव यही लाल दाढीवाला तोता प्राणिविज्ञ की उगली पर उसी तरह आराम से वैठा था जैसे कि तव पिजरे के रुपहले छड पर।
इस समय वह खुले तौर पर मुस्करा रहा था, इस वात से खुश होता हुआ कि बेचारी सूओक का भडाफोड कर देगा।
प्राणिविज्ञ ने जमन भापा मे तोते से वातचीत शुरू की। तोते को लडकी दिखाई गई। तब उसने पख फडफडाये और वह चिल्ला उठा—
"सूओक! सूओक!"
उसकी आवाज उस पुराने फाटक की चरमराहट जैसी थी जो हवा के कारण अपने जग लगे कब्जे पर हिलता-डुलता है।
सभी लोग खमोश थे।
प्राणिविज्ञ खुशी से फूला नही समा रहा था।
तोते ने अपनी मुखबिरी जारी रखी। उसने सचमुच ही वह सब कह सुनाया जो उस रात सुना था। इसलिये अगर आप हथियारसाज प्रोस्पेरो के आज़ाद होने की कहानी जानना चाहते है तो वह सब ध्यान से सुनियेगा जो तोता कहेगा।
ओह! यह सचमुच ही वहुत वढिया नसल का तोता था! सुन्दर लाल दाढी की तो

बात ही एक तरफ रही जो किसी भी जनरल की प्रतिष्ठा बढ़ा सकती थी, उस तोते की असली ख़ूबी यह थी कि वह इन्सान की कही हुई बातों को दोहराने की अद्‌भुत क्षमता रखता था।

"तुम कौन हो?" उसने मर्दाना आवाज़ में कहा।

इसके फ़ौरन बाद लड़की की आवाज़ की नक़ल करते हुए उसने बारीक आवाज़ में उत्तर दिया—

"मैं सूग्रोक हूं।"

"सूग्रोक!"

"मुझे तिबुल ने भेजा है। मैं गुड़िया नहीं, जीती-जागती लड़की हूं। मैं तुम्हें आज़ाद कराने आई हूं। तुमने मुझे चिड़ियाघर में आते नहीं देखा?"

"नहीं। मैं शायद सो रहा था। आज वह पहली रात है जब मेरी आंख लगी है।"

"मैं तुम्हें चिड़ियाघर मे ढूढ़ती रही हूं। मैंने यहां एक भयानक जन्तु देखा जो इन्सान की तरह बातचीत करता था। मैं समझी कि वह तुम ही हो। वह जन्तु मर गया।"

"यह तूब था। तो क्या वह मर गया?"

"हां, मर गया। मैं डरकर चीख़ उठी। तब सन्तरी भाग आये। मैं वृक्ष पर जा चढ़ी। मैं बेहद ख़ुश हूं कि तुम जिन्दा हो! मैं तुम्हें आज़ाद कराने आई हूं।"

"मगर मेरे पिंजरे में तो बहुत बड़ा ताला लगा हुआ है।"

"मेरे पास ताले की चाबी है।"

तोते ने जब यह अन्तिम वाक्य कहा तो सभी उपस्थित लोग आग-बबूला हो उठे।

"ओह, दुष्ट लड़की!" मोटे चिल्ला उठे। "अब सारी बात समझ में आ गयी। उत्तराधिकारी टूट्टी के पास पिंजरे की जो चाबी थी उसने वह चुरा ली और हथियारसाज़ को आज़ाद कर दिया। हथियारसाज़ ने अपनी ज़ंजीर तोड़ डाली, चीते का पिंजरा तोड़कर उसे ज़ंजीर से बांध लिया ताकि अहाते में से बिना रोक-टोक जा सके।"

"ऐसा ही है!"

"ऐसा ही है!"

"ऐसा ही है!"

मगर सूग्रोक चुप रही।

तोते ने मानो समर्थन करते हुए सिर हिलाया और तीन बार पंख फड़फड़ाये।

मुकदमे की कार्रवाई ख़त्म हो गई। यह फ़ैसला सुनाया गया—

> "बनावटी गुड़िया ने उत्तराधिकारी टूट्टी को धोखा दिया। उसने सबसे बड़े विद्रोही और तीन मोटों के सबसे बड़े दुश्मन—हथियारसाज़ प्रोस्पेरो—को आज़ाद

किया। इसी के कारण बहुत बढिया चीता मारा गया। इसलिये इस धोखेबाज लडकी को मात की सजा दी जाती है। दरिन्दा से इसके टुकडे करवाये जायें। '

पाठकगण, तनिक कल्पना कर मृत्यु-दण्ड की घोषणा होने पर भी सूग्रोक न हिली, न डुली !

हाल म उपस्थित सभी लोग चिडियाघर की ग्रोर चल दिये। पक्षियो की चीची ग्रौर चहक तथा जानवरा की चीख चिघाड ने इन लोगा का स्वागत किया। सबसे ग्रधिक परेशान तो था प्राणिविज्ञ। ऐसा स्वाभाविक भी था—वह चिडियाघर की देखभाल जो करता था !

तीन मोटे, सलाहकार, कमचारी ग्रौर ग्रन्य दरबारी मच पर जा चढे। मच के चारा ग्रोर लोहे का जगला लगा हुग्रा था।

बडी प्यारी-प्यारी धूप खिली हुई थी ! ग्राह, ग्राकाश कैसा नीला नीला था ! तोतो के पख कैसे चमक रहे थे, बन्दर कैसे कलाबाजिया लगा रहे थे ग्रौर हरी हरी चलक देनेवाला हाथी कैसे नाच रहा था !

बेचारी सूग्रोक ! इन चीजो की ग्रोर तो उसने ग्राख तक उठाकर न देखा। वह तो सम्भवत सहमी-सहमी ग्राखो से उस गन्दे से पिजरे की ग्रोर देख रही थी जहा कुछ कुछ झुके हुए शेर इधर उधर दौड रहे थे। वे बर्रों से मिलते-जुलते थे, कम से कम उनका रग तो ऐसा ही था—पीला-पीला ग्रौर बादामी धारिया।

वे गुस्से से लोगो को देख रहे थे। जब तब उनमे से कोई ग्रपना खून जैसा लाल मुह खोलता जिसम से कच्चे मास की गध ग्राती थी।

बेचारी सूग्रोक !

ग्रलविदा सरकस, चौक, ग्रगस्त, पिजरे मे बन्द लोमडी, प्यारे, हृष्ट-पुष्ट ग्रौर साहसी तिबुल !

नीली ग्राखो वाला सैनिक लडकी को चिडियाघर के मध्य मे ले गया ग्रौर उसे तपते तथा चमकते हुए सीसे पर लिटा दिया।

म निवेदन करना चाहता हू," ग्रचानक एक सलाहकार ने कहा। ग्रापने उत्तराधिकारी टुट्टी के बारे मे भी कुछ सोचा ? ग्रगर उसे यह मालूम हो गया कि उसकी गुडिया के शेरा से टुकडे करवाये गये हैं तो वह रो रोकर जान दे देगा।'

शी ! ' साथ बैठे हुए व्यक्ति ने उसे चुप रहने का सकेत करते हुए कहा। शी ! उत्तराधिकारी टुट्टी को सुला दिया गया है वह तीन दिना तक या इससे भी ज्यादा वक्त तक गहरी नीद सोया रहेगा "

अब सभी लोगों की नज़रें उस दर्दनाक गुलाबी चीज़ पर टिकी हुई थीं जो पिंजरों के बीच पड़ी थी।

इसी समय जानवरों को सधानेवाला व्यक्ति अपना हंटर सटकारता और पिस्तौल चमकाता हुआ आया। बैंडवालों ने एक धुन बजानी शुरू की। इस तरह सूओक आख़िरी बार दर्शकों के सामने आई।

"हुश!" सधानेवाले ने कहा।

पिंजरे का लोहे का दरवाज़ा चरमरा उठा। शेर बिना शोर किये और भारी क़दम रखते हुए पिंजरे से बाहर निकले।

मोटो ने ठहाका लगाया। सलाहकार खिलखिलाकर हंसे और उन्होंने अपने विग हिलाये। हंटर की आवाज़ सुनाई दी। तीनों शेर सूओक की ओर लपके।

सूओक निश्चल पड़ी थी और उसकी भूरी गतिहीन आंखें आकाश को एकटक ताक रही थीं। सभी लोग उठकर खड़े हो गये। जनता की इस छोटी-सी मित्र के शेरों द्वारा टुकड़े होते देखकर सभी लोग ख़ुशी से चिल्लाने को तैयार थे...

और शेर... निकट आये। उन मे से एक ने अपना चौड़े माथेवाला सिर झुकाकर सूओक को सूंघा, दूसरे ने अपने बिल्ली जैसे पंजे से लड़की को छुआ। तीसरे ने तो उसकी



ग्रोर ध्यान भी नही दिया, पास से गुज़र गया ग्रौर मच के सामने खडा होकर मोटो पर गरजने लगा।

तब सभी को यह बात स्पष्ट हो गई कि यह जीती-जागती लडकी नही, गुडिया थी, फटे-से फ्रॉक मे पुरानी गुडिया, न किसी काम की, न काज की।

सभी लोगो के दिल बैठ गये। प्राणिविज्ञ ने तो परेशानी मे ग्रपनी ग्राधी ज़बान ही काट ली। जानवरो को सधानेवाले ने शेरो को पिजरे मे वापिस भेज दिया ग्रौर घृणा से बेजान गुडिया को ठोकर मारकर नीली ग्रौर सुनहरी डोरिया वाली ग्रपनी समारोही वर्दी उतारने चला गया।

सभी लोग पाच मिनट तक खामोश रहे।

यह खामोशी बहुत ही ग्रप्रत्याशित ढग से भग हुई। चिडियाघर के ऊपर नीले ग्राकाश मे तोप का एक गोला फटा।

मच पर खडे सभी दर्शक लकडी के फर्श पर झटपट लेट गये। सभी जानवर ग्रपनी पिछली टागो के बल खडे हो गये। फौरन बाद दूसरा गोला फटा। ग्राकाश मे सफेद धुए का गोल-गोल बादल छा गया।

"यह क्या माजरा है? यह क्या किस्सा है? यह क्या है?" सभी लोग चीख उठे।

"जनता धावा बोल रही है।"

"जनता के पास तोपे है।"

"सैनिक जनता के साथ मिल गये है।!"

"ग्रोह! ग्राह!! ग्रोह!!!"

पार्क मे सभी ग्रोर शोर, चीख-पुकार ग्रौर गोलियो की ठाय-ठाय सुनाई देने लगी। जाहिर था कि विद्रोही पार्क मे घुस ग्राये थे।

सभी लोग चिडियाघर के फाटको की ग्रोर भाग चले। मन्त्रियो ने मियानो से तलवारे निकाल ली। मोटे गला फाडकर चिल्ला रहे थे।

पार्क मे उन्हे यह दृश्य दिखाई दिया।

सभी ग्रोर से लोग बढे ग्रा रहे थे। बहुत बडी सख्या थी उनकी। वे नगे सिर थे, कुछ के माथो से रक्त बह रहा था, कुछ की जाकेटे तार-तार थी, फिर भी उनके चेहरो पर खुशी नाच रही थी . ये थे जनसाधारण जिनकी ग्राज विजय हुई थी। सैनिक उनके साथ मिल गये थे। उनके टोपो पर लाल रिबन लगे हुए थे। मजदूर भी सशस्त्र थे। बादामी रग की पोशाकें ग्रौर लकडी के जूते पहने हुए गरीबो की पूरी की पूरी सेना बढी ग्रा रही थी। उनके दबाव से वृक्ष झुके जा रहे थे, झाडिया टूट रही थी।

"हमारी जीत हुई है।" लोग चिल्ला रहे थे।

तीन मोटो ने समझ लिया कि ग्रब बचकर निकलना मुमकिन नही।

"नही! ऐसा नही हो सकता!" उनमें से एक चिल्लाया। "सैनिको, इन्हें गोलियों से भून डालो!"

मगर सैनिक तो गरीबों के ही साथी थे। तब सारी भीड़ के शोर-शराबे को शान्त करती हुई एक आवाज़ गूंज उठी। यह आवाज़ थी हथियारसाज़ प्रोस्पेरो की–

"अपने को हमारे हवाले कर दीजिये! जनता जीत गई है! धनियों और पेटुओं की सत्ता का अन्त हो गया! सारा नगर जनता के क़ब्ज़े में है। सभी मोटों को गिरफ़्तार कर लिया गया है।"

रंग-बिरंगे कपड़े पहने उत्तेजित जनता की मज़बूत दीवार ने तीन मोटों को अपने घेरे में ले लिया।

लोग लाल झंडे, लाठियां और तलवारें हिला रहे थे, घूंसे दिखा रहे थे। इसी समय एक गीत गूंज उठा।

तिबुल अपना हरा लबादा पहने प्रोस्पेरो की बगल में खड़ा था। उसके सिर पर चिथड़ा बंधा हुआ था जिसपर ख़ून के धब्बे नज़र आ रहे थे।

"यह तो महज़ सपना है!" हाथों से आंखें बन्द करते हुए एक मोटा चिल्लाया।

तिबुल और प्रोस्पेरो ने गाना शुरू किया। हज़ारों लोगों ने इस गीत में अपना स्वर मिलाया। यह गीत छा गया विराट पार्क के ऊपर, नहरों और पुलों पर। नगर के फाटकों से महल की ओर बढ़े आते लोगों ने यह गीत सुना, तो वे भी इसे गाने लगे। यह गीत समुद्री लहर की तरह बढ़ा चला जा रहा था सड़कों पर, लांघता जा रहा था फाटकों को, लहरा रहा था नगर में, सभी राहों और रास्तों पर जहां मज़दूर और ग़रीब बढ़ रहे थे महल की ओर। अब सारा नगर ही इसे गा रहा था। यह गीत था जनता का, उस जनता का जिसने अपने उत्पीड़कों पर विजय पाई थी।

इस गीत को सुनकर केवल तीन मोटे ही अपने मन्त्रियों समेत भेड़ों के रेवड़ की भांति सिमटते-सिकुड़ते और एक दूसरे के साथ सटे जा रहे थे, ऐसी बात नही थी। इसे सुनकर नगर के सभी बांके-छैले, मोटे दूकानदार, पेटू, व्यापारी, कुलीन महिलाएं और गंजी चांदवाले जनरल डर और घबराहट से थर-थर कांप रहे थे। ऐसे लगता था मानो वे गीत के बोल नहीं, तोप के गोले हों।

ये लोग अपने लिये छिपने की जगह ढूंढ़ते थे, कानों में उंगलियां ठूंसते थे और बढ़िया, कढ़े हुए सिरहानों में अपने सिर छिपाते थे ताकि गीत के शब्द उन्हें सुनाई न दें।

आख़िर हुआ यह कि धनियों की भारी भीड़ बन्दरगाह की ओर भाग चली। इन लोगों ने जहाज़ों में बैठकर उस देश से भाग जाना चाहा जहां वे अपना सभी कुछ खो बैठे थे– अपनी सत्ता, धन-दौलत और हरामख़ोरी की मज़े की ज़िन्दगी। मगर बन्दरगाह पर उन्हें

जहाज़ियो ने घेर लिया। धनियो को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होने माफी मागी और कहा –

"हमे मारिये-पीटिये नही! हम अब आप लोगो से अपने लिये काम नही करवायेगे "

मगर जनता ने उनपर एतबार नही किया। कारण कि धनी लोग गरीबो और मज़दूरो को कई बार धोखा दे चुके थे।

सूरज शहर के ऊपर काफी ऊचा चमक रहा था। आकाश नीला-नीला था। ऐसे लगता था मानो लोग बहुत बडा और अभूतपूर्व पर्व मना रहे हो।

अब सभी कुछ जनता के हाथो मे था – शस्त्र-भडार, बारेक, महल, अन्न-भडार और दूकानें। सभी जगह सैनिको का पहरा था जो अपने टोपो पर लाल रिबन लगाये थे।

चौको मे लाल झण्डे लहरा रहे थे जिनपर ये शब्द अकित थे –

जो कुछ गरीबो के हाथो का बना हुआ है,
उसपर गरीबो का ही अधिकार है!

जय जनता!

कामचोर और पेटू मुर्दाबाद!

मगर तीन मोटो का क्या हुआ ?

उन्हे महल के बडे हॉल मे लोगो को दिखाने के लिये लाया गया। हरे कफो वाली सलेटी रग की जाकेटे पहने मज़दूर बन्दूकें लिये हुए पहरा दे रहे थे। हॉल सूरज की किरणा से जगमगा रहा था। ओह, कितनी बडी भीड थी यहा लोगा की! मगर बहुत ही भिन्न थे ये लोग उन से जिनके सामने नन्ही सूओक ने उस दिन गाना गाया था जब उत्तराधिकारी टूट्टी से उसका परिचय हुआ था।

यहा वही दर्शक जमा थे, जो चौको और बाज़ारा म सूओक का कार्यक्रम देखकर तालिया बजाते थे। अब उनके चेहरे खिले हुए थे, उनपर खुशी झलक रही थी। लोग एक दूसरे के साथ सटे हुए थे, रेल-पेल और हसी-मज़ाक कर रहे थे। कुछेक की आखो म तो खुशी के आसू भी थे।

महल के समारोही हॉला मे ऐसे मेहमान कभी नही आये थे। इनके ऊपर सूरज भी कभी ऐसे तेज़ी से नही चमका था।

"शी!"

"चुप हो जाइये!"



"चुप हो जाइये!"

ज़ीने के ऊपर क़ैदियों का जुलूस दिखाई दिया। तीन मोटों की नज़रें झुकी हुई थीं। सबसे आगे-आगे था प्रोस्पेरो और उसके साथ-साथ था तिबुल।

ख़ुशी भरे शोर से हॉल के स्तम्भ हिल रहे थे और तीन मोटों के कान फटे जा रहे थे। उन्हें ज़ीने से नीचे लाया गया ताकि लोग उन्हें निकट से देखकर इस बात की तसल्ली कर लें कि ये भयानक मोटे बन्दी बनाये जा चुके हैं।

"हां तो..." स्तम्भ के पास खड़े होकर प्रोस्पेरो ने कहा। उसका क़द विराट स्तम्भ की आधी ऊंचाई के बराबर था। उसका लाल बालों वाला सिर सूरज की रोशनी में अंगारों की भांति दहक रहा था। "हां तो..." उसने कहा, "तो ये रहे तीन मोटे। ये जनता को लूटते-खसोटते थे। ये हमें ख़ून-पसीना एक करने के लिये मजबूर करते थे और हमसे सभी कुछ छीन लेते थे। आप देख रहे हैं न कि कैसे उनपर चर्बी चढ़ी हुई है! हमने इनपर विजय प्राप्त कर ली है। अब हम ख़ुद अपने लिये काम करेंगे। हम सब समान होंगे। हमारे बीच न धनी होंगे, न कामचोर और न ही पेटू। अब हमारी ज़िन्दगी ख़ूब मजे मे गुजरेगी, हम सभी के पास पेट भरकर खाने-पीने को होगा और हम सभी धनी होंगे। अगर हमें बुरे दिन भी देखने पड़ेंगे तो भी इस बात का सन्तोष होगा कि ऐसा कोई नहीं है जो मोटा होता जा रहा है जबकि हम भूखों मर रहे हैं..."

"हुर्रा! हुर्रा!" सभी लोग चिल्ला उठे।

तीन मोटो ने नाकें सुड़की।

"आज हमारी जीत का दिन है। देखिये तो, सूरज कैसे चमक रहा है! सुनिये तो, परिन्दे कैसे चहचहा रहे हैं! फूल कैसे महक रहे हैं! इस दिन, इस घड़ी को सदा याद रखियेगा!"

प्रोस्पेरो ने जब "घडी" कहा तो सभी लोगो का ध्यान उस तरफ गया जहा घडी लगी हुई थी।

दो स्तम्भो के बीचवाली जगह पर घडी लटकी हुई थी। यह बलूत की लकडी का बहुत बडा बक्सा था, सुन्दर मीनाकारी और नक्काशी वाला। मध्य मे आकडो वाला काला सा चक्र था।

"क्या बजा है इस वक्त?" हॉल मे उपस्थित हर व्यक्ति ने सोचा।

और अचानक (हमारी इस पुस्तक मे यह अन्तिम "अचानक" है) अचानक बलूत के बक्से का दरवाजा पूरी तरह खुल गया। वहा घडी के कल-पुर्जे नजर नही आये, उन्हे निकाल दिया गया था। ताबे के स्प्रिगो और चक्रो की जगह इस छोटी-सी अलमारी मे गुलाबी-गुलाबी और चमकती-दमकती सूओक बैठी थी।

"सूओक!" सभी लोग आश्चर्यचकित रह गये।

"सूओक!" बच्चे चिल्लाये।

"सूओक! सूओक! सूओक!"

तालियो की गडगडाहट गूज उठी।

नीली आखो वाले सैनिक ने बालिका को बक्से से बाहर निकाला। यह वही नीली आखा वाला सैनिक था जो नृत्य-शिक्षक एक दो-तीन के गत्ते के बक्से मे से उत्तराधिकारी टुट्टी की गुडिया उठा ले गया था। वही उसे महल मे लाया था, उसी ने धौल जमाकर सरकारी सलाहकार और उस सैनिक को औधे मुह जमीन पर गिरा दिया था जो जीती-जागती बेचारी सूओक को पेटी से पकडकर उठाये लिये जा रहा था। उसी ने सूओक को घडी के बक्से मे बन्द कर उसकी जगह बेजान और खस्ताहाल गुडिया रख दी थी। याद है न आपको कि मुकदमे की कार्रवाई के समय उसने कैसे इस गुडिया के कधे झकझोरे थे और फिर उसे दहाडते हुए शेरो के सामने फेक दिया था?

लोग सूओक को बारी-बारी से अपने हाथो मे लेने लगे। ये वही लोग थे जो उसे ससार की सर्वश्रेष्ठ नर्तकी मानते थे, जो अपनी जेब का आखिरी सिक्का तक उसकी दरी पर फेक देते थे। वे अब उसे गोद मे उठाते थे, "सूओक!"—धीरे से उसका नाम लेते थे, उसे चूमते और गले से लगाते थे। इन लोगो की खुरदरी, फटी और कालिख तथा तारकोल पुती जाकेटो के नीचे धडक रहे थे उनके यातनाए सहनेवाले दिल, उदारता और कोमलता से ओत-प्रोत हृदय।

सूओक हसती, उनके अस्तव्यस्त बालो को थपथपाती और अपने नन्हे-नन्हे हाथो से उनके चेहरा का ताजा लहू पोछती, बच्चा को गुदगुदाती, तरह-तरह के मुह बनाती, खुशी के आसू बहाती और अस्पष्ट-से शब्द बुदबुदाती।

"इसे इधर बढ़ा दीजिये," हथियारसाज़ ने कांपती हुई आवाज़ में कहा। बहुत-से लोगों को उसकी आखों में आसू चमकते प्रतीत हुए। "इसी ने मेरी जान बचायी थी!"

"इधर बढ़ाइये इसे! इधर!" एक बड़े पत्ते की भांति अपना हरा लबादा हिलाते हुए तिबुल चिल्लाया। "यह मेरी नन्ही-सी सहेली है! इधर आओ, सूओक!"

दूरी पर भीड़ को चीरते और मुस्कराते हुए जल्दी-जल्दी बढ़े आ रहे थे नाटे क़द के डाक्टर गास्पर...

तीन मोटों को उसी पिंजरे में बन्द कर दिया गया जिसमें हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को बन्द किया गया था।



उपसंहार

एक वर्ष बाद नगर में हंसी-खुशी का राज था, जश्न मनाया जा रहा था। लोग तीन मोटों के जुए से मुक्ति पाने की पहली वर्षगांठ मना रहे थे।

सितारे के चौक में बालकों के लिये तमाशे की व्यवस्था की गयी।

सूग्रोक का नाम इश्तिहारों की शोभा बढ़ा रहा था—

सूग्रोक !

सूग्रोक!

सूग्रोक !

हजारों बालक अपनी प्यारी अभिनेत्री के मंच पर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पर्व के इस दिन वह मंच पर आई, मगर अकेली ही नहीं। उसके साथ एक छोटा-सा लड़का भी था, बहुत कुछ उसी से मिलता-जुलता। फर्क सिर्फ इतना, कि उसके बाल सुनहरे थे।

यह उसका भाई और कुछ समय पहले तक उत्तराधिकारी टूट्टी था।

नगर ठहाकों और गीतों से गूंज रहा था, झंडे फड़फड़ा रहे थे, मालिनें अपनी झोलियों में से पुष्प-वर्षा कर रही थीं, रंग-बिरंगे परों के फुंदनों से सजाये गये घोड़े उछल-कूद रहे थे, हिंडोले घूम रहे थे और सितारे के चौक में नन्हे-मुन्ने दर्शक दम साधे तमाशा देख रहे थे।

तमाशा खत्म होने पर सूग्रोक और टूट्टी को फूलों से लाद दिया गया। बालकों ने उन्हें घेर लिया।

सूग्रोक ने अपने नये फ्रॉक की जेब में से एक तख्ती निकाली और उसपर लिखे कुछ शब्द बालकों को पढ़कर सुनाये।

हमारे पाठकों को इस तख्ती का ध्यान होगा। यह तख्ती एक भयानक रात को चिड़ियाघर के एक पिंजरे में बन्द दम तोड़ते हुए उस रहस्यपूर्ण व्यक्ति ने सूग्रोक को दी थी जो भेड़िये जैसा लगता था। उसपर यह लिखा हुआ था—

"तुम दो थे, बहन और भाई—सूग्रोक और टूट्टी।

"जब तुम दोनों चार-चार वर्ष के हुए, तो तीन मोटों के सैनिक तुम्हें मां-बाप के घर से उठा लाये।

"मैं हूं तूब, एक वैज्ञानिक। मुझे महल में बुलाया गया। नन्ही सूग्रोक और टूट्टी को मेरे सामने लाया गया।

"तीन मोटों ने मुझसे कहा—'इस बालिका को देख रहे हो, न? हूब-हू ऐसी ही एक गुड़िया बना दो।' मैं नहीं जानता था कि किसलिये उन्हें ऐसी गुड़िया की ज़रूरत थी।

"मैंने ऐसी ही गुड़िया बना दी। मैं बहुत बड़ा वैज्ञानिक था। मुझे ऐसी गुड़िया ब
का आदेश दिया गया था कि वह जीवित लड़की की भांति बढ़ती जाये। सूम्रोक की :
पाच वर्ष की हो तो गुड़िया की भी। सूम्रोक बड़ी हो, प्यारी और उदास-सी लड़की बने त
गुड़िया भी। मैंने ऐसी ही गुड़िया बना दी। तब तुम दोनों को अलग कर दिया गया। गुड़ि
के साथ टूट्टी महल मे ही रह गया और सूम्रोक को बहुत बढ़िया नसल के लम्बी ल
दाढ़ीवाले तोते के बदले एक चलते-फिरते सरकस को सौंप दिया गया। तीन मोटों ने :
आदेश दिया—'लड़के का दिल निकालकर उसकी जगह लोहे का दिल लगा दो।' मैंने ऐ
करने से इनकार कर दिया। मैंने कहा कि इन्सान को उसके इन्सानी दिल से वंचित कर
ठीक नहीं। किसी भी तरह का, लोहे, बर्फ़ या सोने का दिल, इन्सान के साधारण अं
असली इन्सानी दिल की जगह नहीं ले सकता। मुझे पिंजरे में बन्द कर दिया गया अं
लड़के से झूठमूठ यह कहा जाने लगा कि उसका दिल लोहे का है। वे चाहते थे कि लड़का इ
बात पर विश्वास करे और ज़ालिम तथा संगदिल बन जाये। मैं आठ वर्षों से जानवरों
बीच रह रहा हूं। मेरे शरीर पर लम्बे-लम्बे बाल उग आये हैं और दांत लम्बे-लम्बे औ
पीले-पीले हो गये हैं। मगर मैं तुम लोगों को नहीं भूला। मैं तुमसे माफ़ी चाहता हूं। ह
सभी तीन मोटों के कारण बदनसीब बने, धनियों और पेटुओं के उत्पीड़न के शिकार हुए
मुझे क्षमा कर देना टूट्टी, जिसका गरीबों की भाषा में अर्थ है—'जुदाई'। मुझे क्षम
कर देना सूम्रोक, जिसका अर्थ है—'जीवन भर के लिए'..."

